हैमलेट

सन् १९५९–'६८ मे अनूदित

राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली

विलियम शेक्सपियर-रचित

का

पद्य-गद्यानुवाद

अनुवादक

बच्चन

अमिताभ बच्चन

अपने बेटे

अमिताभ को

जिसने मेरे हिन्दी-ओथेलो के प्रथम प्रदर्शन मे

कैसियो की भूमिका अदा की थी;

और जो, मुझे आशा है,

किसी दिन मेरे हिन्दी-हैमलेट के प्रदर्शन में

हैमलेट की भूमिका अदा करेगा।

प्रवेशिका

'हैमलेट' के पद्य-गद्यानुवाद को पुस्तक-रूप में प्रस्तुत करते हुए मैं वडी प्रसन्नता, वडे सतोप, और सिर से एक वड़े भार के उतर जाने की राहत का अनुभव कर रहा हूँ। इस राहत को थोड़ा स्पष्ट करना होगा।

मुझे अपने पाठको को शायद ही यह वतलाने की आवश्यकता हो कि शेक्सपियर के नाटको के अनुवाद की शृखला में यह तीसरा नाटक है जो मैं उनके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। पहला 'मैकवेथ' था, जो १९५७ मे प्रकाशित हुआ था, और दूसरा 'ओथेलो', जो १९५९ मे। 'हैमलेट' प्राय एक दशक वाद प्रकाशित हो रहा है, और लगभग इतना ही समय इसके अनुवाद मे लगा भी है। 'मैकवेथ' का अनुवाद एक वर्ष में, और 'ओथेलो' का प्राय: दो वर्ष मे मैंने पूरा कर दिया था। 'हैमलेट' को अनूदित करने मे मुझे दस वरस लग गए। 'हैमलेट' ने मुझे वडा परेशान किया। १९६० मे जव 'मैकवेथ' का दूसरा सस्करणप्र काशित हुआ था, तभी मैने उसकी 'प्रवेशिका' मे अपने पाठको को यह सूचना दे दी थी कि "मैंने 'हैमलेट' का अनुवाद हिंदी व्लैक वर्स मे 'मैकवेथ' और 'ओथेलो' की पद्धति पर आरम्भ कर दिया है, जो यथासमय आपके हाथो मे पहुँचेगा।" 'यथासमय' का अर्थ होगा एक दशक—इसकी कल्पना न मैने की थी और न मेरे पाठको ने। इस वीच मेरे वहुत-से पाठक मुझसे पूछते रहे कि 'हैमलेट' का क्या हुआ? और मै उन्हे कोई सतोपजनक उत्तर न दे पाता था। वहुतो ने तो यह आशा भी छोड दी थी कि मैं इसे पूरा भी कर पाऊँगा—शायद मेरा उत्साह शेक्सपियर के नाटको के प्रति समाप्त हो गया है, शायद मैं और कामो में लग गया हूँ, क्योकि यह तो सच है कि दस वरस तक लगातार 'हैमलेट' पर काम

नही हुआ—मैं और कई तरह की कलम घिसाई करता रहा। पर किसी काम को अधूरा छोडना मेरे स्वभाव म नही है वह किसी टूटे काँटे की तरह मरे दिमाग म करकता रहता है। और अधूरा हैमलेट ता बहुत बुरी तरह मरे दिमाग मे करक रहा था—वह है भी अधूरा—शेक्सपियर ने भी उसे पूरा प्रकट नही किया है—शेक्सपियर ने जितने भी पात्रो का निर्माण किया है शायद एक हैमलेट ही उनम ऐसा है जिसे पूरी तरह जानने के सकेत उन्हान नही दिए अथवा वे दे नही पाए। निश्चय ही हैमलेट का व्यक्तित्व शेक्सपियर के लिए भी एक बडी भारी चुनौती सिद्ध हुआ होगा। हैमलेट कहता है

घायल मेरा नाम पडा है।
मेरे पीछे कितनी बातें अनजानी ही
रह जाएँगी। (पृ० १८७)

वह रगमच पर जब पहली बार आता है तब भी हम उसे घायल ही पाते हैं—मन से—और मन का घाव तन के घाव से कही अधिक पीडादायक होता है —जसे जैसे नाटक आगे बढता है वह अधिकाधिक घायल ही हाता जाता है और अत म तन से भी घायल होकर वह अपनी जीवन लीला समाप्त करता है। इस अधूरे का भी अधूरा हैमलट—घायल क भी अप्रकटे अग सा—कितने भीषण रूप म मेरे सामने आता और मुझे सतप्त करता रहा है इस बताना मेरे लिए सभव नही है। शेक्सपियर मरे प्रिय कवि हैं हैमलेट उनकी सबस प्रिय रचना, और उसम भी हैमलेट मेरा सबस प्रिय पात्र है। मैं उस अपने और निकट लाने के लिए ही चाहता था कि वह मरी भाषा मे मुझस अपनी वेदना कहे

'पूण कर दे वह कहानी
जो शुरू की थी सुनानी' (निशा निमत्रण)

मैंने उससे न जाने कितनी बार कहा होगा। पर मुसीबत तो यह था कि मुझे ही हैमलेट बनकर यह कहानी कहनी थी और मुझे ही सुननी थी। और इस स्थिति को बना पाना और उसम पर्याप्त समय तक रहे आना मरे जसे व्यक्ति की परिस्थितिया म असभव जान पडता था।

मै यह स्वीकार करूँगा कि 'हैमलेट' से हार मान लेने की स्थिति के बहुत निकट मै पहुँच चुका था। १९५९ मे जब मैंने 'हैमलेट' को अनूदित करना आरभ किया तो मुझे 'वरटिगो' की बीमारी हो गई—बैठे से उठता, नीचे झुकता या सिर ऊपर उठाता तो एकदम चक्कर आ जाता, आँखो के आगे अँधेरा छा जाता। तेजी जी को सदेह हुआ, शायद यह हैमलेट से अपने को एकात्म करने का परिणाम है। काम छोड दिया गया, दवा-दरमत शुरू हुई। कुछ दिनो बाद ठीक हो गया। कुछ और तरह का लिखना-पढना होता रहा। तीन वर्ष बाद उस अधूरे काम ने फिर मुझे बेचैनी से याद किया। अभी कुछ ही दिन मैंने उस पर काम किया होगा—कभी-कभी तो दस-बारह घटे लगातार कुर्सी पर बैठ-कर—कि मुझे हर्निया की तकलीफ हो गई, जिसका ऑपरेशन कराना पडा; काम तो छूट ही गया, अपना पुराना स्वास्थ्य प्राप्त करने मे भी लगभग दो वर्ष लग गए। कुछ और कामो से फुरसत मिली तो फिर 'हैमलेट' की याद ने मुझे सताया। इस बार इसपर थोडा ही काम हुआ था कि मुझे प्लूरिसी हो गई और कई महीने इजेक्शन लेता मै चारपाई पर पडा रहा। अब क्या था, मेरे घर में यह अध-विश्वास जग गया कि जब-जब मैं 'हैमलेट' का काम उठाता हूँ तब-तब मैं बीमार पड जाता हूँ। तेजी जी ने हैमलेट की फाइल उठाकर ताले मे बद कर दी—'इस काम मे मै तुम्हे अब हाथ नही लगाने दूँगी'। पर मै भी कम जिद्दी नही हूँ। पिछली सितम्बर मे पेट मे 'अलसर' का रोग लेकर मै लगभग एक मास अस्पताल मे पडा रहा। कुछ अच्छा होकर लौटा तो मैंने तेजी जी से कहा, देखो, जब-जब मैं 'हैमलेट' उठाता हूँ, मुझे कोई न कोई गभीर बीमारी लग जाती है, अब की बार मैं उस प्रक्रिया को उलटने जा रहा हूँ। उन्होने पूछा, 'मतलब ?' मैंने कहा, एक गभीर बीमारी से उबरकर मैं 'हैमलेट' के काम मे हाथ लगाने जा रहा हूँ। मैंने उन्हे फुसला-पँदलाकर फाइल उनसे ले ली—वे बडी भोली है—और कई महीनो के अनवरत श्रम के बाद अब यह काम पूरा हुआ है। सिर से भार उतरने की राहत का मेरा अनुभव अकारण नही है। पर इस भार को मैंने किसी तरह सिर से उतार फेका है, ऐसा न समझा जाना चाहिए। मैंने इस भार को लेकर चलने का पूरा आनद उठाया है—भार उठाने का एक सुख तो है ही,

हैमलेट, जब मरना था तब मर गया। आज के हैमलेट की त्रासदी मरन की नहीं जीने की त्रासदी है और इस कारण शायद अधिक यन्त्रणापूर्ण। पर समस्या चाहे कल के हैमलेट की हो चाहे आज के हैमलेट की एक ही है समष्टि के समक्ष व्यष्टि के आदर्शों सपनों मान मूल्यों की असमर्थता पराजय उपेक्षा, जिसका समाधान न कल था न आज है न कल होगा। फिर भी जो कृति जीवन और जगत के इस चिरंतन कटु सत्य की अनुभूति हमारी नस नाड़ियों में करती है वह कम महत्त्व की है ? हैमलेट को देखने के लिए यहाँ मैंने एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण का संकेत कर दिया है यद्यपि उसके इसी रूप को मैंने अपने निकट पाया। आप उसे किसी और दृष्टिकोण से भी देख सकते हैं। दृष्टिकोणों की कमी नहीं, आँखवाला चाहिए।

'घायल की गति घायल जाने'—अनुवाद की कठिनाइयाँ अनुवादक ही समझ सकता है। और अनुवादों में भी सबसे कठिन अनुवाद है नाटक का। यहाँ सोचने-समझने को रुका नहीं जा सकता टीका टिप्पणी देखने का मौका नहीं कोश खोलने को समय नहीं। मंच से जो उच्चरित होता है उसे तुरंत सुनते ही श्रोता को, दर्शक को ग्राह्य होना चाहिए साथ ही प्रभावकारी और उद्बोधक भी। नाटक पढ़ने के लिए नहीं लिखा जाता मंच पर अभिनीत होने के लिए लिखा जाता है, कम से कम शेक्सपियर के नाटक इसीलिए लिखे गए थे गो वह अभिनय की कल्पना से पढ़ा भी जा सकता है। अनुवादक भी नाटक की भाषा के इस पक्ष की अवहेलना नहीं कर सकता। मैकबेथ और ओथेलो के समान ही मैं 'हैमलेट' को किसी दिन रंगमंच पर देखना चाहूँगा। दर्शकों की प्रतिक्रिया को ही मैं अनुवाद की सफलता अथवा असफलता की कसौटी मानूँगा बशर्ते कि अभिनेता भी अपनी भूमिका पूरी तरह अदा करें क्योंकि नाटक की लिपि ध्वनि गति और मुद्रा से ही सप्राण बनती है। नाटक को अभिनय की कल्पना से पढ़ना कम सुखद अनुभव नहीं और मुझे विश्वास है बहुत बड़ी संख्या में लोग इस अनुवाद को इसी प्रकार पढ़ेंगे।

'हैमलेट' के अनुवाद के मैं कई प्रकार के पाठकों की कल्पना करता हूँ। कुछ ऐसे लोग होंगे जिन्होंने हैमलेट का अंग्रेजी में अध्ययन किया होगा—शायद समझा भी होगा। वे संभवतः मूल से मेरे अनुवाद का मिलान भी करना चाहेंगे हालाँकि हिंदी संसार में ऐसा श्रम-साध्य काम करनेवाले विरले ही हैं। उनसे मैं

यही कहना चाहूँगा कि वे शब्दश —मक्षिकास्थाने मक्षिका—अनुवाद की प्रत्याशा न करे। शब्दश अनुवाद अच्छा नही होता, पर अपनी समझ मे, सूक्ष्म से सूक्ष्म भावना-विचारो के प्रति मै सजग-सचेत रहा हूँ। अपनी भाषा की ध्वनि-धारा, अपने देश-प्रदेश के वातावरण तथा मनोजगत के अनुकूल और अनुरूप वने रहने, और अपने पाठको-श्रोताओ-दर्शको को त्वरित-ग्राह्य होने के लिए अनुवादक को मूल से स्वतन्त्रता लेने का अधिकार है, पर उसका दुरुपयोग करने का नही। अनुवाद करते समय मैंने, अपने अधिकार और अपनी सीमा, दोनो का ध्यान रक्खा है। मैं तो यहाँ तक कहना चाहूँगा कि किसी अनुवादक की सूझ, रुचि, विवेक-बुद्धि को परखने का स्थान वही है जहाँ उसने मूल से स्वतत्रता ली है। जहाँ कही मैने कुछ वदला, छोडा, जोडा है वहाँ उनके लिए रुककर सोचने का मौका है कि मैंने ऐसा क्यो किया है। मुझे विश्वास है कि खुले मन से विचार करने पर, जो मैने किया है, उसका औचित्य वे देख सकेगे।

सिर्फ एक छोटा-सा उदाहरण यहाँ दूंगा। अतिम दृश्य में हैमलेट की माँ अपने पुत्र को मोटा कहती है (He's fat), हैमलेट के 'मोटे' होने की कल्पना मैं नही कर सकता। वहुत वार अग्रेज़ी रगमच पर भी मैंने दुवला-पतला हैमलेट ही देखा है। कहते है, शेक्सपियर के समय मे जो अभिनेता हैमलेट की भूमिका अदा किया करता था वह मोटा था, इसीलिए शेक्सपियर ने उसकी माँ के मुख से उसे मोटा कहला दिया। शेक्सपियर ने रंगमच की सीमाओ का ध्यान रखकर वहुत-से ऐसे काम किए है। मैंने उसको 'दुर्वल' कर दिया है। हैमलेट ने जो सहा-झेला है उसके वाद भी वह दुर्वल न हो, मोटा-टाँठा वना रहे तो हैमलेट का मेरा चित्र विकृत होता है। यहाँ मेरे स्वतत्रता लेने को आप क्या कहेगे? खैर, कुछ भी कहे, इतना विश्वास करे कि जहाँ भी मैंने स्वतंत्रता ली है वह सकारण है।

दूसरे प्रकार के पाठक वे होगे जिन्होंने 'हैमलेट' पढा तो है पर वे मूल से अनुवाद की तुलना करने नही वैठेगे, हिन्दी मे भी पढना चाहेंगे, शायद कौतूहल-वश। मैं उन्हे अपनी ईमानदारी का विश्वास दिलाना चाहूँगा—'हैमलेट' को मैंने ठीक उसी तरह—अनुवाद की सीमाओ मे निश्चय—प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, जैसा कि वह मूल मे है। और मैं उनके कानो मे कहना चाहूँगा, अग्रेज़ी आप भले ही थोडी-वहुत जानते हो, अग्रेज़ी मे 'हैमलेट' को समझना

हैमलेट

नाटक के पात्र

क्लाडियस	डेनमार्क का राजा
हैमलेट	भूतपूर्व राजा का बेटा और वर्तमान राजा का भतीजा
फोर्टिन ब्रास	नारवे का राजकुमार
होरेशियो	हैमलेट का मित्र
पोलोनियस	राजा का मंत्री
लायरटीज़	पोलोनियस का पुत्र
वोल्टिमाड	राजदरबारी
कारनीलियस	
रोज़ेन्क्राट्ज़	
गिल्डेंसटर्न	
ओसरिक	
एक भद्र पुरुष	
एक पादरी	
मारसेलस	अफसर
बरनार्डो	
फ्रैंसिस्को	एक सैनिक
रेनाल्डो	पोलोनियस का नौकर
एक कप्तान	
अंग्रेज राजदूत	
अभिनेता	
दो मजदूर	कब्र खोदनेवाले
गरट्रूड	डेनमार्क की रानी और हैमलेट की माँ
ओफीलिया	पोलोनियस की पुत्री

सरदार, उनकी पत्नियाँ अफसर, सैनिक, नाविक, दूत, नौकर-चाकर, हैमलेट के पिता की प्रेतात्मा

स्थान एलसिनोर

हैमलेट

डेनमार्क का राजकुमार

पहला अंक

पहला दृश्य

एलसिनोर–गढ़ के सामने का चबूतरा

(फ्रैंसिस्को पहरे पर है। बरनार्डो उसकी तरफ बढता है।)

बरनार्डो : कौन ?

फ्रैंसिस्को . रुको, मुझे पहले बतलाओ कि तुम कौन हो।

बरनार्डो : महाराज की जय हो !

फ्रैंसिस्को . बरनार्डो हो ?

बरनार्डो . मैं ही।

फ्रैंसिस्को · बिल्कुल ठीक वक्त पर आए।

बरनार्डो : अभी बजा है
बारह, फ्रैंसिस्को, तुम अब जाकर सो जाओ।

फ्रैंसिस्को · धन्यवाद है, जो तुमने आकर छुट्टी दी।
बडी ठड पडती है, मेरा जी खराब है।

बरनार्डो . पहरे पर तो अमन रहा सब ?

फ्रैंसिस्को : पात न खडका।

बरनार्डो · तो तुम जाओ, नमस्कार है; अगर मार्ग मे
होरेशियो, मार्सेलस मिले तो, मेरे पहरे
के साथी है, उनसे कहना, जल्दी पहुँचें।

फ्रैंसिस्को . मुझको लगता, वे आते है। रुको, कौन हो ?
(होरेशियो और मार्सेलस आते हैं।)

होरेशियो : मातृभूमि के पुत्र,

मार्सेलस · प्रजा हम महाराज की।

फ्रांसिस्को — नमस्कार है तुम्हें ।

मारसेलस — विदा, विश्वासी सैनिक ।
किसने ली है जगह तुम्हारी ?

फ्रांसिस्को — बरनार्डो ने ।
नमस्कार करता हूँ तुमको । (बाहर जाता है ।)

मारसेलस — हो ! बरनार्डो !

बरनार्डो — बोल रहा हूँ क्या होरेशियो आ पहुँचा है ?

होरेशियो — उसके पाव जरूर यहाँ

बरनार्डो — स्वागत, होरेशियो ।
और भले मारसेलस तुम्हारा भी स्वागत है ।

होरेशियो — आज रात को क्या वह चीज दिखाई दी फिर ?

बरनार्डो — नहीं अभी तक ।

मारसेलस — होरेशियो कहता है यह कल्पना हमारी,
इसे नहीं विश्वास कि ऐसा दृश्य भयंकर
हम दुबारा देख चुके हैं । इसीलिए तो
मैंने इससे विनती की है, आज रात को
हम दोनों के साथ बराबर पहरा दे यह
जिससे यदि वह दृश्य दिखाई दे फिर हमको
यह अपनी आँखों से देखे उससे बोले ।

होरेशियो — वहम वहम कुछ नहीं दिखाई पड़नेवाला ।

बरनार्डो — आओ बैठो जरा हमारे इस किस्से पर
जो तुमने कानों में उँगली दे रक्खी है
हम तुमसे फिर एक बार कहना चाहेंगे
जो हम दोनों ने दो रातों को देखा है ।

होरेशियो — बैठ गए लो बरनार्डो को बतलाने दो

बरनार्डो — सुनो बात कल रात हुई जो
जब वह तारा जो ध्रुव तारे से पश्चिम को,
आसमान में इसी जगह पर चमक रहा था
एक बजा था, और मारसेलस औ मैं दोनों

(भूत आता है।)

मार्सेलस : चुप, रुक जाओ, देखो, वह फिर आ पहुँचा है।

बरनार्डो ठीक दिवगत महाराज-सा दीख रहा है।

मार्सेलस . पडित हो तुम, होरेशियो, इससे कुछ पूछो !

बरनार्डो : होरेशियो, देखो, यह कितना महाराज-सा !

होरेशियो : बिल्कुल वैसा, डर-अचरज से काँप रहा हूँ।

बरनार्डो . लगता है बोलेगा।

मार्सेलस होरेशियो, कुछ पूछो।

होरेशियो : क्या है तू जो घनी रात पर टूट पडा है
धरा-गुप्त डेनमार्क महीपति के चोले मे—
दिव्य, दीर्घ—जिसमे वे धरती पर चलते थे ?
तुझे स्वर्ग की शपथ दिलाता हूँ, उत्तर दे।

मार्सेलस . बिगड उठा है।

बरनार्डो लबे डग भरते जाता है।

होरेशियो ठहर ! बोल ! मुँह खोल ! और मुझको उत्तर दे !

(भूत चला जाता है।)

मार्सेलस . गया, वह नही उत्तर देगा।

बरनार्डो . तुम पीले पड गए, काँपते हो, कैसे हो ?
होरेशियो, यह नही सिर्फ कल्पना हमारी !
क्या कहते हो ?

होरेशियो : ईश्वर की सौगध, अगर मेरी आँखो ने
साफ न इसको देखा होता, मैं इसकी
सच्चाई पर विश्वास न करता।

मार्सेलस . था न ठीक वह
महाराज-सा ?

होरेशियो : जैसे दर्पण मे छाया हो।
इसी तरह का कवच उन्होने धारण करके
धूर्त नारवे के राजा से युद्ध किया था,
इसी तरह से उनके तेवर चढे हुए थे,

जब आशाली बात चीत के बीच उन्होंने
अपना घन सा भारी फरसा बर्फ़ीली
धरती के ऊपर चला दिया था। अचरज ही है !

मारसेलस
इसी तरह से पहले भी दो बार जबकि हम
पहरे पर थे हमने आधी रात के समय
उनको फ़ौजी बाने में फिरते देखा है।

होरेशियो
इसका कोई समाधान मैं नहीं पा रहा
लेकिन मेरी सीमित, मोटी बुद्धि बताती
कुछ विचित्र उत्पात राज्य में होने को है।

मारसेलस
अच्छा बैठो और जिसे हो पता बताए
किस कारण इस कदर कड़े चौकस पहरे में
प्रजा राज्य की रात रात भर मेहनत करती,
किस कारण प्रतिदिन तोपें ढाली जाती हैं
और विदेशों से हथियार खरीदे जाते
क्यों नौका निर्माताओं से इतना काम
लिया जाता है, उनको इसका पता न चलता
कब आया इतवार गया कब क्या होने का,
जिसके कारण लोग रात दिन खून-पसीना
एक किए हैं ? जिसे पता हो मुझे बताए।

होरेशियो
मुझे पता है, कम से कम ऐसी चर्चा है।
अभी अभी जिनकी छाया हमने देखी है
उन्हीं हमारे भूतपूर्व राजा को फ़ार्टिनब्रास,
नारवे के नरपति, ने अपने उद्धत
अहंकार में पागल होकर युद्ध के लिए
ललकारा था, तुम जानते ही होगे तुम
हैमलेट का बल विक्रम दुनिया में प्रसिद्ध था,
फ़ार्टिनब्रास मरा उनके विजयी हाथों में।
उन दोनों में मुहरबन्द इकरार हुआ था—
वीर-नीति अनुरूप न्याय नियमों से सम्मत—

जो भी मारा जाय, विजेता उसकी सारा
राज्य-सपदा का अधिकारी माना जाए।
फोर्टिनब्रास जयी होता तो महाराज के
पूर्ण राज्य पर उसका, उसकी सतानो का
हक हो जाता; पर उसके मारे जाने से,
अगर शर्तनामे का विधिवत् पालन हो तो,
हैमलेट उसके पूर्ण राज्य के अधिकारी है।
लेकिन फोर्टिनब्रास-पुत्र ने अपनी अनुभव-
हीन जवानी के उबाल, जोशोखरोश में
जहाँ-तहाँ नारवे राज्य की सीमाओ पर
कुछ उपद्रवी नवयुवको को जमा किया है।
खाने-पीने का लालच दे, उन्हे काम वह
दिया गया है जिसमे स्वाद उन्हे आता है।
वह क्या है ?—सरकार हमारी खूब समझती—
ज़ोर-ज़बर्दस्ती से, हाथो की ताकत से,
उन देशो के ऊपर फिर कब्ज़ा कर लेना
जिनको उसका पिता शर्त से हार चुका है।
आज मुल्क में जो हलचल है, भाग-दौड है,
जो तेज़ी है, तैयारी है, उसके पीछे
मुझे मुख्य कारण, आधार यही लगता है।

बरनार्डो : औ' मेरा भी यही ख्याल है; यही वजह है।
तब तो पहरे की घडियो मे इस छाया का
फौजी के बाने में आना कोई अशकुन
जना रहा है, और खासकर जब वह राजा
से इतनी मिलती-जुलती है, जो इस जंगी
चहल-पहल के मूल केन्द्र है।

होरेशियो : यह दिमाग को
परेशान इस तरह किए है जैसे आँखो
के अंदर किरकिरी पड़ी हो। ऐसा कहते,

परम समुन्नत, जगत विजेता रोम राज्य म
महाबली सीजर की हत्या क कुछ पहले
सहसा कब्रें फटीं कफन म लिपटे मुर्दे
बाहर निकल और नगर की गली गली म
घूमे रोते या बर्राते, नक्षत्रों से
लंबी-लंबी लपटें छूटीं ओस की जगह
लोहू टपका, सूरज धब्बेदार हो गया
और वरुण की जलगमना का नायक चंदा
ऐसा ग्रहण गृहीत और निस्तेज हो गया
जैसे उसकी प्रलय-काल तक मुक्ति न होगी।
जैसे आगम आगामी भीषण घटना की,
जैसे अगुन आनेवाली दुर्गम घड़ी की
या लक्षण होनेवाले अनर्थ की
पूर्व सूचना देते हैं वैसे ही समझो
अवनि और अम्बर ने मिलकर देश के
वासियों को एक तरह आगाह किया है।

(भूत फिर आता है।)

पर चुप देखो, इसी तरफ वह फिर आता है!
मैं इसके आगे जाता हूँ भले भस्म यह
मुझको कर दे। ओ छलना आगे मत बढ़ना!
अगर कंठ म तेरे स्वर है, मुख म जिह्वा
मुझको बतला
क्या कुछ ऐसा पुण्य काय है जिसके द्वारा
तुझे शांति औ मुझे बड़ाई मिल सकती है
मुझको बतला
क्या कुछ तुझको ज्ञात देश का दैव भविष्यत्
जिसे जानकर उसका निराकरण हो सकता,
मुझको बतला,
क्या तूने जीवन म कोई लूट खजाना

चोरी-चोरी धरती के अदर गाडा थ ,
जिसके लिए, कहा जाता, मुर्दो की रूहे
अक्सर पृथ्वी के ऊपर भटका करती है ।
मुझको वतला, ठहर, बोल ! मार्सेलस, रोक ले !

(मुर्गा बॉग देता है ।)

मार्सेलस . इसके ऊपर क्या कुठार से वार करूँ मै ?

होरेशियो : रुके न तो कर ।

वरनार्डो : इधर, यहाँ है ।

होरेशियो इधर, यहाँ है ।

मार्सेलस : निकल गया वह !

(भूत चला जाता है ।)

इसका इतना भव्य रूप है, इसके ऊपर
हाथ चलाना इसका तिरस्कार करना है ।
हवा काटने का प्रयास भी सफल हुआ है ?
यह प्रहार पर अवहेला से व्यग्य करेगा ।

होरेशियो : फिर भी मुर्गे ने जैसे ही वाँग शुरू की
चोर की तरह डरकर भागा; सुना गया है,
अरुणचूड, जिसको प्रभात का चारण कहते,
जव अपनी ऊँची-तीखी आवाज उठाता,
तब दिन का देवता नेत्र खोला करता है ।
उसकी ललकारो को सुनकर क्षिति, जल, पावक,
पवन, गगन से दभी, लोभी, पापी रूहे
भाग कही पर छिप जाती है । इसने भी यो
गायब होकर आज सत्य यह सिद्ध कर दिया ।

मार्सेलस : जैसे ही मुर्गा वोला वह लुप्त हो गया ।
कुछ कहते है, जब वह पुण्य-पक्ष लगता है
जिसमे हम अपने सरक्षक प्रभु मसीह का
जन्म-जयती-पर्व मनाते, यह प्रभात का
वाहक पछी, रात-रात भर वोला करता ।

तब कोई भी रूह नहीं बाहर आने की
हिम्मत करती, रातें बड़ी मनोरम होतीं,
नभ में तारे नहीं टूटते, परियाँ नहीं
उपद्रव करतीं, औ' न चुड़ैलें जादू-टोने
ऐसी पावन औ' मंगलमय घड़ियाँ होतीं ।

होरेशियो — सुन रक्खा है, इसपर कुछ विश्वास मुझे है ।
लेकिन देखो ऊँचे उदयाचल के ऊपर
पड़ी ओस पर भूरे कुहरे की चादर में
प्रात उतरता, अब हम पहरे से छुट्टी लें,
और अगर मेरी मानो तो आज रात जो
हमने देखा, उसे युवक हैमलट से कह दें ।
मुझको निश्चय है कि रूह जो हमसे चुप थी
उससे बोलेगी । सहमत हो उसे बता दें ?
उसके प्रति हम प्रेम और कर्तव्य निभाएँ
तो ऐसा करना आवश्यक और उचित भी ।

मारसेलस — चलो बता दें । मुझे पता है आज सुबह को
उससे भेंट कहाँ सुविधा से हो सकती है ।

(सब बाहर जाते हैं ।)

दूसरा दृश्य

गढ़ का एक राज-कक्ष

(राजा, रानी, हैमलेट, पोलोनियस, लायर्टीज़, वॉल्टिमन्ड, कार्नीलियस, सामन्त और सेवक-गण आते हैं ।)

राजा — गो कि हमारे प्यारे भाई हैमलट के
देहावसान की [illegible] विक्षुब्ध [illegible]
और उचित हो [illegible] दुख में [illegible] हमारे

मारी हो औ' देश समूचा शोक-मग्न हो,
फिर भी मन को हम विवेक से साध रहे है;
उनके गम मे हम सतुलन नही खो सकते,
आखिर हमें ध्यान अपना भी तो रखना है।
इस कारण सुख-दुख समान पलडो पर धरकर,
एक आँख मे ख़ुशी, एक मे रज बसाकर,
मातम से शादी औ' शादी से मातम की
गाँठ जोडकर, एक तरह से दवे हृदय से,
हमने अपनी पहले-की भाभी रानी से
ब्याह कर लिया, और हमारे साथ आज वे
इस रण-उन्मुख राज्य, राज्य के सिहासन की
मान्य स्वामिनी।—और आपकी शुभ सलाह से
भी हम वचित नही रहे है, इस प्रसग में
खुले हृदय से आप हमारे साथ रहे है।
हम इन सवके लिए आपके आभारी है।
अब जो कहना है, उसका है पता आपको,
फ़ोर्टिनब्रास-पुत्र ने हमको निवल समझकर,
या विचार कर कि हमारे स्वर्गीय वधु के
उठ जाने से राज्य हमारा असगठित हो
बिखर गया है, जिसका लाभ उठा सकता वह,
हमको सदेसे पर सदेसे भेजे हैं
जिनमे कहा गया है हम वह सारी धरती
वापस कर दें जिसको उसका पिता हमारे
पराक्रमी भाई के हाथो, शर्त बाँधकर,
हार चुका था। इसके बारे में इतना ही।
अब मैं आता हूँ उसपर जिसलिए मिले हम,
औ' जो कुछ हमको करना है। यह ख़त है जो
उसके चचा, नारवे को हम भेज रहे हैं,
जो रोगी, कमज़ोर, खाट से लगा हुआ है,

और मताज का मना स बेखबरा है
कि वह उसे समझाए आगे मत बढने द
जितनी सेना औ जितना सामान और कर
उस प्रजा से दिलवाना है यहाँ लिखा है।
वृद्ध नारवे को यह अभिवादन देन को,
यास्य कारनीलियस तुम्ह औ वाल्टिमाड को
जाना होगा। जिन बाना का ब्योरा इसम
दिया गया है उनके बाहर राजा से कुछ
न करन का तुम्ह निजी अधिकार नही है
किसी तरह का। विदा तुम्हे, कतव्य तुम्हारा
जल्दी करने का कहता है।

कारनीलियस }
वोल्टिमाड } इसके और
सभी कामा के लिए आपके हम सेवक हैं।

राजा हम तनिक सदह नही है। विदा, सिधारो।
(वाल्टिमाड और कारनीलियस बाहर जाते ह।)
लायरटीज कायक्रम अब अपना बतलाओ।
तुमने किसी काम पर जाने की हमसे कुछ
चर्चा की था। लायरटीज, काम वह क्या है?
उचित बात पर ध्यान हमशा हम देते है।
क्या है ऐसी चीज जिसे तुम हमसे मागो
और तुम्ह वह देने स इकार करें हम?
जो जितना दिल स दिमाग का माना जाता,
जो सबध वचन का कर्मों स होता है
वही तुम्हारे पिता और डेनमार्क राज्य क
सिंहासन का। बतलाओ क्या तुम्ह चाहिए?

लायरटीज महाराज अपराध क्षमा हो, मुझे दया कर
आज्ञा द मैं फ्रास देश को वापस जाऊ।
महामहिम क राज्यारोहण के अवसर पर
अपनी स्वामिभक्ति जतलाने की इच्छा से

वडी खुशी से मैं आया था। लेकिन अपना
फर्ज़ बजाकर, झूठ आपसे नही कहूँगा,
फ्रास लौट जाने की मेरी अभिलाषा है;
यदि श्रीमत कृपा कर अपनी अनुमति दे तो।

राजा तुम्हे पिता ने अनुमति दे दी ? पोलोनियस, तुम
क्या कहते हो ?

पोलोनियस : श्रीमन्, इसने एक तरह से
अनुमति मेरी ले ही ली है। इसने अपनी
विनती बारबार सुनाकर मुझको इतना
विवश कर दिया, मुझको कहना पडा, तुम्हारी
जैसी इच्छा। अब मेरी प्रार्थना यही है,
महाराज भी इसको जाने की आज्ञा दे।

राजा · लायरटीज, तुम्हारे यौवन की यह वेला,
समय तुम्हारे हाथो मे है, अपने सद्गुण
विकसित करने मे इसका उपयोग करो तुम,
अपनी रुचि से। अब, हैमलेट, तुमसे दो बाते—
मेरे भाई के बेटे, बेटे मेरे भी—

हैमलेट . (अलग) चाचा से तुम पिता बन गए, किंतु पिता से
कितने नीचे !

राजा : कारण क्या है, तुमपर शोक अभी तक छाया !

हैमलेट · महाराज के छाया-छत्र तले रहता हूं,
शोक मुझे क्या !

रानी : प्यारे हैमलेट, अब मातम के
वस्त्र उतारो, दीन देश पर दया दिखाओ,
आंखो को आँसू से तर कर, आहे भर-भर,
अपने पूज्य पिता को मिट्टी मे मत खोजो।
तुम्हे ज्ञात है ऐसा ही होता आया है,
जो भी पैदा हुआ उसे मरना पडता है—
दो दिन जगना, फिर अनत निद्रा मे सोना।

हैमलेट　देवि सत्य है ऐसा ही होता आया है।

रानी　यदि ऐसा है तो तुमको ऐसा क्यों लगता
तुम पर यह आघात नया है ?

हैमलेट　'लगता' न कहो,
देवि, सत्य ही यह मुझपर है, 'लगने' भर की
बात नहीं है। प्यारी माँ ये काले कपड़े,
संजीदा काली पोशाकें जिनको मातम
जतलाने को पहना जाता, गहरी, ठंडी
आहें जो बरबस मुंह से बाहर आती हैं
आँसू की धाराएँ जो नयनों से बहतीं
घनी उदासी जो चेहरे पर छाई रहती,—
ये सब की सब और शोक सूचित करने के
सब ढकोसले और चोंचले और दिखावे,
सब आकृतियाँ सभी रीतियाँ, सब मुद्राएँ,
मेरे मन के दुख को व्यक्त नहीं कर सकतीं।
इन सबसे इन्सान दुखी लगता है, सच है
पर मनुष्य इनका अभिनय भी कर सकता है।
मेरे अंदर जो है दूर दिखावे से है
ये दुख के ऊपरी वसन हैं अलंकरण हैं।

राजा　हैमलेट अपने पूज्य पिता के स्वर्गवास पर
शोक मनाना पुत्र के लिए उचित बात है
और तुम्हारा तो स्वभाव इतना कोमल है।
लेकिन देखो, पिता सदा किसका जीता है,
गए पिता के पिता पितामह पिता भी गए।
और पुत्र का धर्म दिवंगत पिता के लिए
शोक मनाना मातम करना पर कितने दिन ?
सदा के लिए स्मृति का दिल पर बिठलाना
भला नहीं है हठधर्मी है ऐसे दुख के
आगे झुकना नहीं मर्द को शोभा देता।

जो ऐसा करता वह ईश्वर की इच्छा का
आदर करना नही जानता, वह निश्चय ही
दुर्बल-मन है, अस्थिर-चित है, ज्ञान-शून्य है,
और समझदारी उसको छू नही गई है।
जो होनी है, और सदा जो होती रहती,
जैसे आँखो के आगे सौ बाते होती,
उससे हम अपने जड हठ मे क्यो दुख माने ?
छि, गुनाह यह ईश्वर के प्रति, मृतको के प्रति,
कुदरत के प्रति—बुद्धि जिसे स्वीकार न करती।
जब से पहली मृत्यु हुई है तब से लेकर
आज तलक जो मृत्यु हुई है, एक बात ही
प्रकृति पुकार-पुकार सदा कहती आई है—
मृत्यु पिताओ की होती, आगे भी होगी।
सुनो हमारी, व्यर्थ शोक करना अब छोडो,
हमको अपना पिता समझ लो, इसे सुने सब,
बाद हमारे तुम सिहासन के अधिकारी।
जितना पावन प्रेम पिता का पुत्र के लिए
हो सकता है उतना हमे तुम्हारे प्रति है।
विटेनबर्ग विद्यालय को तुम वापस जाना
चाह रहे हो, किंतु हमारी मर्जी के
बिल्कुल खिलाफ यह। हम तो यही चाहते है तुम
यही रहो; तुमको आँखो के आगे पाकर
हमें बडा सतोप, बडा आनद मिलेगा।
तुम्ही प्रमुख सरदार, भतीजे, बेटे, सब कुछ।

रानी : हैमलेट, माता की विनती को मत ठुकराओ।
यही रहो औ' विटेनबर्ग का ख्याल छोड दो।

हैमलेट : मां, भरसक आज्ञा-पालन का यत्न करूँगा।

राजा : यह कितना प्यारा, कितना सुदर उत्तर है !
यह डेनमार्क हमे जैसे है, तुमको भी हो।

देवि आइए हैमलेट ने अपनी कोमलता
अपनी इच्छा से जा मेरे मन की कर दी
उससे सच मानो मेरा दिल बाग बाग है।
इस अवसर पर जाम सेहत पाने का उत्सव
किया जायगा औ तोप दागी जाएगी
जिनकी आवाजों से बादल कांप उठेंगे
राज्य सभा के पान गान की मादक ध्वनियाँ
प्रतिध्वनित अंबर से होंगी जब वह भी
धरती के उल्लास हास से मगन मस्त हो।
देवि आइए।

(हैमलेट को छोड़कर सब बाहर चले जाते हैं।)

हैमलेट

उफ् ओ मेरी हाड मास की यह जड काया
काश पिघल गल भाप कि बूंदों में ढल सकती।
हाय धर्म ने आत्मघात को पाप किसलिए
कह रक्खा है। ओ परमेश्वर! ओ परमेश्वर!
मुझको सब संसार और यह सारा जीवन
कितना जर्जर शिथिल असार निरर्थक लगता।
इसको सौ धिक्कार! जगत ऐसा कानन है
जिसके झाड़ झंखाड़ों को कोई साफ
नहीं करता है। जो कि प्रकृति में मलिन घृणित है
उसने सबको छाप लिया है। यह होना था।
पिता को मरे मुश्किल से दो मास हुए हैं।
अरे कहाँ दो कम भी कम। कम महिमा
मंडित राजा। उनकी तुलना में यह लगता
जैसे नर के आगे वानर। मेरी माँ को
कितना प्यार किया करते थे। माँ के मुख पर
अगर हवा का झोंका भी लग जाता था वे
विचलित हो जाया करते थे। अंबर धरती।

क्या भूलूं क्या याद करूँ मैं ? एक समय था,
उन्हे देखते माँ की आँख नही थकती थी,
जैसे पीकर प्यास किसी की बढती जाए,
फिर भी एक मास के अदर—कैसे भूलूँ !—
छलना तेरा नाम नारि है—एक महीना
क्या होना है—हाय, पिता का शव जिस पथ से
गया, अभी उसके पग-चिह्न नही मिट पाए,
माँ ने उसको अश्रु-कणो से सीच दिया था ;
उसने, आह, उसी माँ ने कैसे—परमेश्वर !—
बुद्धिहीन पशु अधिक समय तक शोक मनाता—
मेरे चाचा, मेरे पूज्य पिता के भाई
को अपना पति बना लिया है—लेकिन दोनो
में क्या समता ! कहाँ देवता, कहाँ आदमी !
एक महीने के अदर ही !—उनकी सूजी,
लाल आँख के बिलकुल दिखावटी आँसू भी
सूख न पाए थे कि उन्होने ब्याह कर लिया !
ओ, निर्लज्जा की हद होती, किस उतावली
से व्यभिचारी बिस्तर मे वे जाकर लेटी !
अच्छा है यह नही, न कोई अच्छाई ही
इससे होनेवाली, मेरी छाती, फट जा,
क्योंकि मुझे अपने मुँह को बाँधे रहना है !

(होरेशियो, बरनार्डो और मारसेलस आते हे।)

होरेशियो श्रीमन्, मेरा अभिवादन ले ।

हैमलेट : तुमसे मिलकर मुझे खुशी है ।
होरेशियो हो, कच्ची याद नही है मेरी ।

होरेशियो · ठीक आपने पहचाना है,
श्रीमन्, मुझको अपना अदना सेवक समझे ।

हैमलेट . मैं तो साथी समझ रहा हूँ ; तुम चाहो तो
मुझको अपना सेवक समझो। विटेनबर्ग को

ध्याह यहाँ तुम क्या करते हो ? कहो मारसेलस

मारसेलस कैसे हो ?

हैमलेट कृपा आपकी।

बड़ी खुशी है तुमसे मिलकर

पर होरेशियो सच बतलाग्रो

विटेनबर्ग से दूर यहाँ तुम करते क्या हो ?

होरेशियो कुचाचारी श्रीमन मेरी बान पुरानी।

हैमलेट इसका दोषी कभी तुम्हारा दुश्मन तुमको

नहीं कहेगा। जो खिलाफ तुम अपने कहते

यदि उसका विश्वास करूँ तो बड़ा कान पर

जब्र करूंगा। तुम आवारागर्द नहीं हो।

लेकिन आए एलसिनोर तुम किस मतलब से ?

यहाँ सबक बस पीने का सीखा जा सकता।

होरेशियो यहाँ आपके पूज्य पिता के स्वर्गवास पर

मातमपुर्सी को आया था।

हैमलेट मेरे साथी

होकर मुझको मत भुठलाग्रो। तुम आए थे

मेरी माता की शादी में शामिल होने।

होरेशियो सच है श्रीमन अर्थी के बस पीछे ही

बारात लगी थी।

हैमलेट सोचा इससे हुई किफायतशारी कितनी।

मृत्यु भोज के लिए बने पकवान यजनो

से शादी की दावत दे दी—गो थे बासी।

होरेशियो मेरी आँखों ने यह दिन देखा।

इससे अच्छा था कि स्वर्ग से धक्के दे

शैतान नरक में मुझे गिराता।

मेरे पिता ! मुझे लगता, मैं उन्हें देखता।

होरेशियो कहाँ ? किस जगह ?

हैमलेट होरेशियो मन की आँखों से।

होरेशियो :	एक बार उनको देखा था, क्या राजा थे !
हैमलेट :	क्या मनुष्य थे !—अपने पूरेपन के अदर । उन जैसा अब कभी देखने को न मिलेगा ।
होरेशियो :	माने तो कल रात उन्हे मैने देखा था ।
हैमलेट :	देखा ? किसको ?
होरेशियो	राजा को, आपके पिता को ।
हैमलेट :	मेरे पूज्य पिता, राजा को ?
होरेशियो .	अचरज मे यो मत खो जाएँ; सुने ध्यान से जो मै अद्भुत बात बताता, उसके साखी ये दोनो है ।
हैमलेट .	कहो कृपा कर, सुनता हूँ मै ।
होरेशियो	दो रातो को एक साथ जब ये दो सज्जन पहरे पर थे, अर्द्ध रात्रि के घुप्प अँधेरे, सन्नाटे मे, इनको ऐसे लगा कि जैसे एक शक्ल हू-ब-हू आपके पिता की तरह, एडी से लेकर चोटी तक, बडी शान से कवच, कृपाण, कुठार, ढाल से सज्जित होकर इनके आगे आ पहुँची औ' लगी टहलने, धीमी पर गभीर चाल से, तीन बार वह तीन हाथ पर इनके आगे होकर गुजरी । भय से, भ्रम से दोनो की आँखे पथराई, मारे डर के अग-अग सब शिथिल हो गए, ठूँठ की तरह जडीभूत हो मूक भाव से खडे रह गए, हुई न हिम्मत, उससे बोले । अपने तक रखने की भारी कसम दिलाकर मुझे इन्होने यह बतलाया । और तीसरी रात रहा पहरे पर मैं भी । ठीक जिस समय, ठीक जिस तरह, मुझे इन्होने बतलाया था, शक्ल सामने मेरे आई; शब्द-शब्द इनका

सच निकला पिता आपके मरे जाने
पहचाने थे—बिल्कुल शक्ल उन्ही जसी थी,
जस मेरा एक हाथ दूसरे की तरह ।

हमलेट मगर कहाँ पर दिखलाई दी ?

मारसेलस श्रीमन, चबूतरे पर, जिसके ऊपर हम
पहरा देते थे ।

हैमलेट क्या तुम उससे बोल भी थे ?

होरेनियो बोला था श्रीमन पर उसने दिया न उत्तर ।
फिर भी मुझको लगा कि उसने शीश उठाया
और बनाई मुद्रा जस वह कुछ कहना
चाह रही है । ठीक उसी क्षण मुर्गे न दी
बाँग ज़ोर से, और भोर की उस पुकार पर
वह तज़ी से सिमटी ग्राभल हुई आँख स ।

हैमलेट बडा मुझे इसपर अचरज है !

होरेनियो प्राणा की सौगध मुझे है सब कुछ सच है ।
और परम कर्तव्य हमारा यह था इसकी
खबर आपको कर दी जाए ।

हैमलेट ठीक किया है तुमने लेकिन मैं यह सुनकर
परेशान हू । आज रात तुम पहरे पर हो ?

दोनो हम दोनो है ।

हैमलेट क्या तुमने यह कहा—शक्ल हथियारबन्द थी ?

दोनों यही कहा था ।

हैमलेट एडी स लकर चोटी तक ?

दोनों श्रीमन सिर से ले पाँवो तक ।

हैमलेट तब तो चेहरा दिखा न होगा ।

होरेनियो हाँ श्रीमन उसके चेहरे पर झिलम पडा थी ।

हैमलेट क्या उसके मुह पर गुस्सा था ?

होरेनियो गुस्से स ज्यादा सदमा था ।

हैमलेट चेहरा पीला था कि लाल था ?

होरेशियो : बिल्कुल पीला पडा हुआ था।
हैमलेट . आँख गडाकर क्या उसने तुमको देखा था ?
होरेशियो : घूर-घूरकर।
हैमलेट · काश वहाँ पर मैं भी होता !
होरेशियो : आप बडे अचरज मे पडते।
हैमलेट . पडता ही मैं, क्या वह देरी तक ठहरी थी ?
होरेशियो धीरे-धीरे सौ गिनने तक।
दोनो इससे ज्यादा, इससे ज्यादा !
होरेशियो नही, जबकि मैने देखा था।
हैमलेट दाढी के अधपके बाल थे ?
होरेशियो थे, जैसे मैने उनके, जीते मे देखे ,
जैसे काली रात चाँदनी मे लगती है।
हैमलेट आज रात मैं पहरा दूँगा,
सभव है, छाया फिर आए।
होरेशियो · शर्त लगा ले, वह आएगी।
हैमलेट . यदि वह मेरे पूज्य पिता का रूप धारकर
आती है तो मैं तो उससे बात करूँगा,
चाहे दोजख गला फाडकर मुझको रोके।
तुम सबसे मेरी विनती है, अगर अभी तक
बात गुप्त यह तुमने रक्खी, तो उसपर चुप
रहकर उसको गोपनीय पहले से समझो।
औ' जो भी तुम आज रात को देखो, उसको
समझो, उसपर मुँह मत खोलो। मुझपर होगा
बहुत बडा एहसान तुम्हारा , अभी विदा दो।
चबूतरे पर ग्यारह औ' बारह के अदर
मै पहुँचूँगा।
सब हमे आपके प्रति अपना कर्तव्य ज्ञात है।
(सब जाते है।)
हैमलेट · मुझे तुम्हारा प्रेम चाहिए, जैसे मेरा

तुम सब के प्रति मुझे विदा दो।
कवच विरच में क्या है लस पिता की आत्मा !
है अच्छे आसार न दिखते, कोई छल बल
किया गया है। काश रात जल्दी आ जाती !
तब तक मेरे मन, धीरज धर। बुरी करनियाँ
अपने को जाहिर कर देंगी—चाहे लोगों
की आँखों से उन्हें छिपाए सारी दुनिया।

(जाता है।)

तीसरा दृश्य

पोलोनियस के घर का कमरा

(लायरटीज और ओफीलिया का प्रवेश)

लायरटीज — मेरा सब सामान जा चुका, मुझे विदा दो।
जब अनुकूल हवाएँ हों जब सुविधाएँ हों
सन्देश भेजने को, तब सो मत जाना
समाचार अपना, बहना, तुम देती रहना।

ओफीलिया — क्या इसमें सन्देह तुम्हें है ?

लायरटीज — हैमलेट ने जो थोड़ा-बहुत झुकाव तुम्हारे
प्रति दिखलाया उसे समझना वह बहाव है
सिर्फ समय का नए खून की बस अठखेली
कच्ची डाल पर लगी प्रकृति के नव वसंत में
कली अधखिली मुर्झा कर के झर जाने को
टपका लेकिन नहीं बहुत दिन टिकनेवाली
जो पल भर मुसकरा गंध को बिखराकर पर
मार निकल जाती है बहना और नहीं कुछ।

ओफीलिया — क्या यह बचपन इतना ही है ?

लायरटीज — उसको इससे अधिक न समझो।
चन्द्र दूज का बढ़ता है जब तब यह बचपन

क्या आकार ग्रहण करता है, या प्रकार भी ?—
सुदरता, प्रकाश मे वढकर । इसी तरह से
जव मनुष्य वढता वाहर से, भीतर-भीतर
वुद्धि-आत्मा भी उसकी विकसित होती है ।
समव है वह अभी प्यार तुमको करता हो,
और इस समय भव्य भावनाएँ उसकी हो
निर्मल-निश्छल । पर वह जैसे ऊँचे पद पर,
उसे देखकर डरा चाहिए, उसकी इच्छा
अपनी इच्छा मात्र नही है, क्योकि जन्म के
वधन से वह वँधा हुआ है, अपने मन की,
जैसे दुनिया के अगणित अनजाने करते,
करने को आज़ाद नही है; वह पसद जो
आज करेगा उसपर कल सपूर्ण राज्य की
क्षेम-कुशलता निर्भर होगी, तव पसद पर
उसकी, अकुश रखना आवश्यक हो जाता ।
उसे राज्य की इच्छाओ पर, सकेतो पर,
चलना होगा, क्योकि राज्य का वह मुखिया है ।
तव यदि वह कहता है प्यार तुम्हे करता है,
वुद्धि तुम्हे इसलिए मिली, उसके कहने का
उतना ही विश्वास करो तुम जितने को वह
अपने पद से सयत व्यवहारो मे परिणत
कर सकता है । वह उतने से अधिक न होगा
जितना है डेनमार्क राज्य की इच्छा की सविहित
परिधि मे । तव अनुमान करो तुमको क्या
हानि, मान की, सहनी होगी यदि तुम उसके
गीतो पर लट्टू हो जाती, दिल दे देती,
या सुनकर उसकी उच्छृखल मनुहारो को
अपने यौवन का पावन धन लुटा वैठती ।
डरो, वहन, उससे डरने की आवश्यकता ।

अपने दिल का प्यार छिपाकर ऐसा रखना
नजर निशाना उसका इसका बेध न पाए।
क्वाँरी लड़की की मति मारी जहाँ गई तो
शुक्ल चंद्र के सम्मुख घूँघट कभी न खोले।
गुण भी अवगुण के प्रहार से नहीं बचा है
इसके पूर्व कि मधुऋतु मधुवन में मुसकाए
नव कलियों के अन्दर कीड़े लग जाते हैं
औ यौवन के तरल, सरस स्वर्णिम प्रभात में
काले और करकी बादल घिर आते हैं।
तो सचेत हो भय सब से अच्छी रक्षा है,
यौवन खुद अपने विरुद्ध विद्रोह जगाता,
हो न सामने कोई ताकत कोई भी न।

ओफीलिया　बंधु तुम्हारी भली सीख का मेरे दिल पर
असर हुआ जो कभी न उसको मिटने दूँगी
लेकिन मेरे प्यारे भाई कभी न मुझको
कुश कंटकमय कठिन स्वर्ग का पथ दिखाना
पर उपदेश कुशल पादरियों के समान जो
फूल फले अपने घमंड में बेफिक्री से
आजादी से फूल-कली से ढके पथ पर
रंगरलियाँ करते फिरते हैं औ अपने ही
शब्दों से बेबहर रहने।

लायरटीज　इसकी आशंका मत रक्खो!

(पालोनियस आता है।)

देर हो गई लेकिन मेरे पिता आ रहे
फिर उनका आशीष मिलेगा मंगल होगा
पुनर्मिलन का अवसर कोई शकुन जनाता।

पालोनियस　कितनी देर लगा दी अब तक गए नहीं तुम,
पालों में भर गई हवाएँ और जहाजी
राह तुम्हारी देख रहे हैं, तुम्हें बुलाए!

औ' जो थोडे-से उपदेश तुम्हे देता हूँ,
मन पटल पर अकित कर लो। जो मन मे हो
फिरो न कहते, और न अवकचरे विचार को
कार्य-रूप दो, मिलनसार हो, लेकिन अपनी
चाल-ढाल मे कभी गँवरपन मत आने दो।
जाँच-परख कर तुमने मीत वनाए है जो,
उन्हे लगा रक्खो छाती से, कम वाँहो मे,
किंतु अशिक्षित और अदीक्षित आवारो के
साथ करो मत यारवाशियाँ। पडो न झगडे
मे, लेकिन यदि पडना ही हो तो दुश्मन को
सवक सिखा दो ऐसा जो वह कभी न भूले।
सवकी वात सुनो, लेकिन सवसे मत वोलो,
सवकी जानो राय, मगर दो राय न जल्दी,
खर्च करो पर पहले अपनी जेव देख लो,
औ' फिजूलखर्ची की आदत वहुत वुरी है,
अच्छा पहनो, तडक-भडक को मत अपनाओ,
अक्सर कपडा इन्सानो का भेद वताता,
और फ्रास के ऊँचे दर्जे, ऊँचे ओहदे—
वाले कपडो के चुनाव मे अपनी ऊँची
रुचि-रुझान का खास सवूत दिया करते है।
दो उधार मत और साथ ही लो उधार मत,
दौलत और दोस्त दोनो का यह दुश्मन है,
जो उधार ले खर्च करेगा, धन फूँकेगा,
सवके ऊपर, अपने प्रति ईमानदार हो,
यदि ऐसे इन्सान वन सको तो, ध्रुव जानो,
तुम न किसी को धोखा दोगे, विदा, दुआएँ
मेरी तुमको ऐसा ही गुणवान वनाएँ।

लायरटीज विनम्रता से विदा ले रहा हूँ मै, श्रीमन्।

पोलोनियस : समय जा रहा, नौकर-चाकर वाट देखते।

लायरटीज	बहन, विदा दो, खूब याद रखना मैंने जो बात कही है।
ओफीलिया	गांठ बांध ली है वह मैंने औ रक्खो विश्वास किसी पर नहीं खुलेगी।
लायरटीज	विदा मुझे दो !
	(लायरटीज बाहर जाता है।)
पोलोनियस	ओफीलिया उसने तुमसे क्या बात कही है ?
ओफीलिया	कुछ बात श्रीमत हैमलेट के बारे में
पोलोनियस	मरियम साखी बहुत ठीक उसने सोचा है। इधर कई लोगों से मैंने सुना कि अक्सर तुम्हें अकेले में उसने बुलवा भेजा है औ तुम भी खुलकर आजादी से उससे मिलती-जुलती हो। यदि ऐसा है जैसा मुझसे कहा गया है एक तरह से मुझको आगाही देने को तो मुझको यह कहना होगा तुम अपने को ठीक तरह से नहीं समझती मेरी बेटी होकर क अपनी इज्जत का ख्याल न रक्खे ! तुम दोनों में जो है उसको साफ साफ मुझसे बतलाओ !
ओफीलिया	श्रीमन् पिछले दिनों उन्होंने अक्सर मेरी प्रेम भरी मनुहारें की है।
पोलोनियस	प्रेम खूब है ! तुम कच्ची कचनार कली हो। इन आंधी तूफानों से तुम अभी न गुजरी। क्या उसकी मनुहारों का विश्वास तुम्हें है ?— मनुहारें तुम जिन्हें समझती।
ओफीलिया	श्रीमन् मैं खुद नहीं जानती मैं क्या समझूं !
पोलोनियस	मरियम साखी मैं तुमको सब समझाऊंगा। तुम अपने को बच्ची समझो। जिन मनुहारों को तुमने हीरा-सा समझा व तो मणि के

हार नही है। इतनी जल्दी मन मत हारो।
वर्ना, हो ज्यादती शब्द के साथ भले ही,
तुम मुझको मनिहार बनाकर ही छोडोगी।

ओफ़ीलिया : श्रीमन्, मेरे लिए उन्होने बडा प्रेम-सत्कार
दिखाया।

पोलोनियस . ठीक, 'दिखावा' ही तुम उसको कह सकती हो।
छी-छी ! छी-छी !

ओफीलिया · और कहा जो, सत्य सिद्ध उसको करने को
सप्त स्वर्ग की शपथ उठाई।

पोलोनियस यह लासा है जिससे चिडियाँ फाँसी जाती।
खूब जानता, जब यौवन-ज्वर बलकाता है,
सन्निपात से ग्रसी हुई-सी जीभ जल्पती,
शब्द-ज्वाल से प्रेम-प्रतिज्ञा, वादे करती,
लेकिन इस ज्वाला मे, बेटी, चमक बहुत
होती है, ताप बहुत कम होता। भूले से भी
इसको दिल की आग न समझो। यह उठते ही
उठते अपने प्रण-प्रलाप को भस्मसात कर
आब-ताब दोनो से वचित हो जाती है।
अब से उसके पास न ज्यादा आओ-जाओ,
इतनी सस्ती बनो न तुमको जो जब चाहे
बुलवा भेजे। और मुझे श्रीमत हैमलेट
के बारे में यह कहना है, औ' इतना ही
तुम्हे जानना, कि वे मर्द है, नौजवान है,
औ' जितनी आजादी से वे चल सकते है,
कभी नही तुमको मिल सकती। ओफीलिया,
थोडे मे, उनके वादो का विश्वास करो मत,
क्योकि लबादे जो वे लादे, वे बाहर से
पाक-साफ है पर उनके अदर गूदड है ;
जोगिनियो के बाने मे वे कुट्टनियाँ है,

जिससे उनको छल करने म आसानी हो।
बस, इतना ही मुझको कहना, अब से इसको
साफ समझ लो कभी नही मैं यह चाहूगा
अपनी फुरसत की घडियो मे लुक छिपकर के
तुम श्रीमन हैमलट की सोहबत मे बठो,
बदनामी लो ध्यान रहे यह मैं कहता हूँ
ठीक राह पर तुम लग जाओ ! समझ गई हो !

ओफीलिया — श्रीमन् मैं आज्ञा मानूगी।

(दोनों जात ह।)

चौथा दृश्य

(हैमलट, होरेशियो और मारसेलस आत ह।)

हैमलेट — हवा काटती सी लगती है बडी ठड है।

होरेशियो — चुभती सी है तेज हवा है।

हैमलेट — बजे हुए क ?

होरेशियो — बारह बजनवाल होग।

मारसेलस — नही बज चुके।

होरेशियो — सुना न मने तब तो वक्त पहुचता है जब
रूह निकलती और घूमती
(तुरही और ढाल की आवाज आती है।)
श्रीमन्, कसी
ये आवाज ?

हैमलेट — आज रात का राजा उत्सव
मना रहे है खान पान है नाच-गान है।
उधर ढालत होगे व प्याले पर प्याल
इधर ढाल औ नरसिंह चीत्कार-चीत्कार कर
उनके मनहोनी के वाने घोषित करत।

होरेशियो — यह रिवाज है ?

हैमलेट . मरियम साखी, है ऐसा ही ,
मुझे ख्याल आता है, गो मैं इसी देश का
बाशिंदा हूँ और यही जन्मा-जागा हूँ,
मैंने इस रिवाज का पालन कम ही देखा ।
इस बदहोशी की लत से हम पूरब-पच्छिम—
सब देशो मे निंदित-नीचे समझे जाते ।
हमे पियक्कड वे कहते है, और सुअर के
साथ हमारा नाम जोडते । औ' इसमे जो
सद्‌गुण हम मे पाए जाते, उनपर भी
पानी फिर जाता । लोगो के भी साथ यही
अक्सर होता है--किसी प्राकृतिक त्रुटि के कारण—
जुडा जन्म से जो है उसके लिए किसी को
दोषी कहते ?—जन्म प्रकृति की लाचारी है—
या उनमे कोई विकार पैदा होने से,
जिससे उनकी तर्कशक्ति मारी जाती है,
या कि किसी ऐसी आदत के लग जाने से,
जो उनके व्यवहारो को अप्रिय कर देती,
उनमे एक बुराई ऐसा घर कर लेती—
चाहे हो वह देन प्रकृति की, या किस्मत की—
उनका गुण, उनकी पावनता औ' महानता,
एक उसी खामी के कारण सब दब जाती
औ' दुनिया उनकी बदनामी करती फिरती ।
महज खराबी, माशा भर की, पूरे मन भर
की खूबी को हल्का साबित कर देती है ।

(भूत आता है ।)

होरेशियो . देखे, श्रीमन्, वह आता है !

हैमलेट ओ स्वर्दूतो, दिव्य शक्तियो, हमे बचाओ !
चाहे तू हो कोई जीवन-मुक्त आत्मा,
चाहे तू अभिशप्त प्रेत हो, चाहे तू ला

स्वर्ग बयारें या कि नरक के झड़ झकझोरे
चाहे तेरी मंशा अच्छी या कि बुरी हो,
तू ऐसी मुद्रा में आता मुझको लगता
मैं कुछ प्रश्न करूँगा तो तू उत्तर देगा।
मैं अवश्य तुझसे बोलूँगा तू हैमलेट है
नृपति पिता डेनमार्क महीपति आ, उत्तर दे!
क्या मेरा अज्ञान चीखता रह जाएगा?
तेरा शव मन्त्राभिषिक्त कर जिस पेटी में
हम धर आए थे क्या उसको तोड़-ताड़कर
जिस पक्की औ बड़ी संगमरमरी कब्र में
तुझे सुलाकर हम आए थे उसे फाड़कर
क्या तू बाहर निकल पड़ा है? मतलब क्या है?
प्राणहीन शव क्या तू पूरे कवच किरच में
चन्द्र के धुंधले प्रकाश में घूम रहा है?
तुझसे रात डरी-सी लगती। औ जग के
अनजान जीव हम ऐसे प्रश्न उठाकर थरथर
काँप रहे हैं जिनके उत्तर नहीं हमारी
बुद्धि-परिधि के अन्दर आते। बोल कि यह क्या?
बोल किसलिए? बोल कि हमको क्या करना है?
(भूत हैमलेट को बुलाने का संकेत करता है।)

होरेशियो
अपने साथ लिवा जाने को बुला रहा है
जैसे उसको अलग आपसे कुछ कहना है।

मारसेलस
देखें कम मुड़ झुककर के हाथ हिलाता
कहीं निराले में चलने को लेकिन उसके
साथ न जाएँ।

होरेशियो
हरगिज, हरगिज!

हैमलेट
नहीं बोलता
तब मैं उसके साथ जा रहा।

होरेशियो
श्रीमन्, ऐसा

मत करिएगा !

हैमलेट : क्यो, डर का कुछ कारण भी हो ?
मै अपने जीवन की कौडी भर परवाह
नही करता हूँ, और जीव का क्या विगडेगा ,
जीव नित्य है, जैसे इसका, वैसे मेरा ।
मुझको यह फिर बुला रहा है , मै जाऊँगा ।

होरेशियो · कही सिंधु की ओर न फुसलाकर ले जाए,
या पहाड की धुर ऊँची चोटी के ऊपर
जिसकी छाया नीचे फैले जल मे धँसती ,
और वहाँ दूसरा भयानक रूप न ले ले,
बुद्धि हरण जो कर ले, जो पागल कर डाले ।
इसे सोच ले , और न कुछ भी हो तो ऐसी
जगह खडे हो पुरसो नीचे गर्जन करते
सागर को देखना सिर्फ सिर चकरा देता ।

हैमलेट अव भी मुझको बुला रहा है ;
चल, मैं तेरे साथ चलूंगा ।

मारसेलस श्रीमन्, आगे मत वढिएगा ।

हैमलेट हाथ छोड दो ।

होरेशियो . कहना माने, आप न जाएँ ।

हैमलेट : मेरा भाग्य पुकार रहा है ! औ' शरीर की
शिरा-शिरा तन गई कि जैसे हो तन्नाए
हुए शेर की । अव भी मुझको बुला रहा है,
दूर हटा लो हाथ, साथियो । कसमन, मुझको
जो रोकेगा, वह धोएगा हाथ जान से ।
मैं कहता हूँ, दूर हटो !—चल, साथ चलूंगा ।
(भूत और हैमलेट बाहर जाते है ।)

होरेशियो : इन्हे न जाने किन ख्यालो ने जकड लिया है ।

मारसेलस · साथ चले हम ; इनकी सुनना ठीक न होगा ।

होरेशियो · चलो चले; देखे क्या इसका फल होता है ।

सौंप गया था।

भूत निश्चय वह विषयी लपट पशु,
जिसने बातो के जादू से धोखेवाली,
सौगातो से ऊपर से सतवती दिखती
मेरी रानी को अपनी निलज्ज वासना
का शिकार कर लिया (अरे, ये खोटी बातें,
सौगातें किस तरह फसाती !) ओ, हैमलेट क्या
पतन हुआ मेरी पत्नी का ! मुझसे—जिसने
प्रेम किया था इस गरिमा से गिरजे में जा,
हाथ हाथ मे ले विवाह की पुण्य प्रतिज्ञा
ली—उसपर उस लुच्चे पर जो गुण स्वभाव में
मुझसे नीचा। सद्गुण दुर्गुण के नर्सागिक
पलाभनो से कभी नही तिल भर डिग सकता।
विषय वासना चाहे वे हो स्वदूता में
नर्सागिक सेजो के ऊपर तृप्त न होती,
गदी गलियो मे जा गिरती।
धीमे बोलू प्रात पवन सौरभ बिखराता।
बाग मे यह जबकि बाग मे मैं सोया था
मुझको तिपहर में सो जाने की आदत थी
मुझे अकेला पा चुपके से तेरा चाचा
एक जहर की नामुराद शीशी ले आया
औ उँडेल दी मेरे कानो के रध्रो मे
जिससे कोढ उभर आता है उसको इसानी
लाहू से ऐसी है दुश्मनी कि पारे
सा वह तन की नस-नाडी मे बहुत जल्द ही
भिन जाता है। और बडी तेजी से अच्छा
पतला लाहू बँधने लगता दही की तरह
जसे दूध खटाई पडने पर जम जाता।
मेरे साथ हुआ ऐसा ही आनन-फानन

मेरे सारे चिकने तन पर पडे चकत्ते,
चमडी पर खुरदुरी, बुरी पपडी चढ आई।
इस प्रकार सोते मे भाई के हाथो से
अपने जीवन, राज-मुकुट, रानी से वचित
किया गया मैं , गया गिराया मनोविकारो
से भी फूला , मुझको भेजा गया गुनाहो
की गठरी को सिर पर लादे , अतिम प्रायश्चित
न कर सका, अतिम वार न पाप सकारे,
अतिम वार न माफी माँगी, घनी निराशा !
अब मुझको अपनी करनी खुद भरनी होगी।
वडी वेदना, वडा शोक है, महाशोक है !
यदि तुझमे जीवन है तो इसको न सहन कर।
तू डेनमार्क-राज्य-शय्या को विपय-वासना,
ऐयाशी की शापित सेज न वन जाने दे।
किसी तरह यह काम तुझे पूरा करना हो,
देख, विकार न तेरे मन को छूने पाए !
अपनी माता के विरुद्ध कुछ वात सोच मत ,
उसे छोड दे ईश्वर पर या उन काँटो पर
जो उसकी छाती के अदर—चुभे, कुरेदें।
अब जुगनूं की जोत मद पडती जाती है।
इससे लगता है कि प्रात अब दूर नही है।
विदा, विदा दे, हैमलेट, मुझको भूल न जाना !

(बाहर जाता है।)

हैमलेट : ओ, तुम सातो स्वर्ग ! ओ, धरा !—और किसे मैं
साथ पुकारूँ ? अथ नरक को ? छी-छी ! छी-छी !
मेरी छाती पत्थर कर दो ; देह-शिराओ,
क्षण-भर को भी ढीली मत हो, तनी रहो तुम,
तना मुझे भी रक्खो !—कैसे तुझे भुला दूं ?
ओ दुखियारी रूह, याद जब तक न छोड़कर

जाती इस विगड़े दिमाग को, बस भूत
तुझे सकता हूँ। निश्चय ही अपने दिमाग से
दूर करूँगा सब छोटी मोटी बातों को
सब किताब की शिक्षाओं को, सब अतीत की
शक्ल-सूरतों का, छापों को, जिनका यौवन
अनुभव संचित करता रहता, तेरा ही
आदेश एक बस मेरी बुद्धि बसा रक्खेगी,
बाहर कर दूँगा बाकी छोटी मोटी को
ऐसा ही होगा सौगंध मुझे ईश्वर की।
ओ पापी पतिघाती नारी!
ओ गन्दे 'खलखल हँसनेवाले हत्यारे खल'!
कहाँ गई मेरी कापी मैं अंकित कर दूँ
'खलखल हँसनेवाला भी खल हो सकता है,
कम से कम डेनमार्क राज्य में ऐसा खल है।
चचा, यही तुम! क्या थे अंतिम शब्द कहे थे?—
विदा, विदा दे हैमलट, मुझको भूल न जाना।
मैं इसकी सौगंध खा चुका।

मारसेलस }
होरेशियो } श्रीमन श्रीमन!

(होरेशियो और मारसेलस आते हैं।)

मारसेलस — अच्छे हैं श्रीमन?
कर प्रभु रक्षा उनकी!

हैमलट — ऐसा ही हो।

होरेशियो — कहिए श्रीमन कहिए श्रीमन!

हैमलट — आ हीरामन, आ हीरामन!

मारसेलस — श्रीमन कैसे हैं?

होरेशियो — श्रीमन, क्या हाल चाल हैं?

हैमलट — बहुत ठीक हूँ।

होरेशियो — श्रीमन जो बीती कह डालें।

हैमलेट   नही तुम्हारे मुँह पर ताले।

होरेशियो :   कसमन श्रीमन्, मैं न किसी से बात कहूँगा।

मारसेलस :   औ' न किसी से मैं भी, श्रीमन्!

हैमलेट   कभी किसी ने इसपर पूछा तो भी, बोलो,
मौन रहोगे ?

होरेशियो   निश्चय, श्रीमन्, कसमन कहता।

हैमलेट   इस पूरे डेनमार्क राज्य मे जो खल बसता,
साथ-साथ वह मूर्खराज भी।

होरेशियो .   इसे कब्र से निकल रूह के हमसे कहने
की कोई दरकार नही है।

हैमलेट   ठीक बात है, तुमने जो कुछ कहा ठीक है,
तो अब आगे और बात-बकवास बिना मै
ठीक समझता, हाथ मिलाओ और विदा हो।
लगो काम से, या कि जहाँ को चाहो जाओ ,
यहाँ सभी का काम, सभी की चाह अलग है ,
सच ऐसा ही है, औ' देखो, मैं बेचारा
चला प्रार्थना करने को अब।

होरेशियो   श्रीमन्, ये सब शब्द अटपटे, ऊटपटाँग
मुझे लगते है।

हैमलेट   मुझे दुःख है, उनसे तुमको चोट पहुँचती।
बड़ा दुःख है, दिली दुःख है।

होरेशियो   श्रीमन्, उनसे चोट किसी को नही पहुँचती।

हैमलेट   सच सौगध सत पैतृक की, ओ होरेशियो,
बडी चोट दे गया दृश्य जो आगे आया।
मेरी मानो, रूह बडी ईमानदार है।
उसके मेरे बीच हुई जो, उसे जानने
की इच्छा पर काबू रक्खो। औ' अब मेरे
अच्छे मित्रो, क्योंकि मित्र हो , सहपाठी हो,
सेनानी हो, एक प्रार्थना मेरी मानो।

जगह बदल ले।

होरेशियो . ओ दिन-रात ! मगर यह कितना अद्भुत-अनजाना
लगता है।

हैमलेट तो अनजान बने रहकर ही इसका स्वागत
करते जाओ। ओ होरेशियो, सुनो हमारे
दर्शन की कल्पना जहाँ तक पहुँच सकी है,
धरा-गगन मे उसके आगे बहुत पडा है।
लेकिन आओ,
जितनी सयम-शक्ति मिली है तुमको अब तक,
आगे उससे भी ज्यादा की आवश्यकता,
कि जब अजनबी-सा कि अजब-सा जान पडूँ मैं
(सभव है आगे से मुझको ठीक लगे, मैं
पागल-सा व्यवहार बना लूँ)
तो ऐसे अवसर पर मुझको देख कभी तुम
बाँहो को ऐसे मत बाँधो, या इस विधि से
शीश हिलाओ, या कुछ ऐसे शब्द निकालो,
जो सदेह जगा सकते हो, जैसे, 'हम यह
खूब समझते', या 'हम चाहे तो कर डाले',
या 'हम कह सकते यदि चाहे', या 'ऐसे है
या यदि ऐसे हो सकते हो', या ऐसे ही
गोलमोल कुछ जिससे यह जाहिर होता हो
तुमको मेरा अता-पता है—ऐसा कोई
काम न करना। तुमको प्रभु की दया-कृपा की
सबसे ज्यादा आवश्यकता। कसम उठाओ।

भूत . कसम उठाओ !

हैमलेट शाति, शाति, अशात आत्मा !
सुनो, सज्जनो, तुमसे यह प्रार्थना कि मुझको
अपने प्यार, मित्रता का अधिकारी समझो,
प्रभु ने चाहा तो यह दीन-हीन हैमलेट भी

प्यार और मित्रता तुम्हारे साथ निभाने
को जो कुछ भी कर सकता है सब करेगा।
हम सब मिलकर काम करेंगे, लेकिन एक
निवेदन कोई मुँह मत खोले। घड़ियाँ काली।
नियति! निकाला तूने मुझसे कब का बदला
मुझको भेजा इन घड़ियों को करूँ उजाली!
हम सब मिलकर साथ चलेंगे।

(सब बाहर जाते हैं।)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(पोलोनियस और रेनाल्डो आते है।)

पोलोनियस रेनाल्डो, रुपयो की थैली और चिट्ठियाँ
मेरे लडके को दे देना।

रेनाल्डो दूँगा, श्रीमन्!

पोलोनियस मगर तुम्हारी उस्तादी मैं तब मानूँगा
जब तुम उससे मिलने के पहले ही उसके
चाल-चलन का पता लगा लो।

रेनाल्डो ठीक यही मैने सोचा था।

पोलोनियस मरियम साखी, बहुत खूब, तुम खूब आदमी!
सुनो, तुम्हारी जगह अगर मैं होता पहले
पता लगाता, कौन-कौन से डेनमार्की
पेरिस मे है, क्या है, कैसे, किस जरिए से
और कहाँ पर वे रहते है, साथी कैसे, खर्चा कितना·
मै अपने इन चद सवालो के जवाब के
रुख से भाँप इसे लेता वे मेरे लडके
से वाकिफ है। अब जो तुमका अता-पता है,
खास उसी के बारे मे तुम अगर पूछते,
पा सकते थे? तुम कहना, मै उसे जानता,
मगर दूर से, उसके पिता जानते मुझको,
कई मित्र भी, मै भी थोड़ा उसे जानता!

ध्यान रहे इसका रेनाल्डो।

रेनाल्डो — श्रीमन् इसका मैं रखूँगा।

पोलोनियस — *थोड़ा लेकिन अच्छी तरह नहीं कह सकता*
लेकिन अगर वही है जिससे मेरा मतलब,
वहाँ तेज़-तर्रार सही है इसका उसका
फिर तुम उसपर जो चाहे इलज़ाम लगा दो
लेकिन ऐसा नहीं कि उसकी इज्ज़त में
बट्टा लग जाए, इतना तुम्हें बचाना होगा
हाँ दिल फेंक तबीयत तेज़ी या कुछ ऐसी
ही कमज़ोरी हो तो कोई फिक्र नहीं है
जो कि जवानी आज़ादी में घर कर लेती।

रेनाल्डो — जैसे उसकी लत शिकार की।

पोलोनियस — या पीने की हुड़दंग मचाने की लड़ने की
या तलवार रियाज़ी की कोठेबाज़ी की
तुम इस हद तक जा सकते हो।

रेनाल्डो — श्रीमन् इससे तो इज्ज़त पर दाग लगेगा।

पोलोनियस — नहीं कसम से सिर्फ ज़ोर मत इसपर देना।
लेकिन देखो यह तोहमत उसपर मत मढ़ना—
खुलकर ऐयाशी करता है मेरा मतलब
गलत न समझो उसकी खामी को इस खूबी—
से दिखलाओ सुननेवाले समझें बस वह
ज़्यादा आज़ादी पाने से बहक गया है
या दिमाग की गर्मी से वह भभक उठा है
या कि खून की तेज़ी से वह बेकाबू है।
नौजवान अक्सर शिकार इनके होते हैं।

रेनाल्डो — लेकिन श्रीमन्—

पोलोनियस — तुम पूछोगे मैं यह सब कुछ करूँ किसलिए?

रेनाल्डो — निश्चय श्रीमन् मैं इसको जाना चाहूँगा।

पोलोनियस — मरियम साखी मेरी बातों का रुख समझो

और चाल यह खूब आजमाई मेरी है,
तुम मेरे बेटे मे यह-वह ऐब दिखाते—
छोटे-मोटे—जिसे खराबी कोई खास
नही कह सकते, ध्यान रहे यह,
अब तुम जिससे बाते करते, जिसे भाँपते,
अगर कभी उसने देखा है उस जवान को
उसी जुर्म मे जिसका मुजरिम तुमने उसको
ठहराया है, तो यकीन तुम इसका रक्खो,
वह तुमसे कुछ इसी ढग से बात करेगा,
'जी' ! 'मैं भी ऑखे रखता हूँ,' 'हाथ मिलाएँ'—
मुल्क-मुल्क मे बाते करने के लोगो के
अलग-अलग लब-लहजे होते ।

रेनाल्डो
बहुत ठीक है ।

पोलोनियस . और फिर, जनाब, वह यह करेगा, क्या करेगा, मैं क्या कह रहा था ? कसमिया, मैं कुछ कहने जा रहा था, मैने अभी-अभी क्या कहा था ?

रेनाल्डो . कि 'वह कुछ इसी ढग से बात करेगा', 'मैं भी आँखे रखता हूँ', 'हाथ मिलाएँ'—

पोलोनियस : याद आ गया, 'इसी ढग से बात करेगा',
वह तुमसे कुछ इसी ढग से, 'मैं हजरत को
खूब जानता, कल या परसो ही देखा था,
फलॉ-फलॉ थे सँग, जैसा तुमने बतलाया,
डटे जुए में थे', या 'पीकर झगड रहे थे',
'खेल रहे थे टेनिस', या यह भी कह सकता,
'मैंने उनको कोठे पर चढते देखा था,'
यानी चकले मे जाते, या इसी तरह कुछ ।
अब तुम देखो,
झूठा चारा दिया, फँसा ली मच्छी सच्चा,
इसी तरह से दाना-दूरदेश लोग हम

दुनिया को चक्कर चकमा दे पूरब जाते
औ पश्चिम की कौडी लाते ! मेरे कहने
पर चलने से तुम भी ऐसा कर सकते हो।
समझे बेटा ?

रेनाल्डो — श्रीमन् बिल्कुल समझ गया हूँ।

पोलोनियस — ईश्वर करे तुम्हारी रक्षा। तुम्हें अनविदा।

रेनाल्डो — श्रीमन आभारी हूँ जसी भी आज्ञा द।

पोलोनियस — तुम खुद भी देखना कि उसके रग-ढग क्या।

रेनाल्डो — श्रीमन इसको मैं देखूगा !

पोलोनियस — लेकिन उसका अपनी रौ मे बहने देना।

रेनाल्डो — अच्छा, श्रीमन !

पोलोनियस — विदा !

(रेनाल्डो बाहर जाता है।)

(ओफीलिया अन्दर आती है।)

अरे, तुम हो ओफीलिया ! अच्छी तो हो ?

ओफीलिया — ओ श्रीमन इस समय बहुत ही डरी हुई हूँ !

पोलोनियस — क्या, किससे सच सच बतलाओ ?

ओफीलिया — श्रीमन, सुई सिलाई करती अपने कमरे
म बठी था सहसा हैमलेट आकर आगे
खडे हो गए—तन पर कपडे ढीले-ढाल
और नदारद सिर से टोपी औ पावो मे
मोजे मल बे फीते के नीचे लटके
उनकी ही पीली कमीज सा पीला चेहरा,
पर लडखडाते, आखो मे दद भरा सा
जसे कोई रूह नरक से छूट खडी हो
विपद वहाँ की बतलाने को।

पोलोनियस — इस पागलपन
का कारण क्या प्रेम तुम्हारा ?

ओफीलिया — श्रीमन मैं कुछ

नही जानती, पर मुझको इसका अंदेशा।

पोलोनियस . उसने तुमसे कहा नही कुछ ?

ओफीलिया . नही, कलाई
मेरी पकडी और दवा दी, हटे कदम भर,
और दूसरा हाथ भौह पर यो रखकर के
मुझे घूरकर ऐसे देखा जैसे मेरी
शक्ल खीचना चाह रहे हो। वडी देर तक
खडे रहे यो, और हाथ फिर मेरा झटका,
तीन वार ऊपर से नीचे मुझको देखा
और आह खीची जो इतनी दर्द-भरी.
इतनी गहरी थी, लगा कि उससे उनकी छाती
फट जाएगी, जैसे वह आखिरी सांस हो।
तव फिर मेरा हाथ छोडकर, शीश घुमाकर
कधे पर से मुझे देखते दरवाजे से
निकल गए वे, अत समय तक उनकी आँखे
मेरे ऊपर गडी हुई थी।

पोलोनियस . आओ, इसपर मैं राजा से वात करूँगा,
इस वहशत की वजह मुहव्वत मुझको लगती,
जिसे गर्ज़ यह लगा उसे खा ही जाता है,
वह कुछ भी करने को आमादा हो सकता,
दुनिया की कोई वीमारी इससे ज्यादा
वुरी नही है, मुझको इसपर वडा रज है।
इधर उसे कुछ कडी वात क्या तुमने कह दी ?

ओफीलिया . नही, एक भी; मगर आपके ही कहने पर
मैंने उनको मना किया था, मुझको कोई
पत्र न भेजे, और न मुझसे मिलने आएँ।

पोलोनियस . इसी वात ने उसको पागल वना दिया है।
मुझे रज है, अपनी ही गफलत-गलती से
मैंने उसको ठीक न समझा। मुझको डर था

खेल न तुमसे वह करता हो और तुम्हें
बर्बाद न कर दे। लानत है ऐसा शुबहे पर।
मगर जरा नौजवान नासमझी करते
उसी तरह से हम बूढ़े भी सूझ समझ
बालाए ताक रख रायजनी करते फिरते हैं।
आओ राजा से हम सारी बात बताएँ
सुनकर मुमकिन है हमसे नाखुश हो जाए
चुप रहने से आ सकती हैं और बलाएँ।
आओ।

(दोनों बाहर जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

(तुरही बजती है रोजेनक्रान्ज, गिल्डेन्सटन तथा अन्य लोगों के साथ रानी-राजा आते हैं।)

राजा प्यारे रोजेनक्रान्ज और प्रिय गिल्डेन्सटन
तुम्हारा स्वागत ! बड़ी हमारी इच्छा थी
तुमसे मिलने की साथ काम भी एक मुझे
तुमसे लेना है जल्द बुलाना पड़ा इसी से।
हैमलेट की जो कायापलट हुई है उसका
पता तुम्हें है मैं तो इसका यही कहूँगा।
तन से मन से भी पहले सा नहीं रहा वह।
मैं तो समझ नहीं पाता हूँ पिता के मरण
में भी क्या दुखदायी घटना घटी कि अपनी
सारी सुध बुध वह खो बैठा। तुम दोनों ही
एक अवस्था के स्वभाव के, बचपन से ही
एक साथ खेले खाए हो बड़े हुए हो
तुम दोनों से एक प्रार्थना—थोड़े दिन के
लिए हमारे पास रहो तुम। साथ तुम्हारा

पाकर उसका मन बहलेगा। अवसर पाकर
तुम समझोगे, क्या है, उसको साल रहा है,
जिसका हमको पता नही है। जान सके तो
उसे दूर करने की हम कुछ जुगत करेगे।

रानी　　भद्र सज्जनो, उसने अक्सर तुम दोनो की
बाते की है। मुझको है विश्वास कि दुनिया
मे दो ऐसे और नही है जिनसे उसकी
अधिक पट सके। बडा कृपा होगी यदि कुछ दिन
पास हमारे ठहर सको तुम! हम तुमसे जो
आशा रखते है यदि तुमने पूरी कर दी,
याद इसे राजा रक्खेगे और बडा एहसान
तुम्हारा मानेगे हम।

रोजेन्क्राट्ज : आप महारानी है, आप महाराजा है,
हम सेवक है, हम पर है अधिकार आपका,
हुक्म करे, हम बजा न लाएँ तो जो चाहे
दड हमे दे। आप नही प्रार्थना करेगे।

गिल्डेन्सटर्न · हम दोनो आज्ञाकारी है, तन से, मन से
हम अपने को, अपनी सारी सेवाओ को
श्री चरणो मे अर्पित करते, हुक्म हमे दे!

राजा . तुम दोनो को धन्यवाद है!

रानी . धन्यवाद है
तुम दोनो को! यही प्रार्थना—फौरन जाओ
और मिलो मेरे बेटे से, जो अब कितना
बदल गया है!—तुम मे से दो-एक साथ जा
इनको हैमलेट तक पहुँचा दे।

गिल्डेन्सटर्न . ईश्वर करे
हमारे कारण और हमारी सेवाओ से
वह प्रसन्न हो और लाभ कुछ उसको पहुँचे।
(राजा-रानी को छोडकर सब चले जाते है।)

रानी — एसा ही हो ।

(पोलानियस का प्रवेश)

पोलोनियस — महाराज जो राजदूत नारव गए थे
व खुश खश वापस आए हैं।

राजा — पोलानियस तुम सदा खबर अच्छी लाते हो।

पोलोनियस — इस मानत तो है श्रीमन् ? मेरे स्वामी
मैं विश्वास दिलाता हू तन, मन, वाणी स
मैं अपन ईश्वर करुणामय राजश्वर को
सदा समर्पित ! सुनिए श्रीमन् इस दिमाग म
राजनीति का दाँव भाँपन की यदि पहल
सी ताकत है तो हैमलेट के पागलपन का
कारण मैंने जान लिया है।

राजा — तो बतलाओ,
मैं सुनने के लिए विकल हूँ।

पोलोनियस — क्यों न राज
दूतो की बातें पहल सुन ल और बाद को
मेरी जस भोजन कर चुकन पर मीठा।

राजा — तुम्ही उन्ह आदर के साथ बुलाकर लाओ।

(पोलानियस बाहर जाता है।)

प्यारी तुमने सुना अभी जो वह कहता था ?
हैमलट के पागलपन का सब कारण उसने
समझ लिया है।

रानी — इसे छोडकर क्या हो सकता—
मृत्यु पिता की और हमारा इतनी जल्दी
शादी करना।

राजा — खर सुनेंगे वह क्या कहता।
(पोलानियस वाल्टिमाड, कार्नीलियस आते है।)
प्यारे मित्रो स्वागत करता तुम दोनो का।
बधु नारवे का तुम क्या सन्देशा लाए ?

वोल्टिमांड . स्नेहपूर्ण अभिवादन, मगलमय बधाइयाँ !
खत पढते ही वृद्ध नारवे ने अपनी सेनाएँ
भेजी, दुष्ट भतीजे की फ़ौजों को
जाकर रोकें; उनका तो ऐसा खयाल था—
यह तैयारी पोलक लोगो के विरुद्ध है,
मगर गौर करते ही उनको पता चल गया,
महामहिम के ही विरुद्ध यह तैयारी थी।
उन्हे बडा अफसोस हुआ, उनकी बीमारी,
लाचारी, वृद्धावस्था का लाभ उठाकर
उसने यह धोखेबाज़ी की। हाकिम भेजे
गए, पकडकर उसको लाएँ। किस्सा-कोता,
वृद्ध चचा के आगे हाजिर किया गया वह,
खूब उन्होने उसको डाँटा, और अत में
उसने वादा किया कि अब से महामहिम से
वैर ठानने की वह बात नही सोचेगा।
वृद्ध नारवे इससे बहुत प्रसन्न हुए औ'
तीन हजार स्वर्ण-मुद्राएँ सालाना उसको
बँधवा दी, आज्ञा दे दी, जो सेना
तैयार हुई है, पोलक लोगो के विरुद्ध वह
भेजी जाए। और प्रार्थना की, जो इसमे (पत्र देता है।)
भी अकित है, बडी कृपा होगी यदि इस
आक्रमण के लिए आप हमारी सेनाओ को
डेन राज्य में होकर जाने से मत रोकें।
अपनी रक्षा के हित जो-जो शर्तें रखकर
ऐसी अनुमति दे सकते है, इसमें दी हैं।

राजा मैं राजी हूँ। फुरसत से हम इसे पढेंगे,
उत्तर देंगे, इस मसले पर गौर करेंगे।
धन्यवाद है, तुमने बढिया काम किया है।
अब जाकर आराम करो तुम, रात हमारे

साथ तुम्हें भोजन करना है, बड़ी खुशी है
तुम घर लौटे।

(वोल्टिमान्ड और कारनीलियस बाहर जाते हैं।)

पोलोनियस
खूबी से यह काम हो गया।
मेरे मालिक और मालकिन, कोई कैसे
बना सकेगा मलकाना क्या सेवकाई क्या—
दिन बस दिन है रात रात है वक्त वक्त है—
बतलाने की कोशिश करना वक्त रात दिन
जाया करना। बुद्धिमान सूत्रों में कहते
मूल बहुत-सा ताना-बाना फैलाते हैं।
बीज रूप में मुझको कहना है कि आपके
साहबज़ादे पागल हैं बस पागल उनको
मैं कहता हूँ क्योंकि पागलपन की परिभाषा
पूरी देना क्या है इसके सिवा कि शख्स
पागल बन जाना। लेकिन इसको भूल जाइए।

रानी
बात बताएँ ताना-बाना कम फैलाएँ।

पोलोनियस
देवि, कहाँ मैं ताना-बाना फैलाता हूँ।
सच कहता हूँ वे पागल हैं बड़ा दुख है
कि यह सत्य है कि यह सत्य है बड़ा दुख है।
बात ज़रा कुछ उलझी-सी यह मग सकती है
जाने भी दें क्या ताना-बाना फैलाऊँ!
तब हम यह माने लेते हैं वे पागल हैं।
अब रह जाता है कारण का पता लगाना
जिससे उनको दशा हुई यह या यों कहिए
जो उनको दुर्दशा हुई उसके कारण का
नहीं अकारण होता है दुर्दशा यह।
तो अब बात पहुँचती है कारण पर आकर
कारण क्या है सुनिए सुनिए
मेरे एक सुता है—मेरी है जब तक

नही पराई हो जाती है—आज्ञाकारी
है, सुशील है, तभी न उसने ला यह चिट्ठी
मेरे हाथो मे रख दी है , इसको सुनिए
और समझिए,
(पढता है।)
'मेरे मन-मदिर की देवी सुभग सुदरी
ओफीलिया को'—
ये गदे शब्द है, भद्दे शब्द है, 'सुभग सुदरी' बड़े
गदे शब्द है। लेकिन मुझे सुनाना ही पडेगा।
'तेरे सँगमरमरी समुज्ज्वल वक्षस्थल मे·· आदि-आदि'

रानी हैमलेट ने उसे लिखा था ?

पोलोनियस · भली मालकिन, जरा ठहरिए , नही छिपाऊँगा
मै कुछ भी।
(फिर पढता है।)
'कर सदेह कि नभ-तारो में चमक नही है,
कर सदेह कि सूरज चलता नही गगन मे,
कर सदेह कि सत्य बोलता सत्य नही है,
लेकिन प्यार तुझे करता मै,
इसपर कर सदेह कभी मत अपने मन में।
ओ प्यारी ओफीलिया, मैं तुकबदी मे कच्चा हूँ , मुझे
अपने उच्छ्वासो को गिनने की कला नही आती ; लेकिन
सबसे अधिक मैं तुझे प्यार करता हूँ—सबसे अधिक से
भी अधिक, विश्वास कर, विदा !
परम प्रियतमे, सदा-सर्वदा तेरा,
तन मे जब तक प्राण-बसेरा,
हैमलेट !'
मेरी आज्ञाकारी पुत्री ने यह मुझको
दिखलाया है, और नही केवल इतना ही,
कब-कब, कैसे-कैसे, किस-किस जगह उन्होने

प्रणय निवेदन किया—सभी कुछ उसने मुझको
बतलाया है।

राजा — पर हैमलेट के प्रति ओफीलिया का
रुख क्या है ?

पोलोनियस — आप समझते क्या खादिम को ?

राजा — वफादार, ईमानदार इनसान आप हैं।

पोलोनियस — ऐसा ही अपने को साबित कर सकता हूँ।
लेकिन तब क्या आप सोचते, जब मैं इस
प्रेम ज्वाल को आसमान में उठते देखा—
और आप से सच कहता मेरी भोला ने
बेटी के बतलाने के पहले ही इसको
ताड़ लिया था—आप सोचते क्या रानी जी
क्या न सोचती अगर उस समय पीठ फेरकर
अनजाना सा बन जाता मैं चोट छिपाए
रखता छाती में होठों पर ताला देकर
या कि प्रणय लीला यह देखा करता पथ चलते
राही सा आप सोचते क्या ? पर मैंने
कुछ भी ऐसा नहीं किया है।
सीधे जाकर मैंने अपना फर्ज बजाया
मैंने अपनी भोला बेटी को समझाया
हैमलेट राजा के बेटे हैं क्या बराबरी
उनकी-तेरी ! गलत बात है। और सीख दी
उसको मैंने, वह हैमलेट से रहे दूर ही
अगर किसी को वे भेजें तो मिले न उससे,
और करे स्वीकार न उनकी भेजी चीजें।
बेटी मानी सीख हुई बेकार न मेरी।
और हैमलट, मैं थोड़े में बतलाता हूँ
विफल हुए तो रहने लगे उदास बराबर,
खाना-पीना छूट गया फिर

नीद हुई आँखो से गायब,
फिर कमजोरी ने आ घेरा,
रहने लगा दिमाग बाद को भारी-भारी,
औ' अब गिरते-गिरते हालत आ पहुँची है,
वे पागल की भाँति भूँकते, बर्राते है,
जिसका हम सबको सदमा है।

राजा ख्याल तुम्हारा क्या है इसपर ?

रानी : यह भी सभव हो सकता है।

पोलोनियस : ऐसा भी क्या कभी हुआ है—
अगर हुआ है, उसे जानना मैं चाहूँगा—
जब दावे के साथ कहा है मैंने,
'साहब, यह ऐसा है,'
और हुआ है साबित मेरा दावा झूठा ?

राजा कभी हुआ हो, ऐसा मुझको याद नही है।

पोलोनियस · बात दूसरी गर निकले तो सिर से धड को जुदा करा दे,
सच्चाई हो छिपी कही पर—छिपी सात परतो के अदर—
उसे ढूँढकर मै लाऊँगा ,
शर्त एक, हालात साथ दे।

राजा : और जाँच कैसे की जाए ?

पोलोनियस : देखा होगा, इस बरामदे मे घंटो वे
कभी-कभी घूमा करते है।

रानी : हाँ, मैंने ऐसा देखा है।

पोलोनियस : तब मै अपनी बेटी को आगे कर दूँगा,
हम दोनो परदे के पीछे छिपे रहेगे ;
मुलाकात पर गौर कीजिए ,
अगर मुहब्बत हैमलेट उसपर करे न जाहिर,
अगर पागलो की-सी बातें करे न उससे,
राजकाज के काबिल मुझको आप न समझें,
मैं जाकर गाडी हाँकूँगा, हल जोतूँगा।

राजा		हम ऐसे ही जाँच करेंगे।

रानी		लेकिन देखा तो वह बेचारा कोई किताब पढता इधर ही आ रहा है। कितना उदास है !

पोलोनियस		अब आप जाएँ मेरी मानें, आप दोनो चले जाएँ मैं अभी इनसे बात करता हूँ।

(राजा रानी और नौकर चाकर चले जाते हैं।)

(किताब पढ़ते हुए हैमलेट का प्रवेश)

क्षमा करेंगे श्रीमत हैमलेट

आप अच्छे तो हैं ?

हैमलेट		अच्छा ही हूँ, ईश्वर की कृपा है।

पोलोनियस		श्रीमत मुझे पहचानते तो होंगे ?

हैमलेट		खूब अच्छी तरह आप हैं मछलीफांस।

पोलोनियस		मैं श्रीमत ? नही नही।

हैमलेट		तब तो मैं कहूँगा, आप बडे भोले है।

पोलोनियस		भोला श्रीमत ?

हैमलेट		जी हाँ, आज की चालाक दुनिया म हजारो मे कोई एक मिलेगा जिसे भोला कहा जा सके।

पोलोनियस		आप बिल्कुल ठीक कहते हैं श्रीमत।

हैमलेट		सूरज की किरणें किसी मरे कुत्ते पर भी पडें तो उसमे कृमि कीटो का आधान कर देती हैं और उसकी किरणें सजीव मास के लोथडो को भी चूमती हैं—आपके कोई लडकी है ?

पोलोनियस		है श्रीमत।

हैमलेट		तो धूप म उसे न घूमने दें, सूरज की किरणों को उसे न चूमने दें। आधान तो समाधान है। पर उसने आपकी लडकी मे गर आधान कर दिया तो बडा व्यवधान होगा — दोस्त होशियार रहें।

पोलोनियस		(स्वगत) क्या कहूँ इसपर ? अब भी मेरी लडकी की ही रट लगाए जा रहा है फिर भी पहले उसने मुझे नही पहचाना था पहले उसने मुझे मछलीफांस कहा था। गहरे

मे है इस वक्त। अरे, मैं भी तो अपनी जवानी के दिनो मे मुहब्वत की इन्ही मुसीवतो का शिकार हो चुका हूँ ; और मेरी हालत भी बस ऐसी ही थी। मैं इससे जरा फिर वात करूँ।—श्रीमत, क्या पढ रहे है ?

हैमलेट शब्द, शब्द, शब्द।

पोलोनियस · श्रीमत, विषय क्या है ?

हैमलेट · विपय की वात विषयी जाने !

पोलोनियस श्रीमत, मेरा मतलव है कि जो पुस्तक आप पढ रहे है उसका विपय क्या है ?

हैमलेट · निंदा, जनाव, बूढो की निंदा, क्योकि यह वेहूदा मसखरा लिखता है कि वूढो की दाढियाँ सफेद हो जाती है, उनके चेहरो पर झुरियाँ पड जाती है, उनकी आँखे लीवड टपकाती हैं—गाढा, जैसे हकीम जी का काढा—उनकी अक्ल घास चरने चली जाती है और उनके घुटनो को मिरगी आती है।—इन सारी वातो को मैं पूरी-पक्की तरह मानता हूँ, पर मैं इस वदतमीजी पर नही उतर सकता कि इन्हे इन लफ्ज़ो से कलमवद करूँ, क्योकि आप खुद, जनाव, मेरी तरह जवान हो सकते है, अगर आप केकडो की तरह उल्टे चल सके—वक्त की ज़मीन पर।

पोलोनियस : (स्वगत) वात पगलपन मे कही गई है, पर विल्कुल वे-तुकी भी नही है।—श्रीमत, ज़रा आसमान से नीचे उतरिए।

हैमलेट : क्या अपनी कब्र मे ?

पोलोनियस . कब्र तो आसमान से नीचे, जमीन मे ही वन सकती है। (स्वगत) इसके जवाव कभी-कभी कितने वामानी होते है ! ऐसे खुशनुमा खयालो पर अक्सर पगलपन ही पहुँचता है। ठडे दिमाग और सही समझ-बूझ से आसानी से सूझनेवाली ये चीजें नही। अब मुझे यहाँ से चल देना चाहिए और फौरन कोई ऐसी तरकीव लगानी चाहिए कि मेरी वेटी से इसकी मुलाकात हो जाए।—महामना श्रीमत, मुझे अब विदा

दीजिए ।

हैमलेट — बडा खुशी स लीजिए, आप कुछ भी मांगत ता इसस ज्यादा खुशी से मैं आपको नही दे सकता था—सिवा अपनी जान के, सिवा अपनी जान के मिवा अपना जान क ।

पोलोनियस — श्रीमत की जय हो, मैं चला ।

(जाने लगता है ।)

हैमलेट — ये बकवासी बूढे बेवकूफ !

(रोज़ेन्क्राट्ज और गिल्डेंसटन का प्रवेश)

पोलोनियस — क्या कुमार हैमलेट से मिलना ? खडे सामने ।

रोज़ेन्क्राटज — (पोलानियस से) ईश्वर आपका भला करे !

(पोलानियस बाहर जाता है ।)

गिल्डेंसटन — मरे माननीय श्रीमत !

रोज़ेन्क्राटज — मरे परम प्रिय श्रीमत !

हैमलेट — मेरे बहुत अच्छे मित्रो ? कस हो गिल्डेंसटन ? तुम भी रोज़ेन्क्राटज ? भई खूब हो ! कसे हो तुम दोनो ?

रोज़ेन्क्राटज — जस दुनिया के लावारिस बच्चे !

गिल्डेंसटन — हम खुश है कि हम बहुत खुश नही है । हम भाग्य देवी की आँखों की पुतलियाँ नहीं हैं ।

हैमलेट — तो उसकी जूतियों की तलियाँ भी नही है।

रोज़ेन्क्राटज — श्रीमत न ठीक ही कह दिया ।

हैमलेट — मतलब यह है कि तुम उसके सिर और पाँव के बीच म हो यानी उसकी कमर से लिपटे हो ।

गिल्डेन्सटन — हम उसके खास जा हैं ।

हैमलेट — और इसी स उसके खास अगो म ? ओ बिल्कुल ठीक है भी तो भाग्य देवी मग देवी ! अच्छा बताओ खबर क्या है ?

रोज़ेन्क्राटज — कोई खास नहा सिवा इसके कि दुनिया अब ईमानदार हो गई है।

हैमलेट — तब तो कयामत का दिन नजदीक समझो लेकिन तुम्हारी खबर ठीक नहा है। मैं कुछ खास बातें पूछूं ? अच्छा मरे

अच्छे दोस्तो, यह तो बताओ कि तुमने भाग्यदेवी का ऐसा क्या बुरा किया है कि उन्होने तुम्हे इस जेलखाने मे डाल दिया है ?

गिल्डेन्सटर्न : जेलखाना, श्रीमत ?

हैमलेट . डेनमार्क जेलखाना ही तो है ।

रोजेन्क्राट्ज · तब तो यह दुनिया ही जेलखाना है ।

हैमलेट · अच्छा-खासा, जिसमे बहुत से घेरे है, कटघरे हैं, काल-कोठरियाँ हैं, डेनमार्क उनमे सबसे बुरी है ।

रोजेन्क्रांट्ज लेकिन, श्रीमत, हम ऐसा नही समझते ।

हैमलेट : तो हो सकता है तुम्हारे लिए वह ऐसा न हो । वास्तव मे न कुछ अच्छा है, न बुरा , जैसा सोच लो वैसा हो जाता है , मेरे लिए तो यह जेलखाना ही है ।

रोजेन्क्रांट्ज तो आपकी महत्त्वाकाक्षा ने उसे ऐसा बना रक्खा है । आपकी उमगो के लिए तो यह तग है ही ।

हैमलेट ओ भगवान, मैं एक बादाम मे बद होकर अपने को अनत आकाश का सम्राट् समझ सकता था, अगर मेरे दु स्वप्न मुझे न सताते ।

गिल्डेन्सटर्न और यही सपने तो आपकी महत्त्वाकाक्षा है । महत्त्वाकाक्षी का सत्य सपनो की छाया ही तो है ।

हैमलेट स्वप्न स्वय सिवा छाया के और क्या है ?

रोजेन्क्राट्ज सत्य ही, मैं महत्त्वाकाक्षा को इतना निस्तत्त्व और वायवी गुण समझता हूँ कि यह एक छाया की छाया-भर है ।

हैमलेट तब तो हमारे महत्त्वाकाक्षा-हीन भिखारी तत्त्वपूर्ण है, और हमारे सम्राट् और उच्चाभिलाषी नायक भिखारियो की छायाएँ । चलो, दरबार चले । मुझसे अब तर्क-वितर्क नही होता, सच ।

रोजेन्क्रांट्ज . हम आपके पीछे-पीछे चलेगे ।

हैमलेट इसकी आवश्यकता नही , मैं तुम्हारी गणना अपने नौकरो मे नही करता , तुमसे सच कहूँ तो मैं बड़े विकट रूप से

घिरा हुआ हूँ फिर भी तुमसे पुरानी दोस्ती के नाते पूछता हूँ कि तुम एलसिनार कैसे आए ?

रोज़ेन्क्रांट्ज़ आपसे मिलने श्रीमत । कोई और कारण नहीं ।

हैमलेट भिखारी तो मैं हूँ ही धन्यवाद देने मे भी असमर्थ हूँ फिर भी मैं तुम्हे धन्यवाद देता हूँ गो, प्यारे दोस्तो मेरे धन्यवाद कौड़ियों के मोल भी महगे है। देखो मुझसे झूठ मत बोलना तुम्हे बुलवाया गया ? या तुम अपने मन से आए ? बिना किसी काम के ? सच-सच कहो , बोलो, न ?

गिल्डेंसटन हम क्या कहें श्रीमत ?

हैमलेट कुछ भी पर बा मतलब । तुम्हे बुलवाया गया । तुम्हारी आँखें जो स्वीकार कर रही है उसपर कोई दूसरा रंग चढ़ाने की कला तुम्हारी शालीनता को नहीं आती । मुझे मालूम है कि नए राजा और रानी ने तुम्हे बुलवाया है ।

रोज़ेन्क्राट्ज़ किसलिए श्रीमत ?

हैमलेट यह तो तुम्हीं बता सकते हो । फिर भी मित्रता के अधिकार से बधुत्व के नाते स्नेह-सबध के नाम पर और इन सबसे कुछ अधिक मूल्यवान के निहोरे—जो मैं नहीं बता पा रहा हू—मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझसे सीधी सच्ची बात कहो तुम्हें बुलवाया गया था या नहीं ?

रोज़ेन्क्रांट्ज़ (अलग—गिल्डेंसटन से) क्या कहते हो ?

हैमलेट (स्वगत) मैं भी अधा नहीं हूँ।—मुझे प्यार करते हो तो छिपाओ मत ।

गिल्डेंसटन श्रीमत हमको बुलवाया गया था ।

हैमलेट मैं बतलाता हूँ क्या। मैं भेद खोलता हूँ जिसमे न तुम्हे मुह खोलना पड़े और न राजा रानी से की तुम्हारी गोपनीयता की शपथ टूटे । इधर कुछ दिनो से—पता नहीं क्यो—मेरी सारी हंसी-खुशी न जाने कहाँ गायब हो गई है सब खेल-कूद से बिल्कुल जी उचट गया है और मन इतना भारी भारी रहता है कि यह सुन्दर-सुदरा वसुधरा मुझे एक बंजर मरु-

स्थली-सी प्रतीत होती है, यह वायु का परम रम्य चँदोवा, जरा इसे देखो तो, यह सिर पर छत्र-सा छाया आकाश, यह सुवर्ण किरणो से खचित विराट् वितान, न जाने क्यो, मुझे एक दमघोट, गदे, घने कुहासे के सिवा और कुछ नही मालूम होता। मनुष्य भी सिरजनहार का कितना बडा चमत्कार है! बुद्धि मे अद्वितीय! शक्ति मे नि सीम! आकार-अगसचार मे कैसा साँचे में ढला-सा, कैसा भला-सा! आचार मे स्वर्गदूत! अवधान मे देवता! ससार का सौंदर्य! सब प्राणियो का सिरमौर! फिर भी, यह मेरे लिए, एक मुश्त गुबार के सिवा और क्या है? मुझे न आदमी को देखकर खुशी होती है, न औरत को, गो अपनी मुसकान से तुम ऐसा प्रकट करते हो कि मैं बन रहा हूँ।

रोजेन्क्रांट्ज : ऐसी कोई बात मेरे मन मे नही थी, श्रीमत।

हैमलेट : तब तुम हँसे क्यो, जब मैने कहा कि मुझे आदमी को देखकर खुशी नही होती?

रोजेन्क्रांट्ज : यह सोचकर, श्रीमत, कि अगर आदमी से मिलकर आपको खुशी नही होती तो उस नाटक-मडली को आपसे क्या स्वागत-सत्कार मिलेगा जिससे हम रास्ते मे मिले थे, और जो आपकी सेवा में आ रही है।

हैमलेट जो राजा की भूमिका अदा करेगा उसका स्वागत होगा, उन महामहिम का मै सत्कार करूँगा, साहसी सरदार जो ढाल-तलवार चलाएगा और प्रेमी जो आँसू बहाएगा पुरस्कार पाएगा, सनकी अपनी भूमिका अदाकर सतुष्ट होगा हँसोड़ उनको हँसाएगा जो आसानी से हँसते है और प्रेमिका दिल खोलकर बोलेगी, नही तो पाएगी कि छद उसे कसते है—यह कौन-सी नाटक-मडली है?

रोजेन्क्रांट्ज : अरे वही, जिसे आप पसन्द करते थे, नगर के अभिनेताओ की —त्रासदी-प्रदर्शक।

हैमलेट : पर वे दर-दर घूम क्यो रहे है? उनका एक जगह पर जमकर

जाता है कि बुढ़ापा दूसरा बचपन है ।

हैमलेट — मैं पहले से बता दूं वह अभिनेताओं के बारे में कहने आ रहा है देख लेना। (पोलोनियस को सुनाकर)—तुम ठीक कहते हो। सोमवार की सुबह को। बिल्कुल यही बात थी।

पोलोनियस — मैं आपके लिए एक खबर लाया हूँ श्रीमत।

हैमलेट — मैं आपके लिए एक खबर लाया हूँ श्रीमत ! रोसियस जिन दिनों रोम में अभिनय किया करता था—

पोलोनियस — श्रीमत अभिनेता लोग आ पहुंचे हैं।

हैमलेट — बस बस !

पोलोनियस — मेरा विश्वास कीजिए—

हैमलेट — —तब हरेक अभिनेता अपने अपने गधे पर चढ़कर आता था।

पोलोनियस — त्रासदी, कामदी, ऐतिहासिकी गोचारणी गोचारणी कामदी ऐतिहासिकी गोचारणी त्रासदी ऐतिहासिकी त्रासदी-कामदी ऐतिहासिकी गोचारणी के लिए या किसी ऐसे दृश्य के लिए जो इनमें से किसी में न आता हो या ऐसी कविता के लिए जो स्वच्छन्द हो ये दुनिया के सबसे अच्छे अभिनेता हैं। इनके लिए न सेनेका भारी है न प्लाटस हल्का। क़लमबंद और फिलबदी दोनों में यही लोग माहिर हैं।

हैमलेट — ओ यहूदियों के न्यायाधीश जेफ्था, क्या खजाना है तेरे पास !

पोलोनियस — उसके पास क्या खज़ाना था श्रीमत ?

हैमलेट — क्यों

एक सुंदरी कन्या और न कुछ
जिसको करता था वह प्यार बहुत।

पोलोनियस — (स्वगत) अब भी मेरी बेटी की ही रट !

हैमलेट — जरठ जेफ्था मैंने सही कहा है न ?

पोलोनियस — श्रीमत अगर आप मुझे जेफ्था कहते हैं तो मेरे एक लड़की है जिसे मैं बहुत प्यार करता हूँ।

हैमलेट — नहीं इसके बाद यह कहाँ आता है ?

पोलोनियस : तव क्या आता है, श्रीमंत ?

हैमलेट : यही न

'करम का लेखा, विधि का देखा'

और इसके वाद तो तुम जानते ही हो—

'वही घटी जो कुछ थी वदी'—

इस भक्ति-पद की पहली पक्ति तुम्हे कुछ और दृष्टि देगी, पर लो, ये मेरा वक्त और मेरी वात काटनेवाले आ गए।

(चार-पाँच अभिनेताओं का प्रवेश)

तुम्हारा स्वागत है, कलाकारो, तुम सवका स्वागत !— तुझे सकुशल देखकर मुझे खुशी है, स्वागत, अच्छे दोस्तो ! —ओ मेरे पुराने मीत ! क्यो, पिछली वार जव तुझे देखा था तव तो तेरी मसे न भीगी थी, देख, डेनमार्क मे कही भीगी विल्ली वनकर न रह जाना। और यह रही मेरी नित्य-नवेली स्नेह-सहेली ! सौगध स्वर्ग देवी की, देवी जी, जव आपको पिछली वार देखा था, तव से तो आप स्वर्ग के अधिक निकट पहुँच गई है—अपनी जूतियो की ऊँची एड़ियो के वल ! ईश्वर न करे कि आपकी आवाज फटी-फटी-सी लगे, जैसे किसी खोटे सिक्के की—कलावतो, तुम सवका स्वागत है ! वाज कुछ भी देखे, सीधे उसपर टूटता है। हम भी पीछे नही रहने के, हो जाए एक समाषण चटापट, चलो, अपनी कला का एक नमूना तो पेश करो ; हाँ, ज़रा जोशीला सभाषण हो।

पहला अभिनेता : कौन सभाषण, श्रीमत ?

हैमलेट : वही जो एक वार तूने मुझे सुनाया था, गो उसका अभिनय कभी नही किया गया था, या किया गया था तो शायद एकाध वार। वह खेल मुझे याद है, आम जनता को पसद नही आया था—'वदर क्या जाने अदरक का स्वाद'—लेकिन वह मेरी राय मे, और ऐसो की दृष्टि मे भी, जिनके निर्णय का इन मामलो मे मैं आदर करता हूँ, वढिया नाटक था—दृश्य सव संगठित और

अभिनय जितना स्वाभाविक उतना ही कलापूर्ण। मुझे याद है किसी ने कहा था कि पंक्तियों में वह नमक मिर्च तो नहीं है जो विषय को चटपटा कर दे पर पदों में कुछ ऐसा भी नहीं कि लेखक पर बनावटीपन का दोषारोपण किया जाए। साथ ही यह भी कहा था कि प्रयास में ईमानदारी है और जो चीज़ बन पड़ी है वह जितनी सुघर है उतनी ही मधुर और उसमें तड़क भड़क भले ही कम हो सुंदरता अधिक है। उसका एक संभाषण मुझे खास तौर से पसन्द आया था। ईनियस का डीडो के प्रति और उसमें भी विशेषकर वह स्थल जहाँ वह प्रायम के वध का वर्णन करता है। अगर तुम्हें याद हो तो इस पंक्ति से शुरू करो। देखो तो क्या है वह पंक्ति

'बाहुबल पिर्रहस हिरकन वन के चीते जैसा'
नहीं यह नहीं है　पिर्रहस से शुरू तो होती है।—
बाहुबल पिर्रहस ने—जिसकी काली बाँहें थीं
काली चाहे होड़ लगाती थीं रातों से
जब वह परम अमंगलकारी लकड़ी के घोड़े
के अन्दर घात लगाकर के बैठा था—
अब अपनी काया डरावनी-सी चमड़ी पर
और अशोभन रंग में रखी चढ़ा लिया है—
रंग लाल सिर से पाँवों तक पूरे तन पर—
रक्त पिताओं माताओं, बेटी-बेटों का
जिसमें उसने निर्ममता से स्नान किया था
जिसको धूप-भरी गलियों ने सुखा-सुखाकर
उसके तन पर परत-पर-परत जमा दिया है
जो चमकाता है जिन क्रूर-जघन्य करों से
उनके स्वामी नरेश का वध किया गया था
कालानल उत्तप्त रक्त का जमा लादियों
से पूरा जा भरा और अन्दर जाना
जहरवान के से पिंडा सा अंगनामा

महानारकी पिर्हुस खोज रहा प्रायम को
वयोवृद्ध जो।
—ऐसे ही आगे चलो—

पोलोनियस : श्रीमत ने इसे बडी खूबी से अदा किया—ठीक जगहो पर ज़ोर देकर, ठीक सफाई से।

पहला अभिनेता : औ' तुरत वह उन्हे देखता,
यवन-सैन्य पर शस्त्र चलाते, लक्ष्य न पाते;
खड्ग पुराना मुट्ठी की कस, वस के बाहर,
गिरा जिस जगह नही वहाँ से उठ पाता है,
जैसे उनकी आज्ञा के प्रति विद्रोही है।
अपने से कमज़ोर उन्हे पा पिर्हुस उनपर
खड्ग चलाता जो कि तैश के कारण गिरता
उनसे हटकर, लेकिन उसकी क्रूर भाँज की
जन्नाहट से विचलित वृद्ध पिता गिर पडते।
इसपर वह ईलियम, चेतना-हीन, घात-सा
अपने ऊपर अनुभव कर के अपने जलते
हुए कँगूरे लिये धराशायी हो जाता।
और वज्र-सी उसकी ध्वनि से हो जाता है
पिर्हुस बहरा। औ', देखो, उसका खाँडा जो
वयोवृद्ध प्रायम के सन-से श्वेत शीश पर
गिरने को था, रुका हवा मे रहा जाता है।
चित्रलिखित अत्याचारी-सा खडा रह गया
पिर्हुस अपनी सज्ञा खो, सकल्प-शून्य हो,
औ' क्षण-भर कुछ किया न उसने।
लेकिन जैसे अक्सर हम देखा करते है,
शात आसमाँ हो जाता आँधी से पहले,
बादल चलते नही, हवा नीरव हो जाती,
और मौत-का-सा सन्नाटा भू पर छाता;
तभी बवंडर एक भयंकर सहसा उठकर

चाह निनाद को देता है, उसी तरह से
पिरृस थोड़ी देर ठहरकर फिर भड़काकर
बदले की भावना कार्य-तत्पर होता है।
अमित प्रहारों का गढ़ने की क्षमतावाला
कवच धरा था जो मंगल का, उसके ऊपर
जिस निर्ममता से साइक्लोपों के हाथों
के घन की चोटें पड़ती थीं उससे भी ज्यादा
बेरहमी से पिरृस का
खूनी खाँडा प्रायम के ऊपर गिरता है।
अरी भाग्य भामिनि कुलटे, तेरा विनाश हो!
अरे स्वर्ग के देवो देव-सभा में बैठे
उसको सारे अधिकारों से वंचित कर दो
तोड़ कर, सब डालो उसके भाग्य चक्र के
जो लोहे का हाल चढ़ा जो उसके ऊपर
और फेंक दो धुरी स्वर्ग पवन से नीचे
गिरे नरक में!

पोलोनियस यह तो बहुत लंबा है।

हैमलेट कहिए तो इसे आपकी दाढ़ी के साथ नाई के यहाँ भेजवा दें। —भाई, तुम कहते जाओ इन्हें तो कोई गंदा गीत या फूहड़ किस्सा चाहिए, नहीं तो खर्राटे भरने लगते हैं आगे चलो, हेकूबा पर आओ।

पहला अभिनेता पर किसने ओ किसने देखा था घूँघटवाली रानी को?

हैमलेट 'घूँघटवाली रानी'?

पोलोनियस बहुत अच्छे 'घूँघटवाली रानी' खूब कही!

पहला अभिनेता जो आँसू की धार बहाती, बनी चुनौती
रण से उठती ज्वालाओं को नंगे पैरों
कभी इधर को कभी उधर को भाग रही थी,
राजमुकुट शोभित होता था जिस मस्तक पर
उसपर बस कपड़े का टुकड़ा एक बँधा था,

वसन राजमी कहाँ, एक कवल से उसने
अपनी ढीली, बहुप्रसविनी कोख ढकी थी,
हाथ आ गया था जो सहसा उन घबराहट
की घड़ियो मे। जिसने भी यह देखा होता
भाग्य-भामिनी के प्रति विद्रोही बन जाता,
औ' विरुद्ध, उसके, निश्चय ही जहर उगलता;
पर देवो ने खुद यदि उसको देखा होता,
जिस क्षण फाड कलेजा अपना वह चीखी थी,
देख क्रूर पिर्हुस को अपने क्रूर खड्ग से
उसके पति के अग-अग की बोटी-बोटी
काट फेकते,—जैसे उसके लिए खेल हो—
यदि मानव के दुख-सुख के प्रति उदासीन ही
नही देवगण बिल्कुल रहते, तो उनकी जलती
आँखे भी अश्रु गिराती, और स्वर्ग की
छाती भी उस दिन पसीजती।

पोलोनियस : देखो तो उसके चेहरे का रग उड गया है और उसकी आँखों मे आँसू आ गए है। भई, अब रहने दो।

हैमलेट : बहुत अच्छा, बाकी भी मैं तुमसे जल्द ही सुनूँगा।—श्रीमन्, अभिनेताओ के ठहरने का ठीक प्रबध करा दीजिए। सुनते है न, उनकी अच्छी आव-भगत की जाए, क्योकि ये ही समय के सार पदार्थ और सक्षिप्त इतिहास है; मरने के बाद समाधि-लेख बुरा हो तो इतना बुरा नही जितना जीवन-काल मे इनकी दृष्टि मे बुरा होना।

पोलोनियस : श्रीमन्, इनके साथ वही व्यवहार किया जाएगा जिसके ये अधिकारी है।

हैमलेट . भले आदमी, जिसके ये अधिकारी है उससे अच्छा व्यवहार। प्रत्येक व्यक्ति के साथ उसके योग्य व्यवहार, जैसे अधिकारी अभिनेता के साथ होना चाहिए। इनके प्रति आपका व्यवहार आपके मान और प्रतिष्ठा के अनुरूप हो। वे जितने ही कम

के अधिकारी होंगे उतना ही अधिक श्रेय आपकी उदारता को दिया जाएगा। इन्हें अंदर लिवा जाइए।

पोलोनियस — आइए, जनाब !

हैमलेट — दोस्तो, इनके साथ जाओ। हम तुम्हारा खेल कल देखेंगे। (पहले को छोड़कर शेष सब अभिनेता पोलोनियस के साथ अंदर चले जाते हैं।)—मेरे पुराने मीत सुनते हो, क्या तुम 'गंजागो का वध' नाटक खेल सकते हो ?

पहला अभिनेता — निश्चय, श्रीमन् !

हैमलेट — तो यह नाटक हम कल रात कराएँगे। जरूरत पड़े तो क्या तुम बारह चौदह पंक्तियों का एक संभाषण याद कर सकते हो जो मैं उस नाटक में अपनी तरफ से जोड़ देना चाहूँगा, कर लोगे न याद ?

पहला अभिनेता — निश्चय श्रीमन् !

हैमलेट — तो ठीक है। उस सरदार के साथ जाओ और देखो उसका मजाक मत उड़ाना।

(पहला अभिनेता चला जाता है।)

(रोजेन्क्रान्ज और गिल्डन्स्टर्न से) मेरे अच्छे दोस्तो, रात तक के लिए मुझे आज्ञा दो। एलसिनोर में तुम्हारा स्वागत है !

रोजेन्क्रान्ज — आपकी कृपा है श्रीमन् !

हैमलेट — ईश्वर साथ तुम्हारा दे !

(रोजेन्क्रान्ज और गिल्डन्स्टर्न जाते हैं।)

हैमलेट — —अब मैं एकाकी।

मैं भी कैसा बुद्धू हूँ, घामाधसत हूँ !
कितने अचरज की है बात कि यह अभिनेता
कल्पित एक कहानी के कल्पित भावों में
अपने प्राणों को उँडेल ऐसा देता है
ऐसे बह जाता, उसका मुँह पीला पड़ता
आँखें भरतीं, कंठ रुद्ध होता, उच्छ्वास हो
जाती मूरत भी उसके आवेगों के अनु

रूप सभी मुद्राएँ उसके तन की होती।
औ' यह सब कुछ किसके लिए किया करता वह ?
प्रायम की रानी के लिए ?

मगर वह रानी
उसकी क्या लगती, वह क्या लगता रानी का ?—
जो वह उसके कारण अपने अश्रु बहाए।
उसकी छाती मे अपने इन आवेगों का
अगर व्यक्तिगत कारण होता—जैसे मुझमे—
ओ ! क्या कुछ वह कर न गुज़रता। रगमच को
आँसू में मज्जित कर देता, दर्दभरी उसकी
वाणी से कान दर्शको के फट जाते,
अपराधी पागल हो जाता, निरपराध भय-
कंपित होते, भोले-भाले घबरा उठते,
और सुना-देखा जो जाता उसपर कानो-
आँखो को विश्वास न होता।
लेकिन मैं तो
जड़ माटी का बोदा लोदा, ऊँघा करता
जुम्मन अफीमची-सा अफसुरदा, पजमुरदा,
और नही कुछ भी कह पाता। नही, नही, उस
राजा के भी लिए कि जिसके राजपाट के,
प्रिय प्राणो के साथ घृणित विश्वासघात-छल
किया गया है। क्या मैं सचमुच ही कायर हूँ ?
कौन मुझे खल कहता ? मेरा माथा खाता ?
मेरी दाढी नोच फेकता मेरे मुँह पर ?
पकड-पकडकर नाक हिलाता ? और गले मे,
और फेफडो में भी गहरे बैठा-पैठा
मुझसे कहता, तू झूठा है।
उफ !
शपथ मुझे प्रभु ईसा के तन के घावो की,

यह सब सहना मुझे पड़ेगा क्यों न पड़ेगा
मुझे लवे का हृदय मिला है जिसके अन्दर
आग नहीं है सहे न जो अत्याचारों को,
वर्ना मुझे बहुत पहले ही इस नर पशु का
मांस खिला देना था कौओं का चीलों को।
हत्यारा, व्यभिचारी, पाजी !
कपटी, कुटिल, बेहया, कामी निर्दय, पापी !
तुझसे बदला लेना होगा !
लेकिन मैं तो फक्त गधा हूँ। क्या बहादुरी !—
मेरे पूज्य पिता का वध कर दिया गया है
स्वर्ग नरक बदला लेने को प्रेरित करते
मुझे, और उनका सपूत मैं कंजड जैसे
शब्दों से अपने दिल को हल्का करता हूँ
सिर्फ कोसता हूँ रंडी-सा
भड़भड़ी-सा !
लानत इसपर ! थू-थू ! मेरे मनुआँ, कुछ कर !
मैंने ऐसा सुन रक्खा है, अपराधी गण
किसी नाट्य में अगर दर्शकों में बैठे हों
और दृश्य कोई प्रभावकारी आ जाए,
तो उनका दिल हिल उठता है औ फौरन वे
अपने दुष्कर्मों को घोषित कर देते हैं।
हत्या के मुंह में तो होती जीभ नहीं है
किन्तु बड़े ही सूक्ष्म चमत्कारी स्वर से
से वह अपना सारा भेद बता देती है।
इन अभिनेताओं के द्वारा अपने चाचा
के आगे मैं पूज्य पिता की हत्या का-सा
कोई नाटक खेलवाऊंगा और गौर में
उसकी मुद्राएं देखूंगा। धावन धावन
उसे भांप लूंगा वह चौंका भर तो मुझको

नहीं समझते देर लगेगी, क्या करना है।
छाया जो मैंने देखी थी, किसी भूत की
भी हो सकती ; सुखद रूप धारण करने की
ताकत भूतों में होती है। औ' संभव है
मुझको पजमुरदा-सा, अफसुरदा-सा पाकर
(ऐसों के ही ऊपर तो उनका वश चलता)
नरक डालना चाह रहा है। मैं सबूत इससे
पक्का पाना चाहूँगा , औ' यह मुझको
रात खेलाया जानेवाला नाटक देगा,
उससे ही चाचा के मन का भेद खुलेगा।

(बाहर जाता है।)

तीसरा अंक

पहला दृश्य

गढ़ का एक राजकक्ष

(राजा, रानी, पालोनियस, ओफ़ीलिया, रोजेंक्रांट्ज और गिल्डेन्स्टर्न का प्रवेश)

राजा — तो क्या तुमने किसी तरह से पता न पाया,
क्यों उसने खब्तुलहवास-जैसा अपने को
बना लिया है, अपने मन की शांति मिला दी
है मिट्टी में, खौफ़नाक औ खतरनाक इस
पागलपन से ?

रोजेंक्रांट्ज — इतना तो स्वीकारा उसने, परेशान है,
किस कारण, यह किसी तरह से नहीं बताता।

गिल्डेन्स्टर्न — नहीं चाहता है कोई उससे कुछ पूछे।
अपनी सच्ची हालत वर्णन करने पर जब
हम उसको ले आते हैं तब चतुराई से
पागल-सा बन हमसे साफ़ मुकर जाता है।

रानी — तुमसे अच्छी तरह मिला था ?

रोजेंक्रांट्ज — सज्जनता से।

गिल्डेन्स्टर्न — पर यह मिलना जैसे ऊपर-ऊपर से था।

रोजेंक्रांट्ज — हमसे उसने कुछ न पूछा, हाँ हमने कुछ
पूछा तो उसने बतलाया बड़ी खुशी से।

रानी — उसका जी बहलाने की कोशिश की तुमने ?

रोजेन्क्रांट्ज : देवि, राह मे हमें मिले थे कुछ अभिनेता
जब हम एलसिनोर आते थे। उनकी चर्चा
जब हमने की तब वह सुनकर बहुत खुश हुआ।
यहीं-कही वे टिके हुए है, और जहाँ तक
मुझे ज्ञात, आदेश उन्हे यह दिया गया है,
आज रात को नाटक खेले उसके आगे।

पोलोनियस : ऐसा ही है; और उन्होने मेरे द्वारा
आप महामहिमो से की है विनती, आएँ
आप कृपा कर, नाटक देखें।

राजा : बहुत खुशी से। बड़ी तसल्ली मुझको, उसका
जो रुझान इस तरफ हुआ है। सुनो, सज्जनो,
उसे और भी प्रोत्साहन दो। इस प्रकार के
मनोरजनो मे उसका मन और लगाओ।

रोजेन्क्रांट्ज : जैसी आज्ञा महाराज की !

(रोजेन्क्राट्ज और गिल्डेन्सटर्न बाहर जाते हैं।)

राजा : प्रिय गरट्रूड, चली जाओ तुम : किसी बहाने
से हैमलेट को हमने यहाँ बुला भेजा है,
जिससे उसका ओफीलिया से अकस्मात् हो
जाय सामना।
उसके पिता और हम, दोनो,—जिनको अपने
बच्चो पर नजरें रखने का हक हासिल है—
ऐसे छिपकर के बैठेगे, देखेंगे हम
उनको, वे न हमे देखेगे, और इस तरह
उनके मिलने पर हम अपना निर्णय लेगे,
देख-समझकर उसके सारे व्यवहारो को
राय बनाएँगे कि प्रेम की पीडा है यह,
या कि और कुछ जिसके कारण परेशान वह।

रानी : जैसी आज्ञा—
और तुम्हारा, ओफ़ीलिया, सबध जहाँ तक

यही मनाती हूँ कि तुम्हारी सुदरता ही
प्रिय हैमलेट के पागलपन का कारण निकले
और यही आशा करती हूँ, भद्र तुम्हारी
गुणावली ही उसे ठीक पथ पर लाएगी—
पथ जो तुम दोना के लिए प्रतिष्ठा का है ।

ओफीलिया　　देवि कामना मेरी भी यह ।

(रानी चली जाती है ।)

पोलोनियस　　ओफीलिया तुम रहो घूमती इसी जगह पर ।—
महराज यदि आना हो तो यहाँ रहे हम ।—
इस किताब को पढ्ती रहना इससे समझा
जाएगा तुम एकाकी हो और इसी से
वक्त काटने को तुम पुस्तक देख रही हो ।—
इसम अवसर दोष हमारा—सिद्ध हजारो
बार हो चुका—दानव के मुख पर भी चदन
तिलक लगा उसके दिखावटी सत्कर्मों का
ढोल बजा हम उसे देवता के बाने मे
प्रस्तुत करते ।

राजा　　(स्वगत)　　आ, इसम कितनी सच्चाई !
यह भाषण मेरे विवक पर कसा चाबुक
सा पडता है ।
रग और रोगन से सजा सवारा चेहरा
रडी का जसे उसके असली चेहरे से
भद्दा लगता वसे ही मरी करतूतें
मेरे रँगे हुए शब्दो से भद्दी लगतीं ।
मेरे मन पर बडा भार है !

पोलोनियस　　उसके पाँवो
की आहट है । श्रीमन् हम पीछे हट जाएँ ।

(राजा और पोलोनियस चले जाते हैं ।)

(हैमलेट का प्रवेश)

हैमलेट :

अब जीना है या मरना है, तय करना है !
शाबाशी किसमें है, किस्मत के तीरो के
आघातो को भीतर-भीतर सहते जाना,
या सकट के तूफानो से लोहा लेना
औ' विरोध करके समाप्त उनको कर देना,
औ' समाप्त खुद भी हो जाना ?—
मर जाना,—सो जाना,—औ' फिर कभी न जगना !
औ' सोकर मानो यह कहना, सब-सिर-दर्दों,
और सैकड़ो मुसीबतो से, जो मानव-के
सिर पर टूटा करती, हमने छुट्टी पा ली ।
इस प्रकार का शात समापन कौन नही दिल
से चाहेगा ? मर जाना—सोना—सो जाना !
लेकिन शायद स्वप्न देखना ! अरे, यही पर
तो काँटा है। जब हम इस माटी के चोले
को तज देगे, मृत्यु-गोद मे जब सोएँगे,
तब क्या-क्या सपने देखेंगे ! अरे, वही तो
हमे रोकते। इनके ही भय से तो दुनिया
इतने लबे जीवन का सत्रास झेलती,
वर्ना सहता कौन समय के कर्कश कोडे,
जुल्म जालिमो का, घमड घन-घमडियों का,
पीर प्यार के तिरस्कार की, टालमटोली
कचहरियो की, गुस्ताखी कुर्सीशाही की,
और घुड़कियाँ, जो नालायक लायक लोगो
को देते है, जब कि एक नगी कटार से
वह सब झगडो से छुटकारा पा सकता था ।
कौन भार ढोता, जीवन का जुआ खीचता,
करता अपना खून-पसीना एक रात-दिन,
किसी तरह का अगर न मरने पर डर होता ।
वह अनजाना देश, जहाँ से कभी लौटकर

कोई पथिक नहीं आता है, मन भरमाता
वहाँ पहुँचने पर जाने क्या पड़े भोगना,
इस भय से हम दुःख यहाँ के सहते जाते।
यह शंका हम लोगों को डरपोक बनाता,
और हमारे निश्चय की स्वाभाविक दृढ़ता
में इन कच्चे ख्यालों से ढुलमुलपन आता,
और योजनाएँ, महत्त्व की धाराओं सी
पहुँच न सागर को मरुथल में खो जाती हैं,
कार्यरूप में कभी नहीं परिणत हो पातीं।—
धीमे बालू ! यह क्या सुंदर ओफीलिया है ?
देवि, प्रार्थना में मेरे भी अपराधों की
क्षमा माँगना भूल न जाना।

ओफीलिया — कहिए श्रीमन्
बहुत दिनों के बाद मिले हैं, अच्छे तो हैं ?

हैमलेट — पूछा तुमने, आभारी हूँ, अच्छा ही हूँ।

ओफीलिया — श्रीमन् मेरे पास आपकी ही चीजें हैं
जिनको अरसे से लौटाना चाह रही थी,
सुनें प्रार्थना मेरी, उनको अब वापस लें।

हैमलेट — नहीं न मैंने तुम्हें कभी कुछ नहीं दिया है।

ओफीलिया — माननीय श्रीमन, आप हैं खूब जानते
मुझे आपने दी थी चीजें, साथ पंक्तियाँ
रचकर सुमधुर जिनसे उनका मूल्य बढ़ा था,
पर अब वापस लें, उनमें माधुर्य नहीं है,
जब देनेवाला निर्मोही बन बैठे तो,
कितनी ही बहुमूल्य भेंट हो मिट्टी ही है।
यह लें श्रीमन्।

हैमलेट — ह ह ! क्या तुम सच्ची हो ?

ओफीलिया — श्रीमन !

हैमलेट — क्या तुम सुंदर हो ?

ओफीलिया : श्रीमन्, आपका मतलब क्या है ?

हैमलेट : यही कि अगर तुम सच्ची और सुदर हो तो तुम्हारी सच्चाई और सुदरता मे कोई सबध नही होना चाहिए ।

ओफीलिया : श्रीमन्, सुदरता का सबसे अच्छा सबध तो सच्चाई से ही हो सकता है ।

हैमलेट : यह ठीक है, लेकिन इसके पहले कि सच्चाई की ताकत सुदरता को अपने अनुरूप बना ले, सुदरता की शक्ति सच्चाई को हरजाई बना देती है । पहले कभी यह विरोधाभास समझा जाता था, लेकिन समय ने अब इसको सत्य सिद्ध कर दिया है । मैं किसी समय तुमको प्यार करता था ।

ओफीलिया : निश्चय ही, श्रीमत, आपने मुझे इसका विश्वास दिलाया था ।

हैमलेट : तुम्हे मेरा विश्वास नही करना था । क्योकि कोई नया गुण किसी पुराने अवगुण पर इस प्रकार चस्पा नही किया जा सकता कि उसे पूरी तरह ढक ले । मै तुम्हे प्यार नही करता था ।

ओफीलिया : तब तो मैंने और बडा धोखा खाया ।

हैमलेट : तुम तो किसी मठ मे जाओ ! गुनहगारो को क्यो जन्म दोगी ? मैं भी कहने-भर को सच्चा हूँ , लेकिन ऐसे गुनाहो का मैं भी शिकार हूँ , क्या ही अच्छा होता कि मेरी माँ ने मुझे जन्म न दिया होता । मैं घमडी हूँ, बदलाभिलाषी हूँ, महत्त्वाकाक्षी हूँ । जिन्हे कल्पनाएँ भी निरूपित न कर सकें, विचार भी अपने मे न बाँध सकें, और कितना भी समय, जिन्हे कार्यरूप में परिणत न कर सके, उनसे भी ज्यादा गुनाहो का मैं अंबार हूँ । आसमान और ज़मीन के बीच मे रेंगनेवाले हमारे-जैसे लोग करे भी तो क्या ! हम गजब के बुद्धू है—सब के सब, हममे से किसी का विश्वास मत करो । तुम बस किसी मठ की ओर सिधारो । तुम्हारे पिता कहाँ है ?

ओफीलिया : घर पर है, श्रीमत !

हैमलेट : उन्हे कमरे मे बद कर के रक्खो, जिससे उनकी मूर्खता उनके

घर तक ही सीमित रहे । विदा !

ओफीलिया हे भगवान इनकी रक्षा कर !

हैमलेट अगर तू शादी करेगी तो दहेज के रूप मे तुझे मैं यह शाप दूगा कि तू बर्फ सी अमल हो हिम सी धवल हो, तो भी तू कलंकित हो । तू मठ मे जा बैठ जा, विदा । पर यदि तुझे शादी करनी ही हो तो किसी मूर्ख से कर, क्योकि बुद्धिमान जानते हैं कि तुम अपने पतियो को क्या तमाशा बना देती हो । मठ को जा और जल्दी जा विदा !

ओफीलिया ओ स्वर्गिक शक्तियो इनके मन को शात करो !

हैमलेट मैंने तुम्हारी बेन-केन रचना के बारे म भी सुन रक्खा है जो तुम बडी दक्षता से करती हो । भगवान ने तुमको एक चेहरा दिया है तुम उसपर दूसरा लगा लती हो । तुम कमर लच-काती हो अग मटकाती हो कनखियो से बतियाती हो सीधे सादो को बुद्धू बनाती हो और अपनी चतुराई को अपने भोले पन का बाना पहनाती हो । जा जा अब इस प्यार से मेरा कोई सरोकार नही इसने मुझे पागल बना दिया है । मैं कहता हूँ कि अब हम विवाह का रिवाज ही बद कर देंगे । जिनकी शादी हो चुकी है वही शादी-शुदा रहेंगे सिर्फ एक को छोडकर जिनकी नही हो चुकी उनकी अब नही होगी इसलिए तू मठ म जा ।

ओफीलिया कितनी ऊची सत्ता नीचे गिरा पडी है !—
राजपुरुष का दृष्टि, औ्म विद्या-व्यसनी की
औ तलवार कुशल सनिक की—रम्य राज्य की
आशाओ का जो गुलाब था रुचि का दपण
औ स्वरूप का साचा जो था जिसके ऊपर
सभी आखवालो की आखें लगी हुई थी
कितना नीचे कितना नीचे गिरा पडा है !
औ मैं महिलाओं म परम निराश अभागिन
जिसने उसका प्रेम प्रतिज्ञा की मधुमय

सगीत-सुरा का पान किया था, हा, अब उसकी
तीव्र बुद्धि का यह विकार, उसकी प्रतिभा का
करुण पतन यह, देख रही हूँ ।—मधुर घटियाँ
बजती, उनमे, पर, कोई स्वर-साम्य नही है,
कानो को वे कर्कश लगती। अद्वितीय यह
रूप-रग विकसित यौवन का, पागलपन से
बिखर गया है। बडी दुखा मैं, बहुत दुखी हूँ,
क्या मैंने तब देखा, अब क्या देख रही हूँ !

(राजा और पोलोनियस का पुन प्रवेश)

राजा : प्रेम ? नही उसके विकार का कारण लगता।
जो वह बोला उसमे, गो थी कमी गठन की
कुछ थोडी-सी, नहीं पगलपन मैंने पाया ।
उसकी छाती मे कोई विष-वृक्ष उगा है,
जिसे उदासी, उसके मन की, सीचा करती,
और मुझे पूरी आशका है जो उसमे
फल आएगा, वह कुछ-बहुत भयकर होगा।
जल्दी उसकी रोक-थाम करने को मैने
यह सोचा है—उसे शीघ्र इग्लैड भेज दूँ,
माँग करे वह वहाँ पहुँचकर उस कर की जो
उसके ऊपर बहुत दिनो से चढा हुआ है।
सभव है सागर, विभिन्न देशो की यात्रा,
और वहाँ की तरह-तरह की नई वस्तुएँ
हटा सके जो उसकी छाती पर बैठा है,
चैन न लेने देता जो उसके दिमाग को,
जिससे उसको अपना होश-हवास न रहता।
क्या है राय तुम्हारी इसपर ?

पोलोनियस : अच्छा होगा।
पर पूरा विश्वास मुझे है इस पीडा का
मूल और आरभ प्रेम ही है, ठुकराया

कानो के पर्दे फाड दे जो दो ही तरह की चीजे समझते है—या तो मूक-प्रदर्शन या फिर हथिया-चिग्घाड । मेरा वश चले तो ऐसे लोगो को कोडे लगवाऊँ जो किसी क्रोधोन्मत्त नायक की भूमिका अदा करने मे भी अत्ति करे—उद्धत को अतिशयोद्धत बनाकर। देखो, ऐसा न करना।

पहला अभिनेता : जैसा आप कहते है वैसा ही होगा, श्रीमत !

हैमलेट : लेकिन आवाज एकदम दबी भी न हो। अपने विवेक से भी काम लो। इस बात का विशेष ध्यान रहे कि प्रकृति की सीमा का उल्लघन कही पर भी न हो। क्योकि किसी प्रकार की अत्ति करना नाटक के उद्देश्य से ही दूर हो जाना है, जिसका लक्ष्य पहले भी यही था और अब भी यही है—उसके दर्पण मे प्रकृति को प्रतिबिंबित करना—युग को उसका स्वरूप दिखाना, और अवगुण को उसका खाका, और युग और काल को उसका नक्शा और उसका प्रभाव। उसकी अतिव्याप्ति अथवा अपर्याप्ति पर गँवार भले ही हँसे, पर समझदार आँसू बहाता है। और ऐसे एक समझदार की राय का, तुम्हारी दृष्टि मे, दर्शको की एक पूरी भीड की राय से अधिक मूल्य होना चाहिए। अरे, ऐसे भी अभिनेता है जिनके करतब मैंने देखे है, और ऐसे भी लोग है जिन्होने उनकी तारीफे की है—खूब बढा-चढाकर—पर मुझे क्षमा किया जाए यदि मैं कहूँ कि न उनकी बात मे कोई विशेपता है, न उनकी चाल में; न स्वाभाविकता ही, आदमी-सा कुछ भी तो नही। रगमच पर उनकी धमा-चौकडी देख, और हुकार-चिग्घाड सुन, मुझे तो यही लगा है कि इन इन्सानो को भगवान ने नही, शैतान ने बनाया है, बनाया क्या है, बिगाडा है; मनुष्य नही, मनुष्य का विद्रूप खडा किया है।

प्रथम अभिनेता . श्रीमन्, हमने इस दिशा मे काफी सुधार किया है।

हैमलेट · अरे, 'काफी' नही, 'पूरा' सुधार करो। तुम्हारे नाटक मे जो विदूपको की भूमिका अदा करते है वे उतना ही बोले जितना

उनके लिए लिखा गया है क्योंकि उनमे कोई-कोई तो ऐसे हैं कि कुछ मनहूस दर्शकों को हँसाने के लिए खुद हँसना शुरू कर देते हैं या उस समय नाटक की किसी आवश्यक समस्या को प्रस्तुत करने का अवसर होता है। यह तो उद्दण्डता हुई, और यह प्रकट करता है कि जो विदूषक ऐसा करते हैं वे कितनी दयनीय महत्त्वाकांक्षा के शिकार हैं।—

(अभिनेता चले जाते हैं।)

(पोलोनियस, रोज़ेन्क्राट्ज़ और गिल्डेन्स्टर्न का प्रवेश)

—कहिए श्रीमन् क्या राजा यह खेल देखने को आएँगे ?

पोलोनियस जी हाँ रानी भी आएँगी औ' जल्दी ही।

हैमलेट अभिनेताओं से जा कहिए जल्दी आएँ।

(पोलोनियस जाता है।)

तुम दोनों भी जाकर उनकी मदद करो जल्दी आने में।

रोज़ेन्क्राट्ज़, गिल्डेन्स्टर्न श्रीमन्, हम उनको लाते हैं।

(रोज़ेन्क्राट्ज़ और गिल्डेन्स्टर्न बाहर जाते हैं।)

हैमलेट होरेशियो तू !

(होरेशियो का प्रवेश)

होरेशियो हाँ श्रीमन् मेरी सेवा लें।

हैमलेट बहुतों से मैं मिला नहीं पर मैंने पाया कोई ऐसा तुझ सा सुलझा समझदार हो।

होरेशियो श्रीमन् मैं क्या

हैमलेट सत्य इसे तू मान कि तेरी नहीं चापलूसी करता हूँ। तुझसे क्या पाने की आशा रख ऐसा करना चाहूँगा ? खाना कपड़ा जुट पाए जितने में उसको छोड़ पास क्या तेरे है ? बस मन की मस्ती।

करे चापलूसी कोई क्यों कगालो की ?
जहाँ ख़ुशामद से आमद हो, वहाँ भले ही
मिठबोली जिह्वा चाटे चाँदी के तलवे,
और दरे-दौलत पर घुटने टेके जाएँ ।
देख, चूँकि मैं अपनी मर्ज़ी का मालिक हूँ,
भले-बुरे इन्सानो की पहचान मुझे है,
तुझको मैंने अपने मन का मीत चुना है ।
तू दुःखो मे, दुख से विचलित नही हुआ है,
तूने किस्मत के अभिशापो, वरदानो को
एक तरह साभार सदा स्वीकार किया है ।
होरशियो, वे लोग धन्य है—कम ऐसे है—
जो आवेग-विवेक सतुलित अपना रखते,
नही भाग्य के हाथो की कठपुतली बनते,
जैसा चाहे, उन्हे नचाए । दे मुझको तू
वह मनुष्य जो नही वासना का गुलाम है,
और उसे मैं अपनी छाती मे रख लूंगा—
—अतस्तल मे—जैसे मैं तुझको रखता हूँ ।
मैं इसपर कुछ बहुत कह गया । आज रात को
नाटक एक दिखाया जाएगा राजा को,
एक दृश्य है मेरे पूज्य पिता के मरने
के प्रसग से मिलता-जुलता, जिसके बारे
मे तुझसे मैं बता चुका हूँ । दृश्य दिखाया
जाए जब वह तब तू पूरा ध्यान लगाकर
आँखे रख मेरे चाचा पर । कथन एक है
उसमे ऐसा जो यदि अपने-आप न उसका
गुप्त गुनाह उजागर कर दे, तो तू ऐसा
समझ भूत वह झूठा था जो हमे दिखा था;
और कल्पना मेरी, जैसे सन्निपात के
रोगी की हो । बडे गौर से देख उसे तू;

मेरी आँख उसके मुख पर टिकी रहेगी
और बाद को दोनो मिलकर उसके चेहरे
से क्या सुनता है—इसपर मशविरा करेंगे।

होरेशियो — अच्छा श्रीमन्! जब नाटक खेला जाता हो
तब यदि चोरी मे वह सिसक पकड़े जाने
के डर से ना छिप न सकेगा मेरी आँखों
से उसकी दाढ़ी का तिनका।

हैमलेट — वे लोग नाटक देखने आ रहे है मुझे फिर पागल सा बन जाना चाहिए। तुम किसी जगह बैठ जाओ।
(डेनिश मार्च का बैंड बजता है। तुरही बजती है। राजा, रानी पोलोनियस, ओफीलिया, रोजेन्क्राट्ज़ और गिल्डरस्टर्न आते हैं उनके पीछे है कई सरदार और मशालें लिये हुए अनुचर)

राजा — कैसे हो, प्यारे हैमलट?

हैमलट — बहुत अच्छा हूँ बेशक गिरगिट खाकर हवा पाकर वादों से पेट भरकर बधिया मुर्गा भी इसपर नही जिएगा।

राजा — सवाल दीगर जवाब दीगर! हैमलेट मेरे प्रश्न से इन शब्दो का क्या संबध है?

हैमलट — और मेरा भी क्या है?—(पोलोनियस से) जनाब आप कहते थे कि एक बार आपने विश्वविद्यालय मे अभिनय भी किया था?

पोलोनियस — किया था मैंने श्रीमन्, और मुझे अच्छा अभिनेता माना गया था।

हैमलेट — और किसकी भूमिका आपने अदा की थी?

पोलोनियस — मैं जूलियस सीज़र की भूमिका मे उतरा था मुझे कैपिटल मे मारा गया था ब्रूटस ने मुझे मारा था।

हैमलट — आपको भूमि पर उतरना ही नही था नहीं तो आप न मारे जाते।—क्या अभिनेता लोग तयार हो गए?

रोज़ेनक्राट्ज़ — हाँ, श्रीमन् वे आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

रानी　यहाँ आओ, प्यारे हैमलेट, मेरे पास बैठो।

हैमलेट　नही माँ, यहाँ के चुम्बक मे मेरे लिए अधिक आकर्षण है।

पोलोनियस　(राजा से) ओ-हो ! आप इसे देख रहे है।

हैमलेट　देवि, क्या मैं तुम्हारी गोद मे लेट सकता हूँ ?

(ओफीलिया के पैरों के पास लेट जाता है।)

ओफीलिया　नही, श्रीमन्।

हैमलेट　मेरा मतलब है, अपना सिर तुम्हारी गोद मे रखकर ?

ओफीलिया　जैसा आप चाहे, श्रीमन्।

हैमलेट　क्या तुम समझती हो कि यह भद्दी बात है ?

ओफीलिया　नही तो, श्रीमन्।

हैमलेट .　किसी कुमारी की टाँगो मे पड़े रहना—यह तो बड़ी सुखद कल्पना है।

ओफीलिया ·　क्या है, श्रीमन् ?

हैमलेट .　कुछ नही।

ओफीलिया　प्रसन्न तो है आप, श्रीमन् ?

हैमलेट　कौन ? मैं ?

ओफीलिया　हाँ, श्रीमन्।

हैमलेट .　मै तो तुमको प्रसन्न करनेवाला हूँ, तुक मे तुक जड़नेवाला हूँ। प्रसन्न होने के सिवा मनुष्य कर ही क्या सकता है। मेरी माँ को ही देखो, कैसी प्रसन्न वे दिख रही है और मेरे पिता को मरे दो ही महीने अभी हुए है।

ओफीलिया　नही, दो दूनी चार महीने, श्रीमन् !

हैमलेट .　इतने ···· ऽ दिन हो गए ? तब तो मेरी बला पहने मातमी कपडे, मैं अब एक काला सूट सिलाऊँगा। ओ परमात्मा, मरे हो गए पूरे दो महीने और उन्हे अब तक नही भुलाया गया ! तब यह आशा बँधती है कि किसी बडे आदमी की याद उसके मरने के बाद छह महीने तक तो बनी ही रहेगी। परन्तु, सौगध स्वर्ग की देवी की, तब उसे पत्थर का गिरजाघर बनवाना पडेगा, नही तो उसे बिल्कुल भुला दिया जाएगा, काठ

का घोड़ा घास की जीन वाले की तरह— काठ का घोड़ा,
घास का जीन, याद किसे है दाता दान ?

(नरसिंगों की आवाज। मूक अभिनय करनेवालों का प्रवेश। एक राजा रानी प्रेमी-प्रेमिका की तरह आते हैं। वे एक-दूसरे का आलिंगन करते हैं। रानी घुटनों के बल बैठकर राजा को कुछ उलाहने देती है। राजा उसे उठाता है और उसके कंधे पर अपना सिर रख देता है। वह उसे एक फूलों की सेज पर लेटा देती है। उसको सोता देखकर वह वहाँ से हट जाती है। तभी एक आदमी आता है, उसका ताज उतारता है, उसे चूमता है और राजा के कान में जहर डाल देता है, और चला जाता है। रानी लौटती है, देखती है कि राजा मर गया है और विह्वलता की मुद्राएँ बनाती है। दो या तीन व्यक्तियों के साथ राजा के कान में जहर डालनेवाला फिर आता है और रानी के साथ शोक प्रकट करने की मुद्राएँ बनाता है। राजा के मृत शरीर को लोग उठा ले जाते हैं। जहर डालने वाला तरह-तरह के उपहार देकर रानी की मनुहार करता है, रानी पहले तो उसके प्रति उदासीन और अनमनी रहती है, पर अंत में उसका प्रेम को स्वीकार कर लेती है—

(अभिनय करनेवालों का प्रस्थान)

ओफीलिया इसका मतलब क्या है श्रीमन् ?

हैमलेट सच बताऊँ ? बगली ठेस, यानी शरारत।

ओफीलिया शायद इस प्रदर्शन में नाटक के कथानक का कुछ संकेत है।

(सूत्रधार का प्रवेश)

हैमलेट इसका पता तो इस आदमी से लगेगा। अभिनेताओं के पेट में बात नहीं पचती वे हमारे सामने सब उगल देंगे।

ओफीलिया क्या यह बताएगा कि इस मूक प्रदर्शन का मतलब क्या है ?

हैमलेट निश्चय या किसी भी प्रदर्शन का जो तुम उसके आगे प्रदर्शित कर सको। तुम प्रदर्शित करने में न शरमाओ और वह उसका मतलब समझाने में नहीं शरमाएगा।

ओफीलिया . आप तो टेढी बाते करते है, टेढी, मै खुद खेल को समझूंगी ।

सूत्रधार .

हमारी त्रासदी पर और हमपर
बड़ा आभार होगा आपका गर
सुनें सब आप हमको धैर्य धरकर !

(सूत्रधार जाता है ।)

हैमलेट : यह सूत्रधार का प्रवचन है कि अंगूठी पर खुदा सूत्र ?

ओफीलिया . जल्द ही समाप्त हो गया ।

हैमलेट : जैसे किसी स्त्री का प्रेम ।

(राजा और रानी—दो अभिनेताओं का प्रवेश)

अभिनेता राजा : पूरे तीस बार सूरज के अविरत रथ ने
वरुण-वास खारे सागर की, भू-मडल की
परिक्रमा की, और तीस दर्जन चाँदो ने,
माँगी चादर ओढ किरण की, इस धरती की
तीस गुणित बारह फेरी दी, जब से हमको
प्रणय और परिणय ने बाँधा कभी न खुलने
वाली गाँठो मे पावनतम, परम मनोरम ।

अभिनेत्री रानी : सूरज-चदा की इतनी ही परिक्रमाएँ
फिर हमको गिननी हो, लेकिन गाँठ प्रेम की
बाँध रही जो हम दोनो को पडे न ढीली ।
पर मेरा दुर्भाग्य, इधर अस्वस्थ आप है ।
चेहरे पर अब पहले-सा उल्लास नही है,
और आपके लिए मुझे चिंता रहती है ।
भय-चिंता चाहे मुझको हो, मेरे स्वामी,
विचलित होना कभी आपको नही चाहिए ।
नारी-उर मे प्यार सतुलित रहता भय से—
या तो नारी मे अभाव दोनो का होगा,
या उसमे फिर दोनो अतिशयता पर होगे ।
जैसा मेरा प्यार, आपसे छिपा नही है,
मेरे भय की माप उसी से कर सकते है ।

प्यार अधिक हो तो थोड़ी भी शङ्का भी
भय उपजाती। भय से शङ्का बढ़ती है
जितनी ही बढ़ती उतना ही प्यार बढ़ाती।

अभिनेता राजा
मेरे तन की शक्ति क्षीण होती जाती है
प्रिय छोड़ना मुझे तुझे होगा ही जल्दी
मेरे पीछे बनी रहेगी तू सुखमाभय
इस वसुधा पर स्नेह समादर भी पाएगी
औ' संभव है, मुझ-सा प्रेमी पति भी तुझको—

अभिनेत्री रानी
और न बोलें! प्रेम अगर ऐसा बदले तो
वह चपल धोखेबाजी मेरी नजरों में।
फिर से ब्याह करूँ तो ईश्वर मुझे सजा दे!
कोई पति हत्यारी फिर पति करती होगी।

हैमलेट
बात बड़ी चुभनेवाली है।

अभिनेत्री रानी
ब्याह दूसरा किया जाय तो उसका कारण
प्रेम न होगा कोई नीच प्रलोभन होगा।
अगर दूसरा पति मुझको बिस्तर में चूमे
मुझे लगेगा ऐसा जैसे अपने पहले
मरे हुए पति की मैं फिर से हत्या करती!

अभिनेता राजा
मुझको है विश्वास कि जो तुम बोल रही हो
सोच-समझकर बोल रही हो लेकिन अक्सर
हम खुद अपने वादों को तोड़ा करते हैं,
क्योंकि याद के ऊपर निर्भर वादे रहते।
वादे जन्म लिया करते हैं आवेगों में
पर उनमें सुस्थिरता लेश नहीं रहती है
जैसे कच्चा फल डाली से चिपका रहता,
पर पकने पर अनजाने ही चू पड़ता है।
और यही अक्सर होता हम याद न रखते
जो ऋण हम पर और चुकाना जिसका हमको।
हम आवेगों में वादे तो कर लेते हैं,

पर वे ठडे पडे कि हम वादे विसराते,
सुख-दुख के आवेग स्वय ही सुख-दुख को ही
सहते-सहते, धीरे-धीरे, मिट जाते है।
अति जहाँ पर सुख की, या दुख की होती है,
सुख दुख मे, दुख सुख मे जल्द बदल जाता है।
नही एक-सी रहती दुनिया, अचरज क्या है,
भाग्य बदलता, प्रेम भाग्य के साथ बदलता।
एक प्रश्न है जिसका उत्तर मिला न अब तक,
प्रेम भाग्य पर निर्भर है, या भाग्य प्रेम पर।
बडा गिरा तो उसके प्रियजन उससे कटते,
छोटा उठा कि शत्रु, पूर्व के, प्रियजन बनते।
और अभी तक तो निर्भर है प्रेम भाग्य पर,—
जो समृद्ध है उसे मित्र की कमी नही है।
दुर्दिन मे ऊपरी मित्र को जो परखेगा,
निश्चित है, उसको अपना दुश्मन कर लेगा।
शुरू किया था जहाँ, वही यदि खत्म करूँ तो
कहना होगा, अभिलाषा औ' भाग्य विरोधी।
यत्न हमारे सदा विफल होते रहते है,
अभिलाषाएँ अपनी, उनका अत न अपना।
सोच रही हो तुम कि दूसरा पति न करोगी,
किंतु प्रथम पति के मरने पर यह विचार भी
मर जाएगा।

अभिनेत्री रानी .　　　　एक बार विधवा बनकर मैं
यदि फिर सधवा बनूं, अन्न मुझको न धरा दे,
ज्योति न दे आकाश, रात हो चाहे दिन हो,
किसी समय भी शांति, हास-उल्लास न जानूँ,
आशा औ' विश्वास निराश मुझे कर जाएँ,
भिखारिणी-सी मैं दर-दर की ठोकर खाऊँ,
नियति सभी मेरी खुशियो में आग लगा दे,

अरमानों पर पानी फेरे, उन्हें मिटा दे,
यहाँ वहाँ मैं किसी जगह पर चैन न पाऊँ।

हैमलेट — इतने पर भी यदि वह अपने वचन तोड़ दे!

अभिनेता राजा — प्यारी, तुमने बड़ी कड़ी सौगन्ध उठाली
अब तुम थोड़ी देर के लिए मुझे छोड़ दो,
भीतर से कमज़ोरी मैं अनुभव करता हूँ
थोड़ा सोकर लंबा दिन काटा चाहूँगा।
(सोता है।)

अभिनेत्री रानी — नींद आपको अच्छी आए
और हमारे बीच न कुछ अघटित हो पाए।
(जाती है।)

हैमलेट — देवि, आपको यह नाटक कैसा लगता है?

रानी — मुझे लगता है कि नारी अपने पतिव्रत का कुछ ज़्यादा ही ढोल पीट रही है।

हैमलेट — ओ, लेकिन वह अपने वचनों पर दृढ़ रहेगी।

राजा — क्या तुमने इस नाटक का कथानक देख रक्खा है? इसमें कुछ आपत्तिजनक तो नहीं है?

हैमलेट — नहीं, नहीं, वे तो केवल हँसी-खेल कर रहे हैं। ज़हर देने का अभिनय भर, कोई आपत्तिजनक बात नहीं।

राजा — नाटक का नाम क्या है?

हैमलेट — चूहेदानी। यानी चूहे की नानी। इस नाटक में एक हत्या प्रदर्शित की गई है जो वियना में हुई थी। गोंज़ागो राजा का नाम है, उसकी पत्नी का बपतिस्ता। आप इसे जल्दी ही देखेंगे। यह बड़ी कपटपूर्ण रचना है, पर उससे क्या? आप महामहिम का और हमको, जिनके दिल साफ़ हैं, यह छू भी नहीं सकती। जिनके लिए चोर अपनी दाढ़ी टटोलें, हमारी उंगलियाँ वंचित हैं —
(लूसियानस के रूप में एक अभिनेता का प्रवेश)
यह लूसियानस है, राजा का चचेरा भाई।

ओफीलिया . श्रीमन्, आप तो बिल्कुल कोरस का काम कर रहे हैं—नाटक को समझाने मे ।

हैमलेट मै तुम्हारे और तुम्हारे प्रेमी के मन की बाते बता सकता था अगर मै तुमको कठपुतलियो-जैसी हरकत करते देख भर पाता ।

ओफीलिया : आप बडे तेज है, श्रीमन्, बडे तेज ।

हैमलेट इस तेजी को कुद करना चाहोगी तो चीख निकल जाएगी ।

ओफीलिया : बात तो आपने और तेज कही, पर भद्दी ।

हैमलेट : ऐसी ही प्रशसा और निंदा से तो तुम अपने पतियो को भरमाती हो ।—शुरू भी कर, हत्यारे , दुष्ट, अपना घिनौना मुखौटा उतार और अपना काम शुरू कर । चल, तुझसे बदला लेनेवाला अब उतावला हो रहा है ।

लूसियानस :

हत्या का निर्णय पक्का है, हाथ सधा-सा,
जहर तेज़, अनुकूल समय, मौसम सहायप्रद,
और किसी प्राणी की आँखे नही खुली है ।
ओ निर्दय द्रव, अर्द्ध रात्रि को जडी-बूटियो
से सचित, औ' मरघट-मुर्दों की देवी की
तीन फूंक से तीन बार शापित, विप-मिश्रित,
तेरे जादू के प्रभाव से, मारक बल से
आनन-फानन हरा-भरा भी जीवन झुलसे !
(सोनेवाले के कान मे जहर उँडेलता है ।)

हैमलेट वह उसका राज्य पाने के लिए उसके बाग मे उसे जहर दे देता है । उसका नाम गजागो है , सुदर इटालवी मे लिखी यह कथा सच्ची है, अभी आप देखेंगे कि किस प्रकार हत्यारा गजागो की पत्नी का प्रेम प्राप्त करता है ।

ओफीलिया : महाराज तो खेल से जाने के लिए उठ खडे हुए है !

हैमलेट क्या आतिशबाजी से आग के अदेशे ?

रानी महाराज कैसे है ?

पोलोनियस . खेल खत्म करो !

राजा — मुझे रोशनी दिखाओ—सब जाओ !

सब — रोशनी, रोशनी, रोशनी !

(हैमलेट और होरेशियो को छोड़ सब चले जाते हैं।)

हैमलेट —
बाण बिंधा मृग बन म रोए
छौना सुख से करे बिहार,
कुछ जागा कुछ सोया करते —
ऐसे चलता है ससार ।

क्या जी मेरा यह कमाल परदार पहनाव, धारीदार जूतियों पर दो दो गुलाब—अगर मेरे बुरे दिन भी आ जाए तो—रोटी रोजी के लिए—किसी नाटक मडली की सदस्यता तो दिला ही सकते हैं।

होरेशियो — आधा हिस्सा।

हैमलेट — पूरा क्यों नहीं जी ?
बधु, तुझे तो सब कुछ ज्ञात।
नर शार्दूल जहाँ था राजा
देश पड़ा वह उजड़ा आज,
एक प्रदर्शन प्रिय, खल कामी
मार यहाँ करता है राज ।

होरेशियो — गर्दभराज की तुक नहीं लगा सकते थे ?

हैमलेट — प्यारे होरेशियो, सच मानो भूत ने लाख टके की बात कही थी। देखा ?—

होरेशियो — खूब अच्छी तरह श्रीमन् !

हैमलेट — —जहर देने की बात पर ?

होरेशियो — मैंने बड़े गौर से उसे देखा।

हैमलेट — अह हा ! आओ कुछ गाना-बजाना हो जाए। लाओ बजे बाँसुरी !—
यदि राजा को नहीं कामदी भायी,
तो हो सकता है—उन्हें पसद न आई।
आओ कुछ गाना-बजाना हो जाए।

(रोजेन्क्राट्ज और गिल्डेन्सटर्न का पुन प्रवेश)

गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, आज्ञा हो तो एक बात कहूँ ?

हैमलेट : पूरा इतिहास !

गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, राजा—

हैमलेट : हाँ, तो क्या हुआ है राजा को ?

गिल्डेन्सटर्न : अकेले कमरे मे जा बैठे है, बहुत बेहाल है।

हैमलेट ज्यादा पी गए होगे।

गिल्डेन्सटर्न : नही, श्रीमन्, उनका सिर फटा जा रहा है।

हैमलेट तो अक्ल की बात यह है कि उन्हे किसी अच्छे हकीम को दिखाओ। क्योकि मै, क्योकि मै कुछ करूँ भी तो नतीजा उसके सिवा और क्या होगा—'नीम हकीम खतरे जान !'

गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, ढग की बात करे, मेरी खबर पर आप तो ऐसे बिचक उठे है, जैसे कोई जगली जानवर।

हैमलेट अच्छा भाई, मै पालतू जानवर बनता हूँ। कहो जो कहना हो।

गिल्डेन्सटर्न · राजरानी, आपकी माताजी, ने बहुत ही दुखी होकर मुझे आपके पास भेजा है।

हैमलेट . स्वागतम् !

गिल्डेन्सटर्न : नही, श्रीमन्, यह शिष्टाचार तो मुझे केवल व्यग्यात्मक मालूम होता है। यदि आप मुझे समुचित उत्तर दे सके तो मै आपकी माता का आदेश आपसे कहूं ? नही तो, आप मुझे क्षमा करे, मै विदा लेता हूँ, और मेरा काम समाप्त होता है।

हैमलेट : वह तो मुझसे नही होगा।

गिल्डेन्सटर्न : क्या नही होगा, श्रीमन् ?

हैमलेट : कि मै तुमको समुचित उत्तर दूं, मेरी अक्ल ठिकाने नही है। लेकिन जैसा उत्तर मै दे सकता हूँ उसी के अनुरूप तुम अपना आदेश करो, या जैसा तुम कहते हो, मेरी माता करे, इसलिए अब और कुछ नही, सिर्फ काम की बाते, तुम कहते हो कि मेरी माँ—

रोजेन्क्राट्ज . तो आपकी माँ यह कहती है कि आपके

घबराहट और अचरज में डाल दिया है।

हैमलेट वाह, बेटा भी क्या अजीब है कि माँ को अचम्भे में डाल सकता है, लेकिन इस आश्चर्य के परिणाम स्वरूप वे करना क्या चाहती है ? वह तो बताओ।

रोज़ेन्क्रांट्ज़ वे चाहती हैं कि सोने जाने से पहले आप उनके कमरे में उनसे मिलें।

हैमलेट हम उनकी आज्ञा का पालन करेंगे जैसे वे हमारी दस जन्मों की माँ हों। तुम्हें हमसे कोई और काम है ?

रोज़ेन्क्रांट्ज़ श्रीमन् किसी समय आप मुझे प्यार करते थे।

हैमलेट वह तो मैं अब भी करता हूँ कसम इन गिरहकट और चोरी करनेवाले हाथों की।

रोज़ेन्क्रांट्ज़ श्रीमन् आपकी बदमिज़ाजी का कारण क्या है ? आप अपनी ही आज़ादी के पैरों में बेड़ियाँ डालते हैं अगर आप अपनी तकलीफ़ अपने दोस्तों से छिपाते हैं।

हैमलेट भाई मेरे आगे बढ़ने के रास्ते बन्द हैं।

रोज़ेन्क्रांट्ज़ यह कैसे हो सकता है जब स्वयं राजा ने आपको यह वचन दे रक्खा है कि आप ही डेनमार्क के युवराज हैं।

हैमलेट यह तो ठीक है लेकिन तुमने कहावत नहीं सुनी—गुस्ताखी माफ़ हो—'भूखा भुमौते में घोड़ा घुड़साल में' !

(अभिनेताओं का बाँसुरियों के साथ पुनः प्रवेश)

आह बाँसुरियाँ आ गईं ! एक मुझे दिखाओ—
ज़रा इधर आओ—मेरा क्या भेद लेने के लिए तुम मेरे पीछे पड़े हो ?—मुझे किस फंदे में फँसाना चाहते हो ?

गिल्डेन्स्टर्न श्रीमन्, जब मनुष्य के ऊपर कर्तव्य का भार अधिक होता है तब वह अपना प्यार समुचित रीति से व्यक्त नहीं कर पाता।

हैमलेट तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आई। बाँसुरी बजा सकते हो ?

गिल्डेन्स्टर्न नहीं श्रीमन्।

हैमलेट मैं प्रार्थना करता हूँ।

गिल्डेन्सटर्न : विश्वास कीजिए, मैं नही बजा सकता।

हैमलेट : मेरा आग्रह मान लो।

गिल्डेन्सटर्न : श्रीमन्, मुझे तो इसे पकडना भी नही आता।

हैमलेट : इसे बजाना उतना ही आसान है जितना झूठ बोलना। इन सूराखो को अपनी उँगली-अँगूठे से काबू मे करो, और मुँह से फूंको और इसमे से बडी ही सुरीली आवाज निकलेगी। देखो, ये है सूराख।

गिल्डेन्सटर्न : पर यह मेरे वश के बिल्कुल बाहर है कि उससे कोई सुमधुर स्वर निकाल सकूँ। मुझे यह कला नही आती।

हैमलेट : तो मुझे लगता है कि तुम मुझे कितनी ज़टियल चीज समझते हो! तुम मुझपर काबू पाना चाहते हो, मैं कहाँ, किस तरह खुल सकता हूँ, यह भी तुम जानते हो, तुम मेरे दिल की धीमी से धीमी आवाज से लेकर ऊँची से ऊँची आवाज़ तक सुनना चाहते हो, और इस छोटे-से बाजे से, जिसमे सुरीला सगीत है, सुमधुर स्वर है, तुम आवाज़ नही निकाल सकते। तुम बड़े भोले हो जो तुम समझते हो कि इस बाँस को बजाने से मुझे ठोकना-बजाना ज्यादा आसान है। तुम मुझे चाहे जिस प्रकार का बाजा समझो, तुम मुझे ठोक सकते हो, बजा नही सकते।

(पोलोनियस का पुन प्रवेश)

—भगवान आपका भला करे, श्रीमन्।

पोलोनियस : श्रीमन्, राजरानी आपसे कुछ कहना चाहती है और फौरन।

हैमलेट : सामने जो बादल है, देख रहे है? बिल्कुल ऊँट-की-सी शकल है उसकी।

पोलोनियस : बिल्कुल ऊँट-सा लगता है।

हैमलेट : नहीं, मैं समझता हूँ, यह नेवले-जैसा है।

पोलोनियस : हाँ, उसकी पीठ बिल्कुल नेवले-जैसी है।

हैमलेट : या ह्वेल मछली-सा है बादल?

पोलोनियस : बिल्कुल ह्वेल-मछली-जैसा।

हैमलट तो मैं फौरन माँ के पास आ रहा हूँ।—
(स्वगत) किसी को बेवकूफ बनाने की हद होती है।
—मैं फौरन आ रहा हूँ।

पोलोनियस मैं उनसे कह दूँगा।

(जाता है।)

हैमलट फौरन कहना सरल—विदा हो मुझसे मित्र।

(हैमलट को छोड़कर सब चले जाते हैं।)

(स्वगत) वह रात अब जिसमें जादू टोने चलते
जिसमें जबड़े फाड़ जमाई लेती कब्रें
नरक विषभरी साँस छोड़ता है दुनिया पर
गर्म रक्त इस वक्त पान कर सकता हूँ मैं
औ जघन्य ऐसे कर्मों को जिन्हें देखकर
काँप उठे दिन! बस! माँ से मिलने जाना है।
हृदय दया अपनी सहृदयता छोड़ न देना
किसी मातृहन्ता की आत्मा बसे न तेरी
दृढ़ छाती में निश्चय बन पर कभी न बन तू
अस्वाभाविक। मैं कटार सी पैनी बात
कहूँ मगर न कटार चलाऊँ कह भले ही
मेरी जिह्वा को मेरी आत्मा पाखंडी
मैं शब्दों से चाहे जितना उनको बेधूँ
हाथ न उनपर किंतु कर्म की मुहर लगाए!

(बाहर जाता है।)

तीसरा दृश्य

गढ़ का एक कमरा

(राजा, रोज़ेनक्राट्ज़ और गिल्डेन्स्टर्न का प्रवेश)

राजा नापसंद उसको करता हूँ और हमारी
रक्षा इसमें नहीं कि उसके पागलपन को

हम बढने दे। अब तो तुम तैयारी कर लो।
आज्ञापत्र तुम्हारा जल्दी भेजवाऊँगा,
उसको भी इग्लैड साथ अपने ले जाना।
उसके पागलपन से आए-दिन जो खतरे
खडे हो रहे निकट हमारे, उन्हे झेलना
राज्य के लिए शायद ही सभव हो पाए।

गिल्डेन्सटर्न : हम कर लेगे सब तैयारी। इस खतरे के
प्रति सचेत रहना है पावन धर्म आपका,
क्योकि देश के अगणित लोगो का सरक्षण
और भरण-पोषण निर्भर है महामहिम पर।

रोजेन्क्रांट्ज हर अनिष्ट से अपने को रक्षित रखने को
बुद्धि और बाँहो के बल से प्राणी-प्राणी
यत्न सदा करता रहता है। तब उस सत्ता
को सयत्न कितना रहना है जिसके मगल
और कुशल पर बहुतो का जीवन निर्भर है।
राजा रूपी नाव डूबती नही अकेली,
निकट सभी कुछ खीच भँवर मे ले जाती है।
राजा एक महान चक्र है जो पर्वत के
उच्च शिखर पर धरा हुआ है, और अरो से
तरह-तरह की लाखो चीजे बँधी-जुडी है,
गिरता जब यह महाचक्र तब अगणित चीजे
छोटी-मोटी भी गिर टूट-बिखर जाती है,
आह अकेले कभी नही राजा भरता है,
देश एक, युग एक, साथ क्रदन करता है।

राजा · मेरा है आदेश कि तुम तैयारी कर के
इस यात्रा पर जल्दी जाओ। हम उस खतरे
के पाँवो मे बेडी देगे जो आजादी
ज्यादा पाकर आवारागर्दी करता है।

रोज़ेन्क्रांट्ज़
गिल्डेन्स्टन
श्रीमन हम जल्दी जाएँगे।

(रोज़ेन्क्रान्ट्ज़ और गिल्डेन्स्टन बाहर जाते हैं।)

पोलोनियस
महामहिम वह माँ के कमरे में जाता है
बातचीन सुनने को मैं पर्दे के पीछे
छिपा रहूँगा। मेरा दावा है वे उसके
दिल की तह तक पहुँच सकेंगी फिर भी जैसा
कहा आपने कि यह उचित है जब माँ बेटे
बात करें तब कोई और उन्हें सुनता हो
क्योंकि बड़ा स्वाभाविक है यह मां को बेटे
का लिहाज हो। मेरे मालिक मुझे विदा दें।
मैं हाजिर हूँगा हुजूर के बिस्तर में जाने
से पहले और बताऊँगा जो मैंने
सुना गुना है।

राजा
दिल से तुमको धन्यवाद है।

(पोलोनियस बाहर जाता है।)

(स्वगत) यह अपराध घृणित इतना है नाक नरक भी
सिकोड़ता है! उफ भाई की हत्या करना!
परम पुरातन और प्रथम अभिशप्त पाप यह।
अपने पूरे इच्छा बल से चाह रहा हूँ
लेकिन मुझमें नहीं प्रार्थना की जाती है।
प्रबल कामना मेरी पर अपराध प्रबलतर
उसे पराजित कर देता है। मैं दुबधे में
पड़े व्यक्ति सा एक जगह पर खड़ा सोचता
शुरू करूँ किसको पहले मैं औ असमंजस
में दो में से नहीं किसी को कर पाता हूँ।
अगर हाथ शापित ये मेरे मेरे भाई
के लोहू में सने हुए हैं तो वरदानी

सघन घटा मे, हाय, नही क्या इतना पानी
उनको धोकर हिम-सा उज्ज्वल, निर्मल कर दे ?
करुणा फिर किसलिए बनी है यदि न द्रवित हो
देख पाप का भाल कलकित, और प्रार्थना
मे भी क्या है अगर न वह दो शक्ति-समन्वित,—
एक, बचाए जो हमको गिरने से पहले,
और दूसरी, क्षमा करे जो गिर जाने पर।
तब आशान्वित हो मै बीती को बिसराऊँ।
पर मेरा उद्धार करेगी, हाय, प्रार्थना
किस प्रकार की ? 'मेरी इस गर्हित हत्या का
पाप क्षमा कर'। लेकिन यह स्वीकार न होगी;
जिन प्रलोभनो मे पड मैंने हत्या की थी
अब भी मैं उनसे चिपका हूँ—नही मुक्त मैं
अभी महत्वाकाक्षाओ से, राजमुकुट सिर
पर मेरे है, रानी मेरी बाँहो मे है।
क्या ऐसा भी हो सकता है, क्षमा प्राप्त कर
ले कोई औ' अपराधो का फल भी भोगे ?
भ्रष्टाचार-भरी दुनिया मे यह सभव है,
रँगे पाप के हाथ न्याय को परे हटा दे;
औ' अक्सर देखा जाता है, लूट-झूठ से
पाए धन से न्याय खरीद लिया जाता है,
पर ईश्वर के घर ऐसा अधेर नही है।
वहाँ नही कोई हथकडा चल सकता है,
और न झुठलाया जा सकता है करनी को,
वहाँ विवश होकर खुद हमको शीश झुकाए,
आँखे नीची किए, गुनाहो को अपने सिर
लेना होता। तो अब क्या हो ? शेष रहा क्या ?
कोशिश करके पश्चाताप करूँ—सुनता हूँ,
कुछ भी ऐसा नही असभव हो जो उससे,

फिर भी क्या हो पश्चाताप न जब हो पाए।
भाग्यहीन तू! मृत्यु कालिमा सी अंधियारी
छाती वाले! तेरी आत्मा ऐसे बंधन
में जकड़ी है जितना तू विमुक्त होने की
कोशिश करता उतना ही फँसता जाता है।
अरे देवदूतो सहाय हो! जल्दी आओ!
आ दभो घुटनों के बल झुक! और हृदय के
इन इस्पाती रग रेशों का इतना कोमल
बना कि वे नवजात बाल की नस नाड़ी में
परिवर्तित हों। संभव है सब मंगलमय हो!
(पीछे हटकर घुटनों के बल बैठता है।)
(हैमलेट का प्रवेश)

मलेट

इसका काम तमाम इसी दम कर सकता हूँ
करता है प्रार्थना भोंक दूँ छुरा पीठ में
यह मरकर स्वर्गलोक सीधे जाएगा
और चुका लूँगा मैं बदला—मगर सोच लूँ—
एक धूर्त वध करता मेरे पूज्य पिता का
उसी धूर्त को मैं उनका इकलौता बेटा
स्वर्ग भेजता।
यह तो उसके दुष्ट कृत्य का पुरस्कार सा
देना होगा और न उससे बदला लेना।
इसने मेरे पूज्य पिता की हत्या तब की
जब वे भौतिक भोग विलासों में लिपटे थे
पश्चाताप नहीं कर पाए थे भूलों पर
ईश्वर ही जानता कि उनके पुण्य-पाप का
लेखा क्या है। मानव ज्ञान हमारा कहता
उनके ऊपर पहियों भारी बोझ रखा है।
इसे मारना तब क्या बदला लेना होगा
जब यह पश्चाताप कर रहा है पापों पर

जब अनुकूल समय है उसके देह-त्याग का ?
नही। ·
ओ मेरी तलवार, म्यान से निकल तभी जब
इस पिशाच के लिए अधिक प्रतिकूल समय हो—
जब यह मदिरा मे डूबा बेहोश पडा हो,
या क्रोधातुर या कामातुर हो बिस्तर मे,
या क्रीडारत, कलहग्रस्त हो, या फिर ऐसे
किसी कृत्य मे, जो कि मोक्ष मे बाधक होता,
तभी गिरा इसको, न स्वर्ग में जा पाए यह,
और कलंकित, कलुषित, गर्हित इसकी आत्मा
गिरे नरक मे जो कि घिनौना इस-जैसा ही—
इन्तजार माँ करती होगी—इन उपचारो
से तू अपनी रोग-अवधि ही बढा रहा है।

(बाहर जाता है।)

राजा . (उठते हुए) ऊपर उठते शब्द, अर्थ नीचे रह जाते,
अर्थ-रहित जो शब्द स्वर्ग को पहुँच न पाते।

चौथा दृश्य

रानी का कमरा

(रानी और पोलोनियस का प्रवेश)

पोलोनियस : वह सीधे आएगा, उसको खरी सुनाएँ,
कहे कि उसकी शरारते सहने की सीमा
पार कर गईं, अपनी उदारता से उसकी
आड आप करती आई है, वर्ना अब तक
वह राजा के उग्र कोप का भाजन बनता।
यही खडा चुपचाप रहूँगा। आप कृपा कर
साफ-साफ उसको समझा दे।

हैमलेट : (भीतर से) माँ, माँ, माँ, माँ !

रानी — मैं तुमको विश्वास दिलाती। करो न मेरी
चिंता। जल्दी से छिप जाओ। वह आता है।
(पोलोनियस पर्दे के पीछे छिप जाता है।)
(हैमलेट का प्रवेश)

हैमलेट — क्या बुलवाया है, माँ ?

रानी — हैमलेट तुमने अपने
नए पिता को बहुत अधिक नाराज किया है।

हैमलेट — मेरे पूज्य पिता को कुछ कम नहीं, आपने।

रानी — देखो, अच्छा नहीं जीभ इस भाँति चलाना।

हैमलेट — और जीभ के नीचे क्या है जीभ लगाना ?

रानी — कैसे हो हैमलेट अब ?

हैमलेट — जैसे मैं पहले था।

रानी — क्या तुम मुझको भूल गए हो ?

हैमलेट — नहीं, नहीं तो
आप राजरानी हैं अपने पति के भाई
की पत्नी है—काश कि ऐसी बात न होती—
और आप मेरी माता है।

रानी — तब मैं तुमको
ले जाऊँगी उनके आगे जो इन बातों
का तुमको समुचित उत्तर दें।

हैमलेट — सुनिए सुनिए
और यहाँ पर बैठी रहिए तिल भर भी मैं
नहीं आपको हिलने दूँगा नहीं कहीं भी
जाने दूँगा जब तक नहीं खड़ा कर देता
ऐसा दर्पण एक सामने जिसके अंदर
लखें आपका अपने अंतरतम की झाँकी।

रानी — क्या करने पर आमादा है ? मेरी हत्या ?
अरे बचाओ !

पोलोनियस — कोई है क्या ! जल्दी आओ !

हैमलेट . (तलवार खींचकर) चूहेदानी के चूहे, तू अब न बचेगा।
(परदे में तलवार भोंक देता है।)

पोलोनियस (पीछे से) हाय, मरा मैं!
(गिरता है और मर जाता है।)

रानी . उफ, तूने यह क्या कर डाला ?

हैमलेट मुझको कुछ मालूम नही था। क्या राजा थे ?

रानी तूने पागलपन में भीषण काड किया यह!

हैमलेट भीषण, पर क्या इतना भीषण जितना यह, माँ,
पति की हत्या कर देवर से शादी करना!

रानी पति की हत्या ?

हैमलेट हाँ, माँ, मेरे शब्द यही थे।
(परदा उठाता है और मृत पोलोनियस को देखता है।)
जगह-जगह पर अपनी टाँग अडानेवाले,
अधे, मूढ, अभागे बूढे, तुझे अलविदा!
जिसको मैंने राजा समझा था तू निकला।
यही बदा था! तूने अब यह समझा होगा,
बहुत व्यस्त रहना है काम बडे खतरे का।—
हाथ मलो मत, बैठो होकर शात, जरा मैं
यह तो देखूँ हृदय तुम्हारी छाती मे है,
क्या वह ऐसी धातु की बनी जिसके अन्दर
पैठ सके कुछ, या कि तुम्हारे दुष्कर्मों ने
उसे कडा इतना कर डाला जैसे पत्थर,
और उसे भावना नही कोई छू पाती।

रानी क्या मैंने ऐसा कर डाला जो तू इतनी
अभद्रता से मेरे ऊपर चिल्लाता है ?

हैमलेट ऐसा काम कि जिसने लज्जा और शील के
मुँह पर कालिख पोत दिया है, जो सद्गुण को
ढोग बताता, जिसने नोचा है गुलाब को
जो खिलता है माथे पर अकलक प्रेम के,

और वहांपर एक फफोला दाग दिया है
जो विवाह-वचनों को झूठा साबित करता
जैसे व बस किसी जुआरी की कसम हो।
आह काम ऐसा जो परिणय के बंधन को
झटके देकर टुकड़े टुकड़े कर देता है
जो करता है सिद्ध कि पावन मंत्र धर्म के
मन नहीं है केवल भांडों की भड़त है
स्वर्ग शर्म खाता है तेरे इस कुकर्म पर
औ सुस्थिर सगठित धरित्री शोक निमज्जित
चिंता पीड़ित कांप रही है जैसे पास
कयामत का दिन आ पहुंचा है।

रानी हाय हुआ क्या

हैमलट जिसपर इतना हो हगामा किया जा रहा?
मां देखो यह चित्र और उसको भी देखो
मेरे चाचा और पिता की तस्वीरें हैं।
देखो भाल पिता का कितना शोभामय है।
क्या घुघराले बाल दिव्य कितना मुखड़ा है।
आंखों में कैसी आभा है—जिससे भय हो
औ जिसके प्रति आदर भी हो। और खड़े वे
ऐसे लगते जैसे कोई देव दूत हो
अभी अभी जो उतर स्वर्ग से गगन विचुंबित
पवन की चोटी के ऊपर खड़ा हुआ है।
उनका रूपाकार बनाने को जैसे हर
एक देवता ने अपना उत्तम-से उत्तम
अंग दिया था जिससे जग को उत्तम मानव
का अनिंद्य प्रतिमान प्राप्त हो। ऐसा तुमने
पति पाया था। और सुनो अब जो कहता हूं—
मां यह नया तुम्हारा पति है जिसने अपने
सगे भलाने भाई को हो खा डाला है

सडी बाल जैसे खा डाले हरी बाल को ।
कहाँ तुम्हारी ग्राँखे थीं जो शुभ्र शिखर को
छोड निम्न, गदे दलदल मे उतर पडी हो !
हाय, पड गया था पर्दा कैसे ग्राँखो पर !
प्रेम इसे तुम कह न सकोगी क्योंकि उम्र ग्रब
नही तुम्हारी जबकि रक्त मे बिजली दौडे,
इस वय मे ग्रावेग विवेक-नियत्रित रहता,
यही विवेक तुम्हारा, उतरी यहाँ, वहाँ से !
समझ तुम्हे है निश्चय, वर्ना नही वासना
तुममे होती, किंतु समझ वह लकवा-मारी।
पागलपन भी ऐसी भूल नही कर सकता ।
बुद्धि कभी भी इतनी भ्रष्ट नही हो सकती,
ग्रतर करने का सामर्थ्य न कुछ बाकी हो
दो ऐसी चीजो में जो विपरीत परस्पर।
बाँध ग्राँख पर पट्टी जिसने ग्रपने वश मे
किया तुम्हे, शैतान नही तो वह फिर क्या था ?
ग्राँख, कान, मुख, नाक, हाथ, दिल—कोई इद्रिय,
भले रुग्ण ही, जिसके होती, ठगा न ऐसे
जा सकता था । शर्म नही ग्राती है तुझको ?
कहाँ गई है लज्जा तेरी ?—ग्रो उत्पाती
नरक, ग्रगर तू ठडी हड्डी मे, ग्रधेड की,
काम-ग्रग्नि भडका सकता है, तो यौवन के
तप्त रक्त मे सारे सद्गुण मोम की तरह,
ग्रपनी ही ज्वाला मे जैसे, गल जाएँगे ।
जबकि बर्फ मे ग्राग उठी है, बुद्धि वासना
की दासी है, तब उद्दाम जवानी ग्रवगुण
कुछ करती तो, उठा न उँगली उसके ऊपर ।

रानी — ग्रो हैमलेट, ग्रागे मत कुछ कह । तूने मेरी
ग्राँखे मेरे ग्रतरतम की ग्रोर फेर दी,

और वहाँ मैं एसे काले काले धब्बे
देख रही हूँ जो न किसी से धुल पाएँगे।

हैमलेट — केवल इतना नही जो रही है तू गीजे
बिस्तर म दुर्गन्ध पसीने की भरने को
काम दग्ध विपयाभिसार करने को जसे
सुअर-सुअरिया अपने वाडे म करती हैं।

रानी — और नहीं अब ! ग न ग न हैं छुरे तुम्हारे
जो मेरे कानों का चीर डाल रहे हैं !
और न अब कुछ प्यारे हैमलेट !

हैमलेट — यह हत्यारा
बदनीयत बदमाश तुम्हारे पहले पति का,
सच मानो पासग नहीं है। शाह नहीं है
सिर्फ शेखचिल्ला है शासन और देश का
चार गिरहकट जिसने ऊँचे एक ताक से
बेशकीमती ताज उठाकर अपने सिर पर
बिठा लिया है।

रानी — और नहीं अब !

हैमलेट — यह राजा है
सिर्फ चीथडा और पैवद लगे कपडा का !

(भूत का प्रवेश)

रक्षा करनेवाले ओ नर्सागिक दूतो,
अपने डनो की छाया मे मुझको ले लो,
मुझे बचाओ — ओ करुणामय छाया तेरी
क्या इच्छा है ?

रानी — हाय पागलो की सी बातें यह करता है !

हैमलेट — क्या अपने आलसी पुत्र को नही डाँटने
तुम आए हो जो बेकार समय करता है,
जो बगैर पालन है मालूम नहीं तुम्हारी
आज्ञा पाले—भीषण और महत्त्वपूर्ण जो ?

बोलो, बोलो !

भूत : भूल न जाओ। प्रकट इस तरह होना मेरा,
धार तेज करने को है जो कुंद पड़ी है;
पर देखो अपनी माँ को, आश्चर्य-स्तब्ध है;
उनके औ' उनकी संघर्ष-लीन आत्मा के
बीच पड़ो तुम। जो दुर्बल हैं प्रबल कल्पना
झेल न पाते। हैमलेट, माँ से बात करो तुम।

हैमलेट : देवि, आपका जी कैसा है ?

रानी : हाय, तुम्हारा
जी कैसा है जो तुम अपनी आँख शून्य में
गड़ा रहे हो, सूनेपन से बातें करते ?
औ' घबराया दिल आँखों से झाँक रहा है।
और तुम्हारे सिर पर बैठे बाल अचानक
खड़े हो गए हैं जैसे सोते सिपाहियों
के खतरे का घंटा सुनकर, मानो साही
के काँटे हों। मेरे प्यारे बेटे, अपने
गुस्से की इस तपन और ज्वाला के ऊपर
धीरज का शीतल जल छिड़को। देख रहे क्या ?

हैमलेट : उनको, उनको ! देखो, आँखें कितनी पीली !
उनके इस दयनीय रूप को देख, जानकर
कारण उसका, जड़ पत्थर भी पिघल उठेंगे।—
ऐसे मेरी ओर न देखो ! कहीं करुण यह
दृष्टि तुम्हारी मेरी इस कठोर छाती को
मृदुल न कर दे। तब जो कुछ मुझको करना है
उसकी सूरत बदल जायगी। शायद होगा
रक्त की जगह केवल आँसू।

रानी : तुम किससे बातें करते हो ?

हैमलेट : क्या तुमको उस जगह नहीं कुछ दीख रहा है ?

रानी : कुछ भी नहीं सिवा उसके जो चीज़ वहाँ पर।

इसे मारने की जवाबदेही लेता हूँ।
एक बार फिर विदा मांगता हूं मैं तुमसे।
दयाभाव में कभी क्रूरता करनी पड़ती।
एक बात तुमसे कहना मैं और चाहता।

रानी
कहो मुझे जो कुछ करना है।

हैमलेट
ऐसा होना
नहीं चाहिए पर न लगे मेरा सिखलाया।
भले प्रलोभन दे कुप्प सा फूला राजा
तुमको बिस्तर में ले जाए गालों को
चंचल चुटकी से, भले पुकारे तुमको अपनी
मैना कहकर थूक सने होठों से चूम,
गदी भ्रष्ट उंगलियां मे गर्दन सहलाए
लेकिन राज उगलवा तुमसे कभी न पाए—
सचमुच पागल नहीं सिर्फ मैं बना हुआ हूं।
या यह बुरा न होगा तुम खुद उसे बता दो
जो रानी है बुद्धिमती, सुंदर संजीदा
उसको ऐसे पिल्ले बिल्ले चमगादड़ से
मनोविनोदी ऐसा राज छिपाने में किस
कारण भय हो ? कभी उसे भय हो सकता है ?
गोपनीयता रखने में जो समझ-बूझ है
उसे भूलकर तुम चाहो तो छत पर चढ़कर
उलट पिटारा दो, चिड़ियों को उड़ जाने दो,
और जानने को कि पिटारे के अन्दर क्या,
कथा प्रसिद्ध बन्दरिया सी अन्दर सिर डालो
औ उसमें फंसकर अपनी गर्दन तुड़वा लो।

रानी
कर विश्वास कि अगर बने हैं शब्द सांस से
सांस बनी है जीवन से तो जब तक जीवन
सांस न लूंगी इस बारे में जिसकी तूने
बात कही है।

हैमलेट : तुम्हे पता तो होगा इसका,
जाना है इग्लैंड मुझे ।

रानी . अफसोस मुझे है,
भूल गई थी, इसका निश्चय किया जा चुका ।

हैमलेट : कागज़ात पर मुहर लग चुकी, इनको लेकर
मेरे दो सहपाठी मेरे साथ जायँगे ।
इनपर मुझको उतना ही विश्वास कि जितना
विषदती साँपो के ऊपर । मेरे आगे-
आगे होगे नेता जैसे दाँव-पेच मे ।
चलने भी दो, खूबी इसमें, पहलवान को
उसके अपने ही दाँवो से चित कर देना ।
ऐसा करने मे कुछ मुश्किल तो होगी ही ।
मैं इनकी सुरग से अपनी डेढ हाथ
नीचे खोदूँगा, उन्हे उडा दूँगा चदा तक ।
वडा मजा आता है जब एक ही क्षेत्र के
दो गुणवनो की भिडत सीधी होती है !—
यह मनुष्य तो मुझे फँसा देनेवाला है,
मैं डालूँगा लाश साथवाले कमरे मे ।
नमस्कार ! मत्री वडबोला इस बेला मे
विल्कुल गुपचुप औ' विल्कुल गम्भीर बना है,
जीते मे, पर, यह मडभडिया वेवकूफ था—
आओ, श्रीमन्, तुम्हे ठिकाने कही लगाऊँ ।—
नमस्कार, माँ !

(दोनों अलग-अलग जाते है । हैमलेट पोलोनियस की
लाश घसीटता हुआ ले जाता है ।)

चौथा अक

पहला दृश्य

गढ का कमरा

(राजा रानी, रोज क्रान्ट्ज और गिल्डेन्सटन का प्रवेश)

राजा — इन उच्छ्वासो के पीछे कुछ राज छिपा है,
इन लबी ठडी आहो का अर्थ निकालो ।
इह समझना होगा हमको । प्रिये कहाँ है
पुत्र तुम्हारा ?

रानी — तुम कुछ देर अकेले हमको छोड सकोगे ?
(रोजेन्क्रान्ट्ज और गिल्डेन्सटन बाहर जाते है ।)
मेरे स्वामी आज रात मैंने क्या देखा !

राजा — क्या देखा गरट्रूड ? हाल क्या हैमलट का है ?

रानी — पागल है जस विक्षुब्ध समुद्र प्रभजन
जबकि प्रबलतर अपने को साबित करने को
दानो मे होडा होडी हो । पागलपन के
इस दौरे मे पर्दे के पीछे कुछ चलता
उसको लगता वह अपनी तलवार खीचता
चूहा चूहा चिल्लाता है और दिमागी
इस फितूर म पोलोनियस का वध कर देता—
वयोवृद्ध मत्री का—जो थे छिप आड म ।

राजा — कितना भीषण काड हुआ यह ! वहा अगर हम
होते होता हाल हमारा भी एसा हो ।

उसकी आज़ादी से सब लोगो को खतरा
है, तुमको, हमको भी औ' प्रत्येक व्यक्ति को ।
हत्या किसने की, क्यो, क्या हम बतलाएँगे ?
इसमे हाथ हमारा भी समझा जाएगा ।
दूरदर्शिता हममे होती तो इस पागल
नौजवान को हमे नियन्त्रण, काबू मे रख
दूर-अलग सबसे रखना था । पर उसके प्रति
इतना प्रेम हमारा था हम समझ न पाए
जो करना था । रोगी-जैसे हमने अपना
रोग छिपाया, उसको बढने दिया यहाँ तक
जान पड गई है खतरे मे । कहाँ गया वह ?

रानी : जिसको मारा उसके शव को दूर हटाने,
वह अपनी करनी पर आँसू बहा रहा है,
मृत शरीर के सिरहाने पागल-सा बैठा
वह मिट्टी के पास पडे सोने के टुकडे-
सा लगता है—शुद्ध, चमकता ।

राजा : प्रिये, चले हम !
इसके पूर्व कि सूर्य पहुँचता अस्ताचल पर
उसे यहाँ से विदा करेगे हम जहाज से,
और घृणित इस घटना का सामना करेगे,
पूरे अपने रोब-दाब से, और हादसे
का कुछ कारण ढूँढेंगे हम चतुराई से ।—
गिल्डेन्सटर्न, ज़रा सुनना तो ।

(रोजेन्क्राट्ज़ और गिल्डेन्सटर्न का प्रवेश)

दोनो मित्रो, कुछ लोगो को और साथ लो;
हैमलेट ने पागलपन मे वध, पोलोनियस का,
कर डाला है, और खीच ले गया लाश को
अपनी माता के कमरे से । उसको खोजो ।
उससे ऐसे बोलो वह न भडकने पाए;

मृत शरीर को गिरजे के अन्दर ले आओ।
देखो, काम बहुत जल्दी हो!
(रोजेन्क्राट्ज और गिल्डेन्सटर्न बाहर जाते है।)
चलो चल गरट्रूड और हम जल्द बुलाएँ
सबसे ज्यादा बुद्धिमान अपने मित्रो को
उन्हे बताएँ जो दुर्घटना आज घटी है
औ जो इस बारे म करना चाह रहे हैं।
बदनामी का भाडा जब फूटा करता है
तब उसम विष भरा हुआ जो काना से मुह
मुह से काना होता हुआ पहुच जाता है
इस दुनिया के काने काने। हमने कर ली
अगर पनाह दी थाडी सी, नाम हमारे
इस कलक से बच जाएगे। चलो चल हम
मेरे मन मे भरा हुआ है सशय भय भ्रम।
(दोनों बाहर जाते है।)

दूसरा दृश्य

गढ़ का दूसरा कमरा

(हैमलट का प्रवेश)

हैमलेट
: चला, ठिकान लगा।

रोजेन्क्राट्ज, गिल्डेन्सटर्न
: (भीतर) हैमलट! श्रीमत हैमलेट!!

हैमलट
: ऐं यह आवाज कसी! हैमलेट का कौन पुकार रहा है?
अच्छा ये लोग ये।
(रोजेन्क्राट्ज और गिल्डेन्सटर्न का प्रवेश)

रोजेन्क्राट्ज
: श्रीमन्, आपने पालोनियस की मिट्टी का क्या किया?

हैमलेट
: मिट्टी मिल गई मिट्टी म, जिसस उसका नाता है।

रोजेन्क्राट्ज
: हम बताइए कि वह कहाँ है कि हम उस गिरजे म ले जाएँ।

हैमलेट : इसका विश्वास मत रक्खो ।

रोज़ेन्क्रांट्ज़ : किसका विश्वास ?

हैमलेट : कि तुम्हारा भेद मैं छिपा रक्खूंगा और खुद अपना खोल दूंगा। अलावा इसके, जब एक जोक सवाल करे तब एक राजा का बेटा उसे क्या जवाब दे ?

रोज़ेन्क्रांट्ज . श्रीमन्, आप मुझे जोक समझते है ?

हैमलेट : बिल्कुल, जोक, जो एक राजा का रक्त चूसती है और इसके लिए बख्शीश पाती है और फिर उसी पर रग जमाती है । लेकिन तुम-ऐसे अफसर राजा के सबसे ज्यादा काम आते है । जैसे बदर, वह उनको अपने जबडे के कोने मे रखता है; और पहले तो उन्हे मुँह लगाता है, लेकिन बाद को निगल जाता है । जब राजा को उसकी ज़रूरत होगी, जो तुमने चूसा है, तो उसे तुम्हे सिर्फ निचोड़ना भर होगा; और तब जोक फिर सूखी की सूखी रह जाएगी ।

रोजेन्क्रांट्ज . श्रीमन्, आपकी बात मेरी समझ में नही आई ।

हैमलेट : मुझे खुशी है इस बात की । जब चालाक की बात बेवकूफ के कानो मे पडती है तो उन्हे सुन्न कर देती है ।

रोजेन्क्राट्ज श्रीमन्, हमे बताएँ कि मिट्टी कहाँ है, राजा जानना चाहते है; और हमारे साथ उनके पास चले ।

हैमलेट . राजा खुद मिट्टी है, लेकिन मिट्टी राजा नही है। राजा एक चीज है--

गिल्डेन्सटर्न : 'चीज' श्रीमन् !

हैमलेट : ना-चीज, ले चलो मुझे उनके पास । छिपी लोमड़ी, कुत्ते ढूंढे ।

तीसरा दृश्य

गढ का दूसरा कमरा

(कुछ दरबारियों के साथ राजा का प्रवेश)

राजा उसका पता लगाने को औ मिटटी का भी
हमने लोगो को भेजा है। बात बडे ही
खतरे की है कि यह आदमी आजादी से
घूम रहा है। इसे रोकना हमें चाहिए
पर इसपर कानून कडा लगवाने मे हम
झिझक रहे है असमझ जनता का वह प्यारा
जिसमे नही विवेक, महज आँखें होती हैं।
यहा दड जो अपराधी को दिया गया है
देखा जाता पर अपराध न अपराधी का।
जब कोई गडबडी नहीं सब ठीक ठाक है,
अगर हटाया गया अचानक उसे यहा से
लोग कहेंगे, इसमे कोई खास बात है।
रोग बडा जितना उतनी ही कडुई भेषज
म वह अच्छा हो पाता है या फिर अच्छा
कभी न होता।

(रोजेन्क्राट्ज का प्रवेश)

अच्छे तो हो ? पता लगा कुछ ?

रोजेन्क्राट्ज पोलोनियस की लाश कहाँ पर है यह श्रीमन्
उसने हमको नही बताया।

राजा किन्तु कहाँ वह ?

रोजेन्क्राट्ज बाहर श्रीमन् सतरिया के पहरे मे है
आप उसे जसी आज्ञा दें।

राजा उसे हमारे आगे लाओ।

रोजेन्क्राट्ज गिल्डन्स्टर्न लिवा लाओ श्रीमन हैमलेट

को कमरे मे ।

(हैमलेट और गिल्डेन्सटर्न का प्रवेश)

राजा : सुनो, हैमलेट, पोलोनियस कहाँ है ?

हैमलेट : खाने की मेज पर ।

राजा : खाने की मेज पर ! कहाँ ?

हैमलेट : जहाँ वह खा नही रहा है, खाया जा रहा है, राजनीतिज्ञ की काया से उत्पन्न होनेवाला एक खास तरह के कीडो का दल उसपर महा-महोत्सव मना रहा है ।
आपका कीडा ही आपकी खाने की मेज का खानेजहाँ है । हम सब जानवरो को खिला-पिलाकर मोटा करते है कि उन्हे खाकर हम मोटे हो सके, और हम खा-पीकर मोटे होते है कि हमे कीडे खा सके । आपका मोटा राजा और दुबला रक बस दो प्रकार के व्यजन है दो तश्तरियाँ, पर एक ही मेज पर सजी और यही पर इत्यलम् ।

राजा : बडा अफसोस होता है ।

हैमलेट : मुमकिन है कि जिस कीडे को कटिया मे लगाकर कोई आदमी मछली फँसाता है, उसने किसी राजा का मांस खाया हो, और जो मछली वह खा रहा हो उसने किसी ऐसे कीड़े को ।

राजा : तुम्हारा मतलब क्या है ?

हैमलेट : सिर्फ यह बताना कि किस प्रकार एक बादशाह एक फकीर की अँतडियो मे पहुँच सकता है ।

राजा : पर पोलोनियस कहाँ है ?

हैमलेट : स्वर्ग मे, किसी को भेज दीजिए, देख आए, और अगर वह आपके दूत को वहाँ न मिले तो उसे नरक मे खोजने को आप खुद जा सकते है । लेकिन अगर वह आपको महीने भर के अन्दर न मिला तो उसकी दुर्गन्ध आपको ऊपर वाली दालान में मिलेगी ।

राजा : (नौकरों से) जाओ, वहाँ तो देखो ।

हैमलेट : तुम्हारे पहुँचने तक वह बैठा रहेगा ।

(नावर बाहर जाते हैं।)

राजा हैमलेट, तुमने जो कर डाला उसपर हमको
बडा दुख है और तुम्हारी रक्षा की उतनी
ही चिन्ता। तुम्हें यहा से जितनी जल्दी
सभव हो चल देना होगा। तयारी तुम
फौरन कर लो। है जहाज तयार हवा का
रुख माफिक है साथ के लिए साथी भी है।
इंग्लिस्तान चल जाने में नहीं रुकावट
कोई तुमको।

हैमलेट इंग्लिस्तान?

राजा वहीं जाना है।

हैमलेट जसी आज्ञा!

राजा पर आज्ञा के पीछे कुछ उद्देश्य हमारा।

हैमलेट मैं एक स्वर्गदूत देख रहा हू और वह आपका उद्देश्य देख रहा है—लेकिन अब तो इंग्लिस्तान के लिए प्रस्थान करूँ—विदा मा!

राजा तुम पिता के कितने आज्ञाकारी बेटे हो हैमलेट!

हैमलेट माता का। पिता और माता नर और नारी हैं न? और नारी और नर अर्द्धनारीश्वर हैं—एक शरीर—इसलिए माता का—तो इंग्लिस्तान के लिए प्रस्थान।

(बाहर जाता है।)

राजा तुम भी पीछे पीछे जाओ और प्रलोभन
देकर जल्दी ही जहाज पर उसे चढ़ाओ।
करो न देरी आज रात ही उसे यहाँ से
मुझे टालना। जाओ। जो पत्रादि जरूरी
मुहरबन्द तयार हो चुके। जल्दी जाओ।

(रोजेन्क्रान्ट्ज और गिल्डन्स्टर्न बाहर जाते हैं।)

(स्वगत) इंग्लिस्तान तुझे मेरे प्रति प्रेम अगर है—
होना ही चाहिए प्रीति भय से होती है,

औ' मेरी ताकत का लोहा मान चुका तू,
तेरे तन पर डेन-मारका तलवारो के
घाव आज भी ताजे है, पुर नही सके है,
जिनसे आतकित हमको तू शीश झुकाता—
हो न उपेक्षित यह शाही फरमान हमारा,
जिसमे साफ खुले शब्दो मे कहा गया है—
किसी तरह वध करा दिया जाए हैमलेट का।
चूक न इसमे होने पाए। यह न हुआ तो
मेरी छाती कभी न ठण्डी हो पाएगी,
मेरे जी की जलन मिटानी होगी तुझको,
वह जाएगा, तभी चैन आएगा मुझको।
(बाहर जाता है।)

चौथा दृश्य

डेनमार्क का एक मैदान

(कप्तान और मार्च करते हुए सैनिकों के साथ फोर्टिनब्रास का प्रवेश)

फोर्टिनब्रास : (कप्तान से) डेनराज को जाकर मेरा अभिवादन दो;
कहो कि, पहले के करार पर, डेन-देश मे
होकर के अपनी सेनाएँ ले जाने को
फोर्टिनब्रास आपकी अनुमति माँग रहा है।
तुम्हे पता है हमे किस जगह पर मिलना है।
महामहिम राजा यदि मुझसे मिलना चाहे,
तो मै स्वय उपस्थित होकर उनके आगे,
उनके प्रति सम्मान यथोचित व्यक्त करूँगा।

कप्तान : जैसी आज्ञा !

फ़ोर्टिनब्रास : जाओ, पर तेज़ी न दिखाओ।

(फोर्टिनब्रास और सैनिक बाहर जाते है।)

(हैमलेट, रोजेन्क्राट्ज, गिल्डेन्स्टर्न और अन्य लोगों का प्रवेश)

हैमलेट कहिए, किसकी सेनाएँ हैं ?
कप्तान श्रीमन, य नारवे राज की।
हैमलेट कहाँ जा रही है ? किस कारण ?
कप्तान पाल-देश क एक भाग पर कब्ज़ा करने।
हैमलेट और कौन सेनानायक है ?
कप्तान फार्टिनब्रास भतीज वृद्ध नारव पति क।
हैमलेट कब्ज़ा पूरे पाल देश पर करना है या
केवल सीमा के प्रदेश पर ?
कप्तान सत्य कहू तो डींग मारने म क्या रक्खा
हम छोटा सा भूमि भाग हथियाने जात
और लाभ जो होना उसस नाम मात्र ह
उसपर खेती पाँच टक मे भी महगी है
पाल देश नारवे उसे कोई भी बेच
नहीं मिलेगा कोइ ज्यादा देनवाला।
हैमलेट पोल निवासी तब न लडगे उसकी खातिर।
कप्तान मगर, उधर भी सेनाए तयार खडी हैं।
हैमलेट खर्च हजारो होंगे, औ सकडो मरेंगे
तृण भर धरती का सवाल हल हो न सकेगा।
सुख समृद्धि म जहर जमा कुछ एसा होता
जो कि फूटता अन्दर अन्दर बाहर से कुछ
पता नहीं लगता मनुष्य क्यो मर जाता है।
धन्यवाद है।
कप्तान भला करे भगवान आपका ! (बाहर जाता ह।)
रोजन्क्राटज श्रीमन, चलिए।
हैमलेट अभी आ रहा अभी चलो तुम आगे आगे।
(हैमलट को छोड़कर सब चल जाते ह।)
(स्वगत) सब घटनाए धिक्कारा मुझको करती है
औ' बदला लन की मरी सुप्त भावना

को उकसाती। पेट भाठ कर सो रहने में
अपनी उम्र गँवानेवाला भी मनुष्य है !
वह मनुष्य है तो पशु की परिभाषा क्या है ?
निश्चय ही, जिसने हमको वह मन शक्ति दी,
हम अतीत को तोले औ' भेदे भविष्य को,
उसने ऐसी दिव्य बुद्धि, ऐसी सक्षमता
इसीलिए तो हमे नही दी, कुछ भी उनसे
काम न लेकर, मिट्टी मे हम उन्हे मिला दें।
मुझे नही मालूम कि जब है न्याय पक्ष में
मेरे, मुझमे इच्छा-बल है, और शक्ति है,
साधन भी है, काम खत्म कर डाला जाए
तब मै इतना ही कहने को क्यो जीता हूँ,
'काम मुझे यह करना होगा'। ऐसा क्यो है ?
यह पशु की विस्मरण शक्ति या कादर मन का
यह कोई सकोच, सोचने के कारण जो
हद से ज्यादा बारीकी से किसी बात पर
जग उठता है। जो सोचा करता मैं, उसका
अगर करूँ विश्लेषण तो उसका चौथाई
भाग बुद्धिमत्ता निकलेगी, शेष बुजदिली।
माटी-जैसी ठोस मिसाले मुझे जगाती,
सजी हुई इस भारी सेना को ही देखो,
जिसका नायक सुदर-कोमल राजपुत्र है,
जिसका मन दैवी महदाकाक्षा-प्रफुल्ल है,
जो करता उपहास अदेखो घटनाओ का,
और मर्त्य औ' क्षणभगुर अपनी काया से
मृत्यु, भाग्य, खतरो को अभय चुनौती देता,
केवल उसके लिए कि जो दमडी मे महँगा।
सही बडप्पन यही कि जब तक कोई कारण
बडा उपस्थित न हो, न अपना हाथ उठाए,

किन्तु जहाँपर अपनी इज्जत का सवाल हो,
वहाँ एक तृण के ऊपर भी जान लडा दे।
क्या मैं कभी बडप्पन का दावा कर सकता?
मेरे पूज्य पिता का वध कर दिया गया है,
माँ पर धब्बा लगा हुआ है मन आघात है
खून खौलता पर मेरे सब अंग शिथिल है।
मुझे चाहिए लज्जा से सिर नीचा कर लू
जबकि देखता हू कि हजारा जान हथेली पर
लेकर बढते जाते है जो कि किसी की
सनक किसी की नामवरी के लिए कब्र म
ऐसे जाने को उद्यत जसे साने को
जो ऐसे भू भाग के लिए लडने जाते
जिसपर इतने नही खडे भी हो सकते हैं
और समर मे मरे हुआ की कब्र के लिए
भी जो काफी सिद्ध न होगा। इसी समय से
विदा इरादा खूनी मेरा लेता भय से।

(बाहर जाता है।)

पाचवाँ दृश्य

एलसिनोर गढ का एक कमरा
(रानी हॉरेशियो और एक भद्र पुरुष का प्रवेश)

रानी — उससे बात नही कर सकती।

भद्र पुरुष — वह घबराई है सचमुच दुख से पागल है
उसे आपके सवदन की आवश्यकता।

रानी — वह मुझसे क्या चाह रही है?

भद्र पुरुष — अपने वृद्ध पिता की बात बहुत करती है।
कहती, उसके काना म गूजता कि दुनिया
चालबाज है और पीटती अपना छाती।

चलती है तो पाँवो से तिनके ठुकराती;
सदेहो में डूबी-डूबी बाते करती,
जिनका आधा अर्थ नही पल्ले पडता है।
उसके शब्दो के अन्दर कुछ सार नही है,
पर उनका अनगढ प्रयोग भी श्रोताओ को
जोड-तोड कुछ करने को प्रेरित करता है;
वे अटकलबाजी करते है औ' शब्दो को
खीच-तान अपने विचार उनमे बिठलाते;
औ' फिर उसके पलक झँपाने, शीश हिलाने,
मुद्राओ से, लोग सोचते सचमुच उनमें
कुछ विचार है, गो वे साफ नही है तो भी,
बात खेद की, उनमे आँका बहुत गया है।

होरेशियो : अच्छा होगा उससे बातें कर ली जाएँ,
वर्ना वह विष से अभिसिंचित मस्तिष्को मे
खतरनाक अटकल के बीज रहेगी बोती।

रानी : तो उसको अन्दर ले आओ।

(भद्र पुरुष बाहर जाता है।)

(स्वगत) मेरे अपने से ही ऊबे-ऊबे मन को,—
पाप भयातुर अपने से ही इतना रहता—
हल्की भी हर चीज किसी भारी विपत्ति की
पूर्व-पीठिका-सी लगती है, पापी को जो
होता है सदेह स्वय पर छिपा न रहता—
पाप, छिपाने मे अपने को कितना कच्चा!—
इस डर से कि न पकडा जाए, वह अपने को
पकडा देता।—

(भद्र पुरुष का ओफीलिया के साथ प्रवेश)

ओफीलिया : कहाँ रूप की रानी मानी डेन-देश की?

रानी कैसी हो, ओफीलिया?

ओफीलिया : (गाती है) मैं कैसे जानूँ, अलग सभी से

तेरा प्रेमी रसिया छल छबीला ?
सिर तिरछी टोपी, छड़ी हाथ मे,
और पाँव मे जूता है चमकीला !

रानी
हाय सुकुमारी ओफीलिया इस गीत का मतलब क्या है ?

ओफीलिया
कुछ कहा ? नही कुछ और सुनिए
(गाती है) वह चला गया इस दुनिया से, इस दुनिया से
वह पड़ा हुआ है मरकर।
उसके सिरहाने हरी घास है हरी घास है
पताने है पत्थर।

रानी
ओ हो ।

ओफीलिया
पर ओफीलिया —
आप कृपाकर सुनतो जाए
(गाती है) उसके शव पर कफन कि जसे
हो सफद हिम की चादर—

रानी
(राजा का प्रवेश)

ओफीलिया
बड़ा दुख है मेरे स्वामी इसे देखिए।
रग बिरगे, ताज़ ताज़
फूल सजे उसपर सुदर,
गया कब्र म सोने जब वह
नहीं गिरे तब उसके ऊपर
प्रमी के आँसू झर झर !

राजा
कसी हो सुदरी ?

ओफीलिया
अच्छी भगवान आपका बहो त दे। सुना है कि उल्लू की बीवी बावर्ची की बेटी थी। मालिक हम यह तो जानते हैं कि हम क्या है पर हम क्या होगे यह नही जानत।

राजा
भगवान आपका महमान हो।
इन बेमाना बाता क पीछे है पिता का सदमा।

ओफीलिया
कृपया इसक बारे मे एक शब्द मत कहिए। मगर जब लाग पूछें कि इसक मानी क्या हैं ता उनस कहिए—

(गाती है) कल दिन सत वलताइन का,
उठकर मुँह-अँधियारे,
मै सुकुमारी सजी-सँवारी
पहुची द्वार तुम्हारे।
तुमने उठकर कपडे पहने,
फिर खोला दरवाजा,
औ' नयनो से किया इशारा,
आजा, अंदर आजा।
मैंने अपने भोलेपन मे
मानी वात तुम्हारी।
गई कुमारी अंदर, वाहर
निकली, पर, न कुमारी।

राजा : सुदरी ओफीलिया!

ओफीलिया . सच, हाँ, कसम तो न खाऊँगी, पर इसे पूरा करके ही छोड़ूँगी।

(गाती है) साखी प्रभु है और संत है,
मै लज्जा की मारी;
यौवन का यह खेल नही है,
भारी जिम्मेदारी।
"तुमसे मै कर लूंगा शादी"—
तुमने वात भुला दी;
वह उत्तर देता है,
"आज वनाता पत्नी तुमको,
कल न अगर तुम आती।"

राजा · कव से इसकी हालत ऐसी है ?

ओफीलिया . मैं समझती हूँ, सव ठीक होगा। हमको धीरज रखना चाहिए, लेकिन जव मै सोचती हूँ कि लोगो ने उसे ठण्डी ज़मीन मे गाड दिया, तव मैं अपने आँसुओ को नही रोक पाती। मेरे भाई को इसका पता जरूर लगेगा, और अव आपकी नेक

सलाह के लिए धन्यवाद—लाओ मेरी गाड़ी !—नमस्ते
देवियो नमस्ते ! भद्र महिलाओ, नमस्ते, नमस्ते !

(बाहर जाती है।)

राजा इसके पीछे जाओ इसपर आँख रक्खो।

(होरेशियो बाहर जाता है।)

ओह जहर यह दिल पर भारी सदमे का है
मृत्यु पिता की इसको पागल बना गई है।
ओ गरट्रूड नहीं आता है दुःख अकेला
उसकी पूरी सेना धावा बोला करती।
देखो पहले पोलोनियस की मौत हो गई
फिर विदेश को चला गया है पुत्र तुम्हारा—
उसे ठीक ही हटवाया है उसके हिंसा
पूर्ण कृत्य ने—और भलेमानस पोलोनियस
के मरने पर लोग नासमझ मोटी जिनकी
बुद्धि विचारों के खोटे जो, तरह-तरह की
काना फूसी करते फिरते हमने अपनी
नादानी में लुका छिपाकर उसे गडाया
औ बेचारी ओफीलिया की बुद्धि छोड़कर
उसे न जाने कहाँ गई है बुद्धिहीन हम
पशु है या फिर बस चलती फिरती तस्वीर।
और अंत में सारी विपदाओं से बढ़कर
उसका भाई जो रहता था फ्रांस देश में
छिप छिप घर को लौटा है सुना गया है
वह घबराया खोया खोया-सा रहता है,
और चुगलखोरों की कोई कमी नहीं है
जो उसके सम्मान्य पिता की मृत्यु से जुड़ी
झूठी सच्ची जहरीली बातों से उसके
कानों को भरते रहते हैं। जब सबूत कुछ
उन्हें न मिलता तब सब दोष हमारे ऊपर

मढकर उसको कान-कान मे पहुँचाते वे
नहीं झिझकते। मेरी प्यारी, ऐसी खबरे,
तोपो के गोले फटने से छर्रे-जैसे,
जगह-जगह पर मेरी हत्याएं करती है।
(भीतर शोर होता है।)

रानी : है ! ये कैसी आवाजे है ?

राजा : स्विस सिपाहियो
को बुलवाओ; वे दरवाजो पर डट जाएँ !
(दूसरे भद्र पुरुष का प्रवेश)

भद्र पुरुष : श्रीमन्, अपनी रक्षा करिए !—
उद्धत लायरटीज उपद्रवकारी जनता
का नेता बन डेन-राज के हुक्कामो पर
टूट पडा है, जैसे सागर अपनी सीमा
लाँघ, तेज तूफानी गति से तट पर टूटे।
हुल्लड़बाज उसे अपना राजा कहते है,
औ' प्रस्तावक और समर्थक हो जैसे वे
ही हर पद के, गला फाडकर चिल्लाते हैं—
'लायरटीज हमारा राजा, हमने माना !'—
मानो दुनिया अभी शुरू होनेवाली है,
भुला दी गई परपराएँ, उठा दी गइ
रीति-नीतियाँ, हाथ उठा, टोपी उछालकर
अबर-भेदी स्वर मे वे उद्घोषित करते,
'लायरटीज हमारा राजा—डेन देश का !'

रानी : कितने जोरो से वे नारे गलत लगाते !—
गलती पर हो, ओ तुम झूठे डेनी कुत्तो !
(भीतर शोर होता है।)

राजा : लो, अब दरवाजे भी टूटे !
(तलवार हाथ मे लिये हुए लायरटीज का प्रवेश।
उसके पीछे डेनमार्क की जनता है।)

लायरटीज राजा है किस जगह ?—आप सब बाहर रहिए।
डेनमार्क निवासी नहीं, हम अ न्दर आन द।
लायरटीज कृपया थोड़ा
समय मुझे दें।
डेनमार्क निवासी हम देत है। हम दते हैं।
(वे दरवाजे के बाहर चले जाते हैं।)
लायरटीज धन्यवाद है दरवाजा को छके रहिए।—
ओ तू दुष्ट कमीने राजे वापस मेरा
पिता मुझे दे।
रानी अच्छे लायरटीज शान्त हो।
लायरटीज इतने पर भी शान्त रहूँ तो रक्त नसों का
आज पुकार पुकार कहेगा मुझे हरामी
ओ नामर्द पिता का, माता का हरजाई
जिनके निष्कलंक माथे पर वह कलंक का
टीका देगा।
राजा लायरटीज वजह क्या है जो
तू गुस्से मे आग भभूका होता जाता।—
तुम, गरटू ड उसे मत रोको चिंता मेरे
लिए करो मत। राजा की रक्षा करने को
दिव्य शक्ति ऐसी उसका घेर रहती है,
द्रोह दूर से चाहे जितना ताके भाके,
निकट पहुँचकर कभी नहीं उसको छू सकता।—
लायरटीज, बता क्या इतना गर्माया है ?—
आने दो गरटू ड उसे तुम।—बतला तो कुछ।
लायरटीज पिता कहाँ ?
राजा मर गए।
रानी नहीं राजा ने मारा।
राजा उसे पूछने दो जो चाहे।
लायरटीज मरे किस तरह ? मैं सीधा जवाब चाहूँगा।

सिंहासन के प्रति निष्ठा जा विष्ठा खाए,
आग लगे सब राज-भक्ति की सौगधों में,
और भाड मे जाए शील, विवेक, विनय सब।
नरक मिले मुझको, इसकी परवाह नहीं है।
अब तो मैं बस एक बात पर तुला हुआ हूँ—
लोक और परलोक नष्ट हों, चाहे जो हो—
जिसने मेरे पूज्य पिता की हत्या की है
उससे पूरा बदला लेकर ही मानूँगा।

राजा : बात किसी की तो मानोगे ?

लायरटीज़ : दुनिया भर मे नही किसी की, केवल अपनी।
औ' मैं अपने यत्किंचित् साधन का ऐसे
कौशल से उपयोग करूँगा, व्यय थोडा हो,
लाभ अधिक हो।

राजा : लायरटीज, सुनोगे मेरी ?
अपने पूज्य पिता की हत्या से सबंधित
सारी बाते ठीक जानना तुम चाहोगे,
पर बदला लेने मे इतने अधे होगे,
दोस्त और दुश्मन मे अतर नही करोगे ?
जुआबाज तब तो तुम ऐसे साबित होगे,
हारे, जीते—सबको गिनता एक तरह जो।

लायरटीज़ : सिर्फ दुश्मनो से लोहा लेना चाहूँगा।

राजा : पहले उनको पहचानो तो ?

लायरटीज़ : जो हैं उनके
दोस्त, उन्हे मिलने को ऐसे अपनी बाँहे
फैलाऊँगा। और पसीना जहाँ गिरेगा
उन मित्रो का, ख़ून बहा दूँगा मैं अपना।

राजा : ठीक, बात अब तुमने की है जैसे अच्छे
लडके, सच्चे और भलेमानस करते हैं।
यह तो दिन की तरह साफ है, यदि विवेक से

देख सका तुम इस हत्या म मेरा कोई
हाथ नही है, सत्य, तुम्हारे वृद्ध पिता की
दुखद मृत्यु से मुझे बडा सदमा पहुँचा है।

डेनमार्क निवासी आने दो आने दो उसको।

लायरटीज यह गुल कसा ?

(ओफीलिया का पुन प्रवेश पीछे पीछे होरेशियो है।)

इसकी ऐसी दशा देखने से यह ज्यादा
अच्छा होता, इतनी गर्मी पड़ती, इतनी
यह दिमाग मेरा उड जाता। आँसू खारे
इतने होते, इतने, उनसे आँखों की सब
चमक, चेतना और भावना ही मिट जाती ?
साक्षी हो भगवान कि तेरे पागलपन का
भीषण बदला लिया जायगा।—ओ बसत की
कली कुमारी प्यारी, ओ बहना ओफीलिया !—
ओ परमेश्वर ! क्या यह सभव, एक नवसवय
सुकुमारी की बुद्धि इस तरह नत जजर हो,
जस होती देह वृद्ध का।—प्रेम प्रकृति का
वरद हस्त है। जो इसके नीचे रहता है
उसके ऊपर वह बहुमूल्य विभव वभव की
वर्षा करता।

ओफीलिया (गाती है) लोग ले गए, बिना ढके मुख, उसका टिकठी के
ऊपर
नना न-नाना, नना न नाना नना न-नाना
ना ना-ना,
और कब्र मे उसकी, बरसे बहुतो के आँसू भर भर !
ओ बन पाखी, विदा, विदा !

लायरटीज तू सचेत होती औ मुझको प्रेरित करती
बदला लेने को तो भी मैं नहीं प्रभावित
इतना होता जितना तेरी दशा देखकर

आज हुआ हूँ।

ओफीलिया : तुम सबको घूम-घूमकर गाना चाहिए—'चाई-माईं अता, घुमरी बसता'। देखो, कैसा चक्कर बन जाता है। वह झूठा खान-सामा था जो अपने मालिक की बेटी भगा ले गया।

लायरटीज़ : इन नि:सार बातों मे कम सार नही है।

ओफीलिया : (लायरटीज से) यह रोज़मरी का फूल है, याद दिलाने के लिए; देखो, प्यारे, मुझे याद करना, और यह पैंजी का फूल है, ख्याल रखने के लिए।

लायरटीज़ : यह पागलपन का पाठ है जिसके साथ ख्याल रखना और याद करना जुडे है।

ओफीलिया : (राजा से) तुम्हारे लिए यह फेनेल का फूल है, और कोलवाइन भी, (रानी से) तुम्हारे लिए रयू का फूल है; और यह रयू मेरे लिए है; हम इसे रविवार के पवित्र दिन की बूटी भी कह सकते है, पर हम-तुम इसे अलग-अलग भावो से लगाएँगी। (होरेशियो से) यह लो डेज़ी का फूल, मैं तुम्हे कुछ वायलेट के फूल भी देती, लेकिन मेरे पिता के मरने पर वे सब सूख गए, सुनती हूँ उनका अत अच्छा हुआ, —(गाती है) 'मेरे प्रियतम, मेरा तन-मन-धन सब तेरा !'

लायरटीज़ : नरक-तुल्य आघात, वेदना, चिंता को भी
कैसा कर अनुकूल बनाया सुदर इसने !

ओफीलिया : (गाती है) क्या न कभी फिर आएगा ?
क्या न कभी फिर आएगा ?
वह दुनिया से चला गया,
मृत्यु-सेज पर तू भी जा;
वह न कभी फिर आएगा।
दाढ़ी उसकी हिम-सी श्वेत,
सन-से उसके सिर के बाल;
चला गया वह, चला गया;
रोनेवाला छला गया।

उसपर हों भगवान कृपाल,
उसे शरण दें दया निकेत !
और सब पुण्यात्माओं के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं।
भगवान तुम्हारा भला करे !

(बाहर जाती है।)

लायरटीज़ हे परमेश्वर क्या तू यह सब देख रहा है ?

राजा लायरटीज़ अगर मुझको तुम अपने दुख का
भागीदार नहीं समझोगे तो तुम मेरे
हक से वंचित मुझे करोगे। जाओ चुन लो
अपने ऐसे मित्रों को जो सबसे ज्यादा
बुद्धिमान हों और सुन वे बात हमारी,
और तुम्हारे मेरे बीच वही निर्णय दें।
यदि वे देखें इस हत्या में हाथ हमारा
या उसकी साजिश में हमको शामिल पाएं
तो संतुष्ट तुम्हें करने को मैं दे दूंगा
राजपाट, सिंहासन जीवन—सब जो मेरा
लेकिन ऐसी बात न हो तो तुम धीरज से
सुनो मुझे जो कुछ कहना है। साथ साथ हम
दोनों मिलकर कोई ऐसा काम करेंगे
जो तुमको संतुष्ट कर सके।

लायरटीज़ ऐसा ही हो।
कैसे उनकी मृत्यु हुई है ? क्या चोरी से
उनको दफना दिया गया है ? क्या समाधि पर
खड्ग विजय का चिह्न निशानावाला पत्थर
नहीं लगा है ? क्या कोई संस्कार यथोचित
हुआ न उनका और न कोई बाह्य प्रदर्शन ?—
ये सवाल हैं जिनको चिल्ला चिल्लाकर के
धरा पूछती गगन पूछता समुचित उत्तर
इनका मैं पाना चाहूंगा।

राजा : पाओगे भी,
जो अपराधी होगा उसको सजा मिलेगी।
आओ मेरे साथ, कृपा कर।

छठा दृश्य

गढ़ का दूसरा कमरा

(होरेशियो और एक नौकर का प्रवेश)

होरेशियो : कौन लोग हैं, मुझसे मिलना चाह रहे हैं?

नौकर : नाविक, श्रीमन्, जो कहते हैं, पत्र आपके
लिए कही से वे लाए हैं।

होरेशियो : अन्दर भेजो। (नौकर बाहर जाता है।)
यदि श्रीमत हैमलेट का यह पत्र नही है,
नही जानता, किसने मुझको, और कहाँ से
याद किया है।

(नाविकों का प्रवेश)

पहला नाविक श्रीमन्, भगवान आपका भला करे।

होरेशियो वह तेरा भी भला करे।

पहला नाविक निश्चय करेगा, श्रीमन्, अगर उसकी मर्जी हुई। आपके नाम
एक पत्र है, श्रीमन्,—उस राजदूत की ओर से जो
इँग्लिस्तान जा रहा था—अगर आप ही का नाम
होरेशियो है, जैसा कि मुझे बताया गया है।

होरेशियो : (पढता है) 'होरेशियो, इस पत्र के मिलने पर तुम इन लोगों
के महाराज तक पहुँचने का कोई उपाय कर देना। उनके लिए
भी ये पत्र लाए हैं। हमे यात्रा आरभ किए अभी दो दिन
भी न हुए थे कि एक बड़े लडाकू समुद्री डाकू ने हमारा पीछा
किया। चूंकि हमारी नौका आगे नही निकल सकती थी,
इसलिए हमे उससे टक्कर लेनी ही पडी, और मार-धाड़ मे

मैं उसकी नौका में जा गिरा। देखते ही देखते वह हमारी नौका से दूर चली गई और इस प्रकार मुझ अकेले को उन डाकुओं ने अपना बंदी बना लिया, पर उन्होंने मेरे साथ भल मनसी का व्यवहार किया है और इसके बदले में वे समान व्यवहार की प्रत्याशा करते हैं। मैं भी उनके साथ कुछ भलाई करना चाहता हूँ। जो पत्र मैंने भेजे हैं वे महाराज को मिल जाएँ, और तू मेरे पास चला आ—इतनी तेजी से कि जैसे तू मौत से भाग रहा हो। मुझे तेरे कानों में जो कहना है उसे सुनकर तेरे होश हवास गुम हो जाएँगे। फिर भी अर्थों की गम्भीरता देखते हुए मेरे शब्द बहुत हल्के फुल्के हैं। ये भले लोग तुझे मेरे पास ले आएँगे। रोजन्क्राट्ज और गिल्डेन्स्टर्न इंगलिस्तान की ओर जा रहे हैं। उनके विषय में भी मुझे बहुत कुछ कहना है। विदा।

तेरा अपना ही—हैमलेट

चलो तुम्हारे इन पत्रों को पहुँचाने की
राह बता दूँ, करो काम पूरा यह जल्दी,
जिससे जल्दी तुम मुझको उस तक पहुँचा दो
जिसने तुमको पत्र दिये थे।

(सब बाहर जाते हैं।)

सातवाँ दृश्य

गढ़ का दूसरा कमरा

(राजा और लायर्टीज का प्रवेश)

राजा

अब तो दृढ़ हो गया तुम्हें मैं निरपराध हूँ
औ अब मन का मीत मुझे तुम अपना समझो।
कान से लकर तुमने सारी बातें सुन ली,
जो कि तुम्हारे नेक पिता का हत्यारा है
वही पड़ा था मेरे प्राणों के पीछे भी।

लायरटीज़ : ज़ाहिर ऐसा ही होता है। किन्तु आपने
इन अपराधो के विरुद्ध कुछ किया नही क्यो,
जो इतने भीषण थे, जो इतने जघन्य थे,
जबकि बुद्धिमानी, रक्षा भी स्वय आपकी,
और बहुत-सी बातो के अतिरिक्त, आपको
इसी ओर प्रेरित करती थी ?

राजा · कारण उसके
दो विशेष थे, तुमको लग सकते साधारण,
किन्तु निकट मेरे वे कारण थे महत्त्व के,—
रानी, उसकी माता जीती उसे देखकर,
औ' सबध जहाँ तक मेरा, तुम इसको गुण
समझो, चाहे अवगुण समझो, तन से, मन से
मैं उनसे इस भाँति जुडा हूँ, अलग नही जा
सकता उनसे, जैसे तारे अपना-अपना
वृत्त छोडकर। और दूसरा कारण, जिसने
खुली कार्रवाई करने से मुझको रोका,
यह था, जनता उसको प्यार बहुत करती है।
प्रेम दोष के अदर भी गुण देखा करता,
सुना, किसी चश्मे का पानी लकडी को
पत्थर कर देता; उसी तरह से जनता उसके
उत्पाती कामो को उसका शील बताती,
और धनुष से मेरे छोड़े तीर निशाने
पर न पहुँचकर, जोर-शोर की इस आँधी में,
केवल तुक्के साबित होते।

लायरटीज़ और नतीजा
मेरे सिर से नेक पिता का हाथ उठ गया
औ' मेरी सुकुमार बहन पागल बन बैठी;
जब करता हूँ याद पूर्व गुण उसके सारे
तो लगता है उनके बल पर पूरे युग को

वह पर्वत पर खड़ी चुनौती सी देती है।
लेकिन इसका बदला मैं लेकर छोड़ूंगा।

राजा
नींद हराम करो मत अपनी इसके कारण
और न सोचो हम बस माटी के घोंघे हैं
जिनकी जो जब चाहे दाढ़ी मूछ हिलाए।
खेल बड़ा ही खतरनाक यह साबित होगा।
मैं जल्दी ही तुमसे बात और करूंगा।
पिता तुम्हारे मेरे प्रिय थे औ अपने भी
प्राण मुझे प्रिय। इससे मैं आशा करता हूँ
स्वयं कल्पना तुम कर लोगे

(एक संदेशवाहक का प्रवेश)

संदेशवाहक
खत लाया हूँ
हैमलेट का है महामहिम के लिए एक है
इसे लीजिए औ यह पत्र महारानी को।

राजा
हैमलेट के हैं पत्र ? कौन इनको लाया है ?

संदेशवाहक
नाविक श्रीमन ऐसा बतलाया जाता है
मैंने उन्हें नहीं देखा है दिए क्लाडियो
ने हैं मुझको उसे मिले उनसे जो लाए।

राजा
लायरटीज, सुनाऊंगा तुमको जो इसमें।—
अब तुम जाओ।

(संदेशवाहक बाहर जाता है।)

(पढ़ता है) महामहिम एवं महाप्रतापी आपको यह जानकर खेद होगा कि आपके राज्य में मैं नंगा करके छोड़ दिया गया हूं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि कल आप मुझे अपने समक्ष उपस्थित होने की आज्ञा दें। तभी मैं इसके लिए क्षमा मांगकर आपको बताऊंगा कि किन कारणों से मुझे एकाएक और इस अप्रत्याशित ढंग से लौट आना पड़ा।

हैमलेट

इसके क्या माने हैं ? क्या बाकी भी लौटे ?

या यह कोई धोखेबाजी, और नही कुछ ?

लायरटीज़ क्या पहचानी हुई लिखावट ?

राजा : हैमलेट का यह लिखा हुआ है, देखो 'नगा' !
औ' पुनश्च मे उसी हाथ का लिखा 'अकेला'।
अपनी राय मुझे दो इसपर।

लायरटीज़ : श्रीमन्, मै कुछ समझ न पाता। पर वह आए,
इससे मेरे दिल की आग भडक उट्ठी है
कि मै कहूँगा उसके मुँह पर, खड्ग खीचकर,
'ऐसे, दुष्ट, किया था तू ने !'

राजा : यदि ऐसा हो,
लायरटीज—मगर ऐसा कैसे हो सकता ?
और तरह क्या हो सकता है ?—मेरा कहना
मानोगे तुम ?

लायरटीज़ : श्रीमन्, मै निश्चय मानूँगा;
मुझे शात रहने को, लेकिन, आप कहे मत।

राजा : वही कहूँगा जिससे तुमको शाति मिलेगी।
यात्रा से मुख मोड लौट यदि वह आया है,
औ' फिर से जाने का उसका नही इरादा,
तो मै ऐसा दु.साहस करने को उसको
भडकाऊँगा, किसी तरह वह बच न सकेगा,—
इसका पूरा नक्शा है मेरे दिमाग मे।
औ' तब उसकी मौत के लिए कौन करेगा
शुबहा हम पर ?—उसकी माँ भी हमे दोष से
मुक्त समझकर, दुर्घटना इसको मानेगी।

लायरटीज़ . श्रीमन्, वही करूँगा जो कुछ आप कहेगे,
बस इतना चाहूँगा, कुछ तरकीब लगाएँ,
ऐसी, उसको मौत मिले मेरे हाथो से।

राजा . ठीक यही मेरे दिमाग मे। तुम प्रवास मे
गए तभी से तुम चर्चा के विषय रहे हो,

जिस सुनी है हैमलेट ने भी —एक तुम्हारे
गुण की चर्चा जिसम लोग कहा करते हैं
कोई सानी नही तुम्हारा। अन्य तुम्हारे
सभी गुणो ने मिलकर के भी उसके अदर
इतनी ईर्ष्या नही जगाई जितनी इसने
गो मरी नजरो म यह औरो से घटकर।

लायरटीज — श्रीमन मेरा क्या गुण ऐसा ?

राजा — उसे जवानी की टोपी का फन्ना समझो
गो वह अपनी जगह जरूरी। गुरु गभीरता
जाहिर करनेवाले काले सादे कपडे
बडी उम्रवालो के ऊपर जस फबते
उसी तरह चटकीली भडकीली पोशाकें
युवको के तन के ऊपर शोभा देती है।
हुए मास दो यहाँ नारमडी से आया
एक पुरुष था। फ्रास निवासी अपने अनुभव
से मैं कहता क्योंकि लड चुका हूँ मैं उनसे
अच्छे घुडसवार होते हैं। यह नर नाहर
तो जसे जादूगर ही था। वह काठी पर
बैठा नही उगा जसे उसमे लगता था
उसने घोडे से ऐसे करतब दिखलाए
जस वह उस चतुर जानवर के शरीर का
ही हिस्सा हो जसे उससे एक हुआ हो।
काम हैरतगेज दिखाए उसने जसे
नही कल्पना म भी मेरी आ सकते थे।

लायरटीज — घुडसवार क्या वह नामन था ?

राजा — होगा नामन।

लायरटीज — क्या उसका लामार नाम था ?

राजा — यही नाम था।

लायरटीज — खूब जानता हूँ मैं उसको। फ्रास देश का

हीरा है वह, बडा मान उसने पाया है ।

राजा : उसने बतलाया, वह तुमसे बहुत प्रभावित,
और तुम्हारे खाँडा-ओड़न के अभ्यास
तथा कौशल का ऐसा वर्णन विशद किया था—
खास तुम्हारे खड्ग चलाने की तेजी का--
कि वह जोश मे आकर बोला, दृश्य देखने
लायक होगा, अगर मिल सके कोई जोडी-
दार तुम्हारा ! उसने खाकर कसम कहा यह,
फ्रांस देश में एक नही तलवार चलाने-
वाला ऐसा जो मुकाबले में आने पर
वह बचाव, वह फुर्ती, वह आँखो की तेज़ी
दिखा सके जिनमे माहिर तुम । इसको सुनकर
हैमलेट के अदर ईर्ष्या का वह विष जागा
बोल उठा वह, मैं मुकाबले मे आऊँगा,
लौटे तो वह । अब इससे ही—

लायरटीज : श्रीमन्, मतलब ?

राजा : लायरटीज, तुम्हे प्यारे थे पिता तुम्हारे
या तुम केवल सदमे की तस्वीर बने हो
जिसके अन्दर जान नही है ?

लायरटीज : प्रश्न किसलिए ?

राजा : नही इसलिए कि मैं समझता, नही पिता थे
प्यारे तुमको, बल्कि इसलिए कि जानता मैं
प्यार काल पर आधारित है, और सामने
मेरे ऐसे उदाहरण हैं, जिनसे साबित,
आग प्यार की, ज्वाला उसकी, काल-प्रभावित ।
क्योंकि प्यार की ज्वाला मे ही एक तरह की
बत्ती रहती, कम जो अविरत होती जाती ।
जो अच्छा है सदा नही अच्छा रहता है,
जो अच्छा, अपनी अच्छाई की अधिकाई

से देता है जन्म बुराई को, जो उसको
खा जाती है। हम चाहिए जो कुछ करना
हम कर लें जब चाहेंगे और चाह यह
बदला करती घटती और विलंब कराती
जीभ हाथ घटनाएं जितनी बार कराएँ।
और चाहिए बढ़कर कुछ तसकीन भले हो,
करने का हौसला बराबर घटता जाता।
मगर घाव पर नमक छिटकता हैमलेट आता।
अब अपने को शब्दों से ज्यादा कर्मों में
पुत्र पिता का साबित करने को करना तुम
क्या चाहोगे?

लायरटीज गला काटना उसका गिरजाघर के अन्दर!

राजा हत्यारे के लिए कहीं पर शरण नहीं है।
बदला लेना है तो फिर सीमाएं कैसी?
लेकिन लायरटीज, करोगे क्या तुम इतना
तुम अपने घर से बाहर मत आओ जाओ।
हैमलेट आकर जानेगा ही तुम घर लौटे
हम ऐसों को भेजेंगे जो जाकर उससे
खूब तुम्हारी करें बड़ाई और इस तरह
फ्रांसीसी के द्वारा जो गुण गान तुम्हारा
किया गया था, उसपर दुहरी शान चढ़ेगी।
हम लाएंगे मुकाबले में तुम दोनों को
और लगेगी बाजी तुम पर और चूंकि वह
दरियादिल है खुला अनछुआ छल छन्दों से
शायद ही वह तलवारों की परख करेगा
और इस तरह आसानी से याकि जरा सी
हाथ सफाई से तुम ऐसी चुन सकते हो
कुंद नहीं जो और प्रारम्भिक चाल-काट में
बदला अपने पूज्य पिता का ले सकते हो।

लायरटीज़ : यही करूँगा, और इसलिए मैं अपनी पर
लेप लगा लूँगा जो मैंने मोल लिया था
किसी अताई से जो ऐसा भीषण मारक
छुरी डुबा भर लो बस उसमे, फिर तो उसका
घाव लगा जब—घाव नही केवल खरोंच भर —
कोई मरहम, चाहे कितनी भी गुणकारी
और जादुई जडी-बूटियो से हो निर्मित,
बचा नही सकता घायल को, मरना निश्चित।
इसी ज़हर में अपनी नोक डुबा लूँगा मैं —
धीरे से भी अगर छुला दूँ, वह मर जाए।

राजा : और गौर इसपर हमको कर लेना होगा।
समय और साधन दोनो की सुविधाओ को
हमें तोलना—मशा के अनुकूल कहाँ तक।
चल न सके तरकीब अगर यह, और हमारे
फूहडपन से लोग भाँप ले चाल हमारी,
तो अच्छा होगा हम इसमे हाथ न डाले।
इसीलिए दो तीर जरूरी है तरकस मे,
अगर एक तुक्का साबित हो, लगे दूसरा।
जरा सोच लेने दो मुझको—हमे तुम्हारी
चालाकी पर गहरा दाँव लगाना होगा—
सूझ गई है। तुम्हे पैतरे की तेजी से—
प्यास और गर्मी का अनुभव तो होगा ही—
कुछ ज्यादा तेजी दिखलाना, ऐसा ही हो—
तब वह निश्चय पानी पीने को माँगेगा,
मै प्याला तैयार करा रक्खूँगा ऐसा,—
अगर तुम्हारी नोक, ज़हर की, लगी न उसको—
उसकी चुस्की एक हमारा काम करेगी।
लेकिन ठहरो, यह गुल कैसा ?—

(रानी का प्रवेश)

अच्छी तो हो प्यारी रानी ?

रानी
ऐसा लगता है कि दुखों का अंत नहीं है,
एक नहीं जाता कि दूसरा आ पड़ता है।—
लायरटीज नदी में डूबी बहन तुम्हारी।

लायरटीज
हाय कहाँ पर ?

रानी :
जहाँ विलो का पेड़ किनारे लगा खड़ा है,
श्वेत पत्तियाँ बिंबित करता निर्मल जल में।
वहाँ गई वह गजरा पहने हुए निराला—
क्रो फ्लावर का, नेटेल और डेज़ी का और लाँग परपिल का
जिसे नाम भद्दा सा चपल गड़रिए देते,
पर सुशील बालाएँ शव की उंगली कहतीं।
वहाँ झुकी डाली पर माला लटकाने को
जैसे ही वह चढ़ी कि टूटी वह दयमारा
और गिरी सब अजरे गजरे वह पानी में।
उसके कपड़े फैले और हवा में फूल,
उतराती कुछ देर रही वह जल कन्या सी,
जैसे वह अपनी इस विपदा से अजान हो,
या जैसे जल में ही जन्मी पली बढ़ी हो,
जबतक वह उतराती थी गाती जाती थी
गीत पुराने पर वह ज्यादा देर न ठहरी
भीग भागकर भारी कपड़े खींच ले गए
उस बेचारी को गीतों की मधुर सेज से
नीचे कीचड़ में औ उसकी मृत्यु हो गई !

लायरटीज
हाय सत्य ही क्या वह डूबी ?

रानी
डूब गई ही।

लायरटीज
तुझपर पानी बहुत पड़ा होगा आफीलिया
इसीलिए मैं अपने आँसू रोक रहा हूँ,
पर कब रुकते दिल कैसे पत्थर हो जाए !

लोग कहेगे मुझमे नारी की भावुकता,
कहे, मगर जब आँसू मेरे झड जाएँगे,
तब वह नारी भी मुझमे से निकल जायगी,—
विदा मुझे दे, मेरे स्वामी ! मेरे दिल मे
आग इस समय, जो कि भभकना चाह रही है,
पर ये दुर्बल आँसू मेरे उसे बुझाते ।
(बाहर जाता है ।)

राजा : चलो, चले, गरट्रूड, चले हम उसके पीछे ।
बड़े यत्न से शान्त उसे मै कर पाया था ।
कही न इससे उसका क्रोध भडक फिर उट्ठे,
चलो, चले हम उसके पीछे ।
(दोनों बाहर जाते है ।)

पांचवाँ अंक

पहला दृश्य

गिरजे से लगा कब्रिस्तान

(फावड़ा और कुदाल लिए हुए दो मजदूरों का प्रवेश)

पहला मजदूर क्या जो, जिस लड़की ने अपने को खुद मुक्त कर लिया हो, क्या उसे ईसाई कब्रिस्तान में दफनाया जा सकता है ?

दूसरा मजदूर मैं कहता हूँ कि उसे दफनाया जा सकता है, और इसीलिए उसकी कब्र फौरन तयार कर दो। हाकिमों ने उसकी लाश की जाँच कर ली है और उन्होंने अपना फैसला दे दिया है कि उसे ईसाई कब्रिस्तान में दफनाया जा सकता है।

पहला मजदूर यह कैसे हो सकता है जब तक कि वह अपना बचाव करने के लिए ही डूब न मरी हो।

दूसरा मजदूर यही बात तो पाई गई है।

पहला मजदूर तब तो यह कानून उल्टा लागू हुआ है दूसरा कुछ हो नही सकता। मुद्दे की बात तो यह है कि अगर मैं जान-बूझकर डूब मरूं तो कानून की भाषा में यह एक काम हुआ और हर काम के होते हैं तीन हिस्से—काम शुरू करना काम करना और काम पूरा करना। इससे यह नतीजा निकला कि वह जान बूझकर डूब मरी।

दूसरा मजदूर लेकिन सुनो भी तो मल खोटूमल।

पहला मजदूर पहले मुझे कहने दो। यहाँ पानी है—ठीक है न ? यहाँ आदमी खड़ा है—ठीक है न ? अगर आदमी पानी के पास आता है

और उसमे डूब मरता है तो वह चाहे मरना चाहे, चाहे न चाहे, वह पानी के पास जाता तो है ही; इस बात को साफ समझ लो; लेकिन अगर पानी उसके पास आता है और उसे डुबा देता है तो वह खुद नही डूब मरता। नतीजा यह निकला कि वही खुदकुशी का अपराधी नही है, जो अपनी उम्र को कम नही करता।

दूसरा मजदूर : लेकिन, यह कोई कानून की बात हुई ?

पहला मजदूर : क्यो नही, कसमिया, यह हाकिमाना तहकीकाती कानून है।

दूसरा मजदूर . लेकिन खरी बात कह दूं ? अगर वह किसी बड़े घर की औरत न होती तो उसे ईसाई कब्रिस्तान से दूर दफनाया जाता।

पहला मजदूर : बस, मुद्दे की बात तुमने कह दी, पर ज्यादा अफसोस तो इस पर होता है कि इन बड़े आदमियो को दुनिया ने डूब मरने की, फाँसी लगा लेने की, अपने और ईसाई भाइयो की बनिस्वत ज्यादा आज़ादी दे रक्खी है। —लाओ मेरा फावड़ा। दुनिया के सबसे पहले बड़े आदमी है बाग लगानेवाले, खाई खोदने वाले और कब्र बनानेवाले। और ये आज तक आदम के पेशे को चलाए जा रहे हैं।

दूसरा मजदूर : क्या आदम बडा आदमी था ?

पहला मजदूर : वह पहला आदमी था जिसने हाथो मे औज़ार पकड़ा।

दूसरा मजदूर : लेकिन औज़ार तो उसके पास थे ही नही।

पहला मजदूर : तू तो मुझे काफिर लगता है। तू इंजील को समझता भी है ? इंजील कहती है कि आदम ने जमीन खोदी, वह बिना औज़ार के खोद सकता था ? मैं तुझसे एक और सवाल पूछता हूँ। अगर तू ठीक जवाब नही देता तो मान ले कि तू—

दूसरा मजदूर : अच्छा पूछ।

पहला मजदूर : वह कौन है जो मेमार, जहाजसाज और बढई से भी ज्यादा मजबूत चीज बनाता है ?

दूसरा मजदूर : जो फाँसी की टिकठी बनाता है, हज़ार आदमियो को पार लगाकर के भी टिकठी [illegible]

पहला मज़दूर तुझे अक्ल अच्छी मिली है सच। टिकठी अच्छे काम आती है, पर वह अच्छे काम किनके आती है? वह अच्छे काम उनके आती है जो बुरा काम करते हैं। अब यह कहना तो बुरी बात होगी कि टिकठी गिरजाघर से भी मज़बूत होती है। खैर टिकठी तेरे अच्छे काम आए। पर मेरे सवाल का ठीक जवाब दे फिर कोशिश कर, चल!

दूसरा मज़दूर ममार, जहाजसाज़ और बढ़ई से भी ज़्यादा मज़बूत चीज़ कौन बनाता है?

पहला मज़दूर हाँ जवाब दे और अपनी जान छुड़ा।

दूसरा मज़दूर कसम से मैं अब दे सकता हूँ।

पहला मज़दूर तो दे।

दूसरा मज़दूर कसम से, मैं नहीं दे सकता।

(कुछ फासले पर हैमलट और होरेशियो का प्रवेश)

पहला मज़दूर अपने दिमाग को ज़्यादा मत खराबो, क्योंकि तेरा यह लद्धड़ गधा पीट पाट से अपनी चाल नहीं सुधारने का। और जब दूसरी बार कोई यह सवाल पूछे तो कह कब्र बनाने वाला क्योंकि वह जो घर बनाता है वह क़यामत के दिन तक खड़ा रहता है। अच्छा, अब जान की दूकान पर जा और मेरे लिए एक बोतल शराब ला।

(दूसरा मज़दूर चला जाता है।)

(पहला मज़दूर कब्र खोदता हुआ गाता है)

जब थी जवानी, तब था प्यार से,
सिर्फ प्यार से नाता।
हाय, छोड़कर उससे मिलना,
कुछ न मुझे था भाता।

हैमलेट इस आदमी का काम कहाँ, इसकी भावनाएं कहाँ तभी तो यह खोद रहा है कब्र और गा रहा है प्रेम का गीत।

होरेशियो रोज़ रोज़ यही काम करते इसकी भावनाएँ कुंद हो गई हैं।

हैमलेट तभी तो जिन्हें मोटा काम कम करना पड़ता है, उनकी भाव

नाएँ अधिक सुकुमार होती है ।

पहला मजदूर . (गाता है) किन्तु वदन पर, अब तो बुढापे
की है साफ निशानी,
अब लगता है, कभी नहीं थी
मुझपर, हाय, जवानी !
(एक हडमुण्ड बाहर फेंकता है ।)

हैमलेट : इस हडमुड मे कभी जीभ रही होगी, और कभी यह गा भी सकता होगा; पर कैसी निर्ममता से अब यह गँवार इसे ज़मीन पर फेकता है, मानो यह केन के जवडे की हड्डी हो, जो दुनिया का पहला हत्यारा था । हो सकता है कि यह किसी राजनीतिज्ञ का सिर हो, जिससे यह गधा भी इस समय अपने को वडा समझता है, पर कभी यह ईश्वर की आँखो मे भी धूल झोक सकता होगा । होगा न ?

होरेशियो . हो सकता है, श्रीमन् ।

हैमलेट : या किसी दरवारी का, जो कहता होगा, कृपानिधान की जय हो ! श्रीमान् कुशल-मगल से तो है ? या फलाँ सरदार का, जो फलाँ सरदार के घोडे की प्रशसा करता होगा कि वे प्रसन्न होकर उसे दे डाले ? हो सकता है न ऐसा ?

होरेशियो : हाँ, श्रीमन् !

हैमलेट : और हो ही क्या सकता है ? और अब देखो, यह दीमक-चाटा हडमुड; जवडा गायव, और खोपड़ी पर कब्र खोदनेवाले के फावडे की चोट से कभी इधर लुढकता, कभी उधर । मानव का यह कितना अद्भुत परिवर्तन है, अगर हम आँख खोलकर देख सकें ! क्या इन हड्डियो को इसीलिए पाला-पोसा गया था कि इनके साथ गुल्ली-डडा खेला जाए ? यह सोचकर मेरी हड्डियो मे दर्द होने लगा है ।

पहला मज़दूर : (गाता है) एक कुदाली, एक फावड़ा,
एक कफन की चादर,
मिट्टी के घर के मेहमाँ का

बस, इतना ही आदर !

(एक और हडमुण्ड देखता है।)

हैमलेट — यह लो दूसरा, हो सकता है यह किसी वकील का हडमुड हो। कहाँ गए अब उसके मुकदमे उसके मुवक्किल, उसके हथकंडे ? भूल न गया अब सब कानून की बारीकियाँ दिखलाना और बाल की खाल उधेडना। एक बेहूदा गँवार अपने गदे फावडे से उसके सिर को ठकठका रहा है पीट रहा है पर वह उससे किसी तरह का उज्र क्यो नही करता ? हूँ ! यह शख्स किसी समय कोई बडा जमीन-जरीदार रहा होगा। कहाँ है अब उसके खतनामे उसके नजराने उसके हर्जाने उसकी दुहरी रसीद और उसकी वसूलियाँ ? क्या यह उसके हर्जाने का हर्जाना है उसकी वसूलिया की वसूली कि उसके कीमती सिर मे यह बेशकीमती मिट्टी भरा जाए ? क्या अब उसकी रसीदें, दुहरी होकर भी उससे ज्यादा लबी चौडी जमीन की खरीद की सनद नही दगी जितना कि एक जोडे पटटे से ढकी जा सके ? उसकी जमीन के दस्तावेज भी मुश्किल से कब्र के उस छोटे-से सदूक म समा सकेंगे। और क्या उसके उत्तराधिकारियो का भी इससे अधिक पर अधिकार न होगा ?

होरेशियो — एक तिल भी अधिक पर नही श्रीमन।

हैमलेट — लाग दस्तावेजो को टिकाऊ बनाने के लिए भेड की खाल पर लिखाते है न ?

होरेशियो — हाँ श्रीमन्, और बछडे की खाल पर भी।

हैमलेट — वे भेड-बछडा से ही बादे हैं जा समझते हैं कि उनके चमडे टिकाऊ होगे। मैं इस आदमी से बात करना चाहता हूँ।— अरे सुनो, यह किसकी कब्र है ?

पहला मजदूर — मेरी श्रीमन्।

(गाता है) मिटटी के घर के महमाँ का

बस इतना ही आदर।

हैमलेट : मैं मानता हूँ कि यह तेरी है क्योंकि तू इसके अंदर है।

पहला मजदूर : और आप इसके बाहर है, श्रीमन्, इसलिए यह आपकी नही है; मैं इसके अन्दर हूँ, गो पडा नही, फिर भी यह मेरी है।

हैमलेट . यह तो झूठ बात हुई कि चूँकि तू इसके अन्दर है इसलिए यह तेरी है। यह ज़िदो के नही, मुर्दो के पडने के लिए है; इसलिए तेरा कहना झूठ है।

पहला मजदूर तो यह मुँह पर आया झूठ है, अभी मेरे मुँह में है, अभी आपके मुँह मे पहुँच जाएगा।

हैमलेट : यह कब्र तू किस आदमी के लिए खोद रहा है ?

पहला मजदूर . किसी आदमी के लिए नही, श्रीमन्।

हैमलेट : तो किस औरत के लिए ?

पहला मजदूर : किसी औरत के लिए भी नही।

हैमलेट : तो किसे इसमे दफनाया जाएगा ?

पहला मजदूर : कोई जो पहले औरत थी, पर उसकी आत्मा को शाति मिले, अब वह मर गई है।

हैमलेट : यह कैसा मुँहजोर गँवार है ! हम तोल-तोलकर न बोले तो यह गोल-मोल जवाब से हमारी बोलती बन्द कर देगा। कसम से, होरेशियो, पिछले तीन बरसो से मैंने यह बात देखी है—जमाने मे वह तेजी आई है कि गँवार के पाँव का अँगूठा, दरबारी की एडी के इतने पास आ गया है कि वह उसको ठोकर मारने लगा है।—यह कब्र खोदने का काम तू कितने दिन से करता है ?

पहला मजदूर : साल के सब दिनो मे मैंने यह काम उस दिन शुरू किया था जिस दिन हमारे पिछले राजा हैमलेट ने फोर्टिनब्रास को हराया था।

हैमलेट : उसको कितने दिन हो गए ?

पहला मजदूर : आपको इतना भी नही मालूम ? यह तो कोई ऐरा-गैरा भी बता देगा, यह वही दिन था जिस दिन छोटे हैमलेट का जन्म हुआ था; अब तो वह पागल हो गया है और उसे

इंगलिस्तान भेज दिया गया है।

हैमलेट — सच ! उसे इंग्लिस्तान क्यों भेजा गया ?

पहला मजदूर — क्या ? क्योंकि वह पागल था और वहां जाकर उसकी अक्ल ठिकाने आ जाएगी, और अगर न भी आए तो वहाँ के लिए कोई बड़ी बात न होगी।

हैमलेट — क्यों ?

पहला मजदूर — वहाँ उसकी ओर किसी का ध्यान भी न जाएगा क्योंकि वहाँ सभी आदमी उसी जैसे पागल हैं।

हैमलेट — वह पागल क्यों हो गया ?

पहला मजदूर — सुना है, बड़े अजीब ढंग से।

हैमलेट — अजीब ढंग से कैसे ?

पहला मजदूर — लोग कहते हैं कि उसकी अक्ल कहीं चरने चली गई।

हैमलेट — कहाँ ?

पहला मजदूर — यहीं कहीं डेनमार्क में, जहां बुढ़ापन में कब्र खोदते मुझे तीस बरस हो चुके हैं।

हैमलेट — मिट्टी में गड़ने के कितने दिन बाद आदमी सड़ जाता है ?

पहला मजदूर — अगर वह मरने के पहले ही सड़ नहीं गया है—जैसे कि आज कल के आतशक से सड़ गए मुर्दे जिन्हें दफनाना भी मुश्किल होता है—तो मुर्दे के सड़ने में आठ या नौ बरस लगेंगे। चमार लोगों के मुर्दे के सड़ने में चौदह बरस।

हैमलेट — उसके सड़ने में औरों से ज्यादा वक्त क्या लगता है ?

पहला मजदूर — इसलिए श्रीमन, कि चमड़ा कमाते-कमाते उसकी चमड़ी इतनी चीमड़ हो जाती है कि उसे बहुत दिनों तक पानी नहीं खा पाता। और इस हरामजादी लाश का यह पानी ही बुरी तरह गलाता है। यह देखिए, एक और हड्मुंड निकला। यह यहां ऊपर तीन बरस तक जमीन के अन्दर गड़ा रहा है।

हैमलेट — यह किसका था ?

पहला मजदूर — यह एक पागल हरामजादे का था। आप बता सकते हैं कि यह किसका था ?

हैमलेट : नही, मुझे नही मालूम ।

पहला मजदूर . यह पागल बदमाश जहन्नुम मे जाए ! इसने एक बार मेरे सिर पर शराब की पूरी बोतल उलट दी थी । यही हडमुण्ड, श्रीमन्, यारिक का सिर था—राजा का विदूषक ।

हैमलेट : यही !

पहला मजदूर . जी हाँ ।

हैमलेट . जरा मुझे दिखाओ । (हडमुण्ड हाथ में लेता है।)
—हाय, बेचारा यारिक !—मै उसे जानता था, होरेशियो; उसके मजाक खत्म ही न होते थे, क्या कमाल की उडानें होती थी उनमे, हजार बार तो उसने अपनी पीठ पर चढा-कर मुझे घुमाया होगा, अब इन बातो को सोचकर कितनी घिन छूटती है ! मेरा जी मिचलाने लगता है। यहाँ उसके होठ थे, जिन्हे पता नही, मैने कितनी बार चूमा होगा ।—कहाँ है अब तुम्हारी ठठोलियाँ, तुम्हारी कलाबाजियाँ, तुम्हारे गाने-तराने ? तुम्हारी बक्तिया फब्तियाँ ?—जिनसे उठने-वाले कहकहो से महफिले गूँज उठती थी । अब एक नही, जो तुम्हारे इस खीस-बाए चेहरे की नकल भी उतार सके ! बिल्कुल मुँह लटकाए । अब तुम हमारी राजरानी के कमरे मे जाओ और उनसे कहो कि वे कितना ही रग-रोगन अपने चेहरे पर चढाएँ, अत मे उनकी सूरत ऐसी ही होनी है, उन्हे इसपर हँसाओ !—कृपाकर, होरेशियो, मुझे एक बात बताओ ।

होरेशियो . क्या, श्रीमन् !

हैमलेट . तुम्हारा क्या ख्याल है कि सिकन्दर भी जमीन मे गडा ऐसा ही दिखता होगा ?

होरेशियो बिल्कुल ऐसा ही ।

हैमलेट : और ऐसा ही बदबू भी करता होगा ? उफ !
(हडमुण्ड गिरा देता है।)

होरेशियो : ऐसा ही, श्रीमन् !

हैमलेट हमारी मिट्टी की भी क्या दुर्गत होती है, होरेशियो ! हमारी कल्पना क्यों नही यह देख पाती कि जिस मिट्टी से पीपे का मुंह बंद किया जाता है शायद वह सिकन्दर की ही हो।

होरेशियो ऐसी कल्पना तो बडी अजीब कल्पना होगी।

हैमलेट नही कसम से, जरा भी नही इस नतीजे पर तो हम केवल तथ्य और संभावनाओं के सहारे पहुंच सकते हैं, देखो ऐसे— सिकन्दर मर गया सिकन्दर को दफना दिया गया सिकन्दर मिट्टी में मिल गया फिर मिट्टी मिट्टी में क्या अन्तर ? उसी मिट्टी का हम लोंदा बनाते हैं और उसी लोंदे से, जो बहुत संभव है सिकन्दर की मिट्टी से ही बना हो क्या शराब का पीपा बन्द नही किया जा सकता ?—

जिस मिट्टी से बंद झरोखा किया गया है
हवा न आए, संभव है वह महाप्रतापी
सीजर की हो !
जिस मिट्टी में सारी दुनिया थी आतंकित,
जाड़े की अब हवा रोकनेवाली केवल
वह मिट्टी हो !
पर, चुपचाप हटें अब हम राजा आते हैं।

(पादरियों आदि का जलूस के रूप में प्रवेश; उनके पीछे ओफीलिया की अर्थी है, जिसके पीछे लायर्टीज तथा अन्य शोक-संतप्त लोग हैं उनके पीछे राजा रानी तथा दरबारी गण हैं।)

रानी-दरबारी हैं किसके पीछे-पीछे ?
रस्म पूरी तरह भला की नहीं गई हैं
जिस शव के पीछे सब लोग चल रहे हैं
क्या उसने अपने हाथों अपनी हत्या की ?
जान किसी सम्भ्रान्त व्यक्ति का-सा लगता है।
आओ, दोनों छिपकर देखें !

(होरेशियो के साथ पीछे चला जाता है।)

लायर्टीज और कौन रस्म बाकी है ?

हैमलेट : यह है लायरटीज, बडा गुणवान युवक है।

लायरटीज़ : और कौन रस्मे बाकी है ?

पादरी : शव-सम्बन्धी जिन रस्मो के लिए हमे थी
अनुमति हमने पूरी कर दी। मृत्यु हुई थी
इसकी कैसे, इसका निश्चय नही हो सका,
यदि गिरजाघर की आज्ञाएँ सिंहासन के
आदेशो के ऊपर होती, इसे अपावन
किसी ठौर पर गाडा जाता, और कयामत
तक रहती यह पडी वही पर, इसके शव पर
करुणा की प्रार्थना न होती, वर्षा होती
ईंट-पत्थरो की, ढेलो की, किन्तु यहाँ तो
डलिया भर-भर फूल और मालाएँ आई,
शव की सेज सजाने को, शव पर रखने को,
औ' पावन घण्टे, बजने को, दफनाने पर—
जो कुछ भी था उचित कुमारी कन्या के हित।

लायरटीज़ : और नही कुछ करने को है ?

पादरी · और नही कुछ,
शाति-पाठ जो उन आत्माओ के हित होता
जो शरीर से विदा शाति से हो जाती है,
यदि हम इसके लिए करे तो मृतक-प्रार्थना
को हम दूषित करने के अपराधी होगे।

लायरटीज़ : तो धरती मे इसे सुला दो।—इसके सुन्दर,
पावन तन से सुन्दर-कोमल कलियाँ फूटे !—
सुन मेरी, नादान पादरी, बहना मेरी
एक स्वर्ग की देवी होगी, घोर नरक मे
पडा चीखता जब तू होगा।

हैमलेट : क्या यह सुन्दर
ओफीलिया है ?

रानी : विदा ! मिले सुन्दर को सुन्दर।

मेरे मन का ज्वालामुखी भड़क उठा था।

होरेशियो — सुनो, किसी के परों की आहट आती है।

(आसरिक का प्रवेश)

ओसरिक — मालिक के सकुशल डेनमार्क लौटने पर हृदय से आपका स्वागत।

हैमलेट — श्रीमन्, हृदय से आपका आभारी हूँ।
(होरेशियो से अलग)—इस पनडुब्बे को जानते हो?

होरेशियो — (हैमलेट से अलग) बिल्कुल नहीं, श्रीमन्।

हैमलेट — (होरेशियो से अलग) तो इसे अपनी खुशकिस्मती समझो, इसे जानना एक बला है। इसके पास बड़ी जमीन है और उपजाऊ भी। जब कोई जानवर जानवरों का राजा होता है तो उसका हौदा राजा के भोजनालय में पहुँच जाता है। है तो यह पन-कौआ पर मुझे मालूम है कि इसने अपने चारों तरफ काफी गर्द जमा कर रक्खी है।

ओसरिक — मेरे मालिक, अगर आप कुछ समय दे सकें तो मैं आपके नाम महाराज का एक सन्देश प्रस्तुत करूँ।

हैमलेट — श्रीमन्, मैं बड़ी तत्परता के साथ उसे सुनने को प्रस्तुत हूँ। अपनी टोपी को उसकी ठीक जगह दें, यह सिर के लिए बनी है।

ओसरिक — मेरे मालिक, धन्यवाद है आपको इस समय बड़ी गर्मी है।

हैमलेट — नहीं, मेरा विश्वास करें, इस समय बड़ी ठण्ड है उत्तरी हवा बह रहा है।

ओसरिक — हाँ, थोड़ी ठण्ड तो जरूर है, मेरे मालिक।

हैमलेट — मगर, मेरे लिए तो इसमें बड़ी ऊमस और गर्मी है।

ओसरिक — बेहद, मेरे मालिक, और बहुत ही ऊमस—जैसे कि—बताना मेरे लिए मुश्किल है। लेकिन मेरे मालिक, महाराज ने मुझे आपको यह सूचित करने का आदेश दिया है कि उन्होंने आपके ऊपर बहुत बड़ी बाजी लगाई है। श्रीमन् बात यह है कि—

हैमलेट — मैंने कुछ प्रार्थना की थी, याद है?

(सिर पर टोपी रखने के लिए हैमलेट उसे इशारा करता है।)

ओसरिक : नही, मेरे मालिक, सच, इससे तो मुझी को आराम है। हाँ, तो बात यह है, श्रीमन्, कि लायरटीज हाल ही मे दरबार को लौटा है, और विश्वास कीजिए, वह बडा ही शरीफ आदमी है, और उसमे बडी खूबियाँ है—देखने मे सुदर, मिलने-बैठने मे शालीन, बोल-चाल मे शीलवान; उसका सटीक वर्णन करना हो तो यही कहेगे कि वह शराफत का एक ऐसा नक्शा है जिसकी सहायता से कोई भी शरीफ आदमी अपने जीवन का पथ प्रशस्त कर सकता है।

हैमलेट श्रीमन्, आपने उसका जो वर्णन किया उसपर कोई टिप्पणी नही की जा सकती, पर मै यह जानता हूँ कि अगर आप उसके एक-एक गुण की गणना करना चाहेगे तो गणित का ही दिमाग चकरा जाएगा, और आप उसके सजीव व्यक्तित्व से दूर जाकर उसके गुणो का विश्लेषण ही करते रह जाएँगे। लेकिन उसकी सच्ची प्रशसा मे मै तो यही कहूँगा कि वह बडे ऊँचे पाए का आदमी है, और उसके गुण ऐसे अलभ्य और असाधारण है कि उनको ठीक-ठीक प्रदर्शित करने का काम केवल वह प्रतिबिब करता है जो उसके दर्पण मे पडता है, और कोई ऐसा नही जो उसकी छाया को उससे अधिक अच्छी तरह आकार दे सके।

ओसरिक मेरे मालिक, आप तो उसमें किसी प्रकार का दोष ही नहीं देखते।

हैमलेट : मतलब क्या है आपका ?—हम उस भले आदमी के सूक्ष्म गुणो को अपने स्थूल शब्दो से क्यो बाँध रहे है ?

ओसरिक श्रीमन् !

होरेशियो : क्या किसी दूसरी शैली में समझना-समझाना सभव नही ? वास्तव मे, श्रीमन्, आप ऐसा कर सकते है।

हैमलेट : उस भले आदमी की प्रशसा का तात्पर्य क्या है ?

ओसरिक · लायरटीज की ?

होरेशियो (हैमलेट से अलग) अब इसका बटुआ खाली हो चुका है और इसके सारे सुनहरे शब्द समाप्त।

हैमलेट उसी की श्रीमन।

ओसरिक मैं जानता हूँ कि आप अनजान नहीं हैं—

हैमलेट काश इसे आप सचमुच जानते फिर भी कसम से अगर आप जानते तो भी इससे मेरी प्रतिष्ठा में कोई विशेष वृद्धि न होती। क्या श्रीमन?

ओसरिक —आप अनजान नहीं हैं उन खूबियों से जो लायरटीज में हैं—

हैमलेट मैं इसे स्वीकार करने का दुःसाहस नहीं कर सकता, इस भय से कि कहीं मैं उसकी खूबियों से अपनी खूबियों की तुलना न करने लगूँ क्योंकि किसी आदमी को अच्छी तरह जानने का मतलब है खुद अपने को जानना।

ओसरिक मेरा मतलब था श्रीमन हथियार चलाने की खूबी से। लेकिन लोग जिस तरह उसकी प्रशंसा करते हैं उससे लगता है कि उसका कोई जोड़ीदार नहीं है।

हैमलेट उसका हथियार क्या है?

ओसरिक तलवार और कटार।

हैमलेट तो ये दो हथियार उसके हैं। लेकिन खैर।

ओसरिक महाराज ने श्रीमन उसके साथ छह अरबी घोड़ों की बाजी लगाई है। इसके जोड़ में उसने जहाँ तक मुझे मालूम है छः फ्रांसीसी तलवारों और खंजरों को दाँव पर लगाया है मय उनके साज समान के जैसे पेटियाँ लटकन वगैरह तीन पट्टे तो कसम से बड़े ही सुंदर हैं तलवार की मूठों के अनुरूप बड़े ही नफीस बड़े ही बारीक काम के।

हैमलेट पट्टे से तुम्हारा क्या मतलब?

होरेशियो (हैमलेट से अलग) मुझे मालूम था कि बात समाप्त होने के पहले आपको कहीं न कहीं व्याख्या की आवश्यकता होगी।

ओसरिक पट्टे वही हैं श्रीमन जो लटकन।

हैमलेट यह शब्द विषय के अधिक अनुरूप होता अगर हम अपने साथ

कुत्ते ले जाते। अगर ऐसा नही, तो फिलहाल हम इसको लटकन ही क्यो न कहे। मगर, खैर। तो छह अरबी घोड़ो के जोड में छह फ्रासीसी तलवारे है, मय साज-सामान के, और तीन नफीस, बारीक काम के लटकन। यह है डेनमार्क की बाजी के मुकाबले मे फ्रासीसी बाजी। तुम उन्हे 'दाॅव' पर लगा क्यो कहते हो ?

ओसरिक : महाराज ने, श्रीमन्, यह्र शर्त रक्खी है, कि आप दोनो के बीच एक दर्जन काटो मे वह आपको तीन से ज्यादा चोटे न देगा, और उसने यह शर्त लगाई है कि वह आपकी नौ पर बारह चोटे देगा। और यह शक्ति-परीक्षरण फौरन होगा अगर मालिक उत्तर देने को तैयार हो।

हैमलेट : और जो मैं मौन रहूँ तो ?

ओसरिक : मेरा मतलब है, श्रीमन्, शक्ति-परीक्षरण के समय आपके सामना करने से।

हैमलेट : श्रीमन्, मै इसी हाल में टहल रहा हूँ; महामहिम जानते है कि यह मेरे व्यायाम करने का समय है, तलवारें मँगाई जाएँ, लायरटीज राजी हो, और महाराज अपनी बात पर दृढ हो, तो मै उन्हे जिताने का प्रयत्न करूँगा; मगर मैं ऐसा न कर सका तो हार उनकी, पर शर्म और मार मुझपर।

ओसरिक : क्या मैं इन्ही शब्दो मे आपकी बात उन तक पहुँचा दूं ?

हैमलेट · श्रीमन्, इसी मतलब की, —अपने स्वभाव के अनुसार जो भी नमक-मिर्च आप चाहे लगाकर।

ओसरिक : मेरे मालिक, आपके प्रति कर्त्तव्य-पालन मेरा धर्म है।

हैमलेट : अपने, अपने (प्रति)— (ओसरिक बाहर जाता है।) अच्छा करता है कि यह अपना धर्म अपने-आप ही बता देता है। दूसरे किसी को बताने की क्या पडी है।

होरेशियो : यह चिरौटा अभी अडे से पूरी तरह निकला भी नही कि इसने भागना शुरू कर दिया है।

हैमलेट : यह सब यह माँ के पेट से ही सीखकर आया है। इसपर ही

नहा इसी नस्ल के और बहुतरे है जिनपर मुझे खूब मालूम है यह खाटा जमाना लन्ट है। इन्हे सिफ वक्त की भनक भर मिल गइ है और उसकी मजलिसी लफ्फाजी। और ये भाग भरे बुलबुने क्या दाना क्या नादान सबके ऊपर छाए रहते है पर उन्हे आजमाने का जरा फूक भर दीजिए और उनकी हवा निकल जाएगी।

(एक सरदार का प्रवश)

सरदार मरे मालिक महाराज न नवयुवक ओसरिक के द्वारा आपके पास कुछ सदेश भेजा था उसन लौटकर उनस कहा कि आप इसा हाल म उनका प्रती ा कर रहे हैं, उ हाने मुझे यह मालूम करन क लिए भेजा है कि आप लायरटीज से खेलने क लिए तयार है या आप और समय चाहग ?

हमलेट मैं अपनी बात पर दृढ हू। महाराज की इच्छा ही मरी इच्छा है। अगर लायरटीज तयार है ता मैं भी तयार हू अभी या कभी भी बगर्ते कि तब भी मैं एसा ही स्वस्थ रहू जसा कि अब हू।

सरदार महाराज महारानी और सब लोग आ रह है।

हमलेट बहुत अच्छा है।

सरदार महारानी ने कहलाया है कि लायरटीज क साथ खल शुरू करन क पहल आप उसस कुछ मन मिलाप की बातें करल।

हमलेट व मुझे नेक सलाह देती हैं।

(सरदार बाहर जाता है।)

हारेनियो श्रीमन्, आप यह शत हार जाएँगे।

हैमलेट मैं ता एसा नहा समझता जब स वह फ्रास गया था मैं बराबर अभ्यास करता रहा हू और फिर मुझे जा रियायत मिली है उसस मैं जात जाऊँगा पर तुम साच भी नहा सकते कि इस वक्त मरा दिल कितना खराब है लकिन कोई बात नहीं।

होरेशियो फिर भी श्रीमन्!

हैमलेट यह सिफ मेरी भावना है लकिन यह कुछ उसा तरह की

आशका है जैसी कि शायद औरतो के मन मे उठती है ।

होरेशियो . अगर आपका जी किसी चीज को नही चाहता तो उसे न करे। मै उनके यहाँ आने के पहले ही उनसे जाकर कह दूँगा कि आपका जी खराब है ।

हैमलेट जरा भी नही, हम शकुन-अशकुन की परवाह क्यो करे; एक पत्ता भी उसकी मर्जी के बगैर नही गिरता। अगर उसे अभी गिरना है, तो यह टाला नही जा सकता, और अगर यह टाला नही जा सकता तो यह अभी गिर के रहेगा, अगर वह अभी नही गिरेगा तो कभी तो गिरेगा ! तैयार रहना ही सब कुछ है। कोई आदमी कुछ भी तो लेकर यहाँ से नही जाता, हम समय से पहले ही छुट्टी लेकर चले जाएँ तो क्या ! छोडो भी इसे ।

(तलवारों और दस्तानों के साथ राजा, रानी, लायरटीज, ओसरिक, सरदारों और दरबारियों का प्रवेश : एक मेज भी साथ लाई जा रही है जिसपर शराब की सुराहियाँ है ।)

राजा आओ, हैमलेट, इनसे आकर हाथ मिलाओ ।

(राजा लायरटीज का हाथ हैमलेट के हाथ में देता है ।)

हैमलेट . मेरे भाई, क्षमा प्रदान करो मुझको तुम;
सत्य, तुम्हारे प्रति मैंने अन्याय किया है,
क्षमा करो इसलिए कि तुम हो नेक आदमी ।
यहाँ उपस्थित सब लोगो ने, औ' तुमने भी
निश्चय यह सुन रक्खा होगा, एक बडे ही
नामुराद मानसिक रोग से मै पीडित हूँ ।
जो कुछ मैंने किया, हो उठा जिससे आहत
उन्मद, उद्धत मान, गुमान, स्वभाव तुम्हारा,
घोपित करता यहाँ कि मेरा पागलपन था ।
लायरटीज, तुम्हारे प्रति अन्याय किया था
क्या हैमलेट ने ? हैमलेट नही रहा होगा वह ।
जब हैमलेट कर दिया गया है दूर स्वय से,

तब अपने से बाहर होने की हालत म
यदि उससे अपराध कहीं, कुछ हो जाता है
हैमलेट का अपराधी कहना उचित न होगा
हैमलेट उसको कभी नही स्वीकार करेगा
तब यह किसका ? केवल उसके पागलपन का।
यदि यह बात मान ली जाए तब तो हैमलेट
उस दल का है जिसके प्रति अन्याय हुआ है।
हैमलट का पागलपन खुद उस बेचारे का
महाशत्रु है इतने लोगों के आगे मैं
यह कहता हूँ जानबूझकर नही बुरा
कुछ मैंने की और तुम अपनी उदारता स
मुक्त मुझे इतना कर दो मैं ऐसा समझू
मैंने अपने घर पर ही था तीर चलाया
और हुआ जो घायल मेरा ही भाई था।

सायरटीज मेरा मन सतुष्ट हो गया है जो अब तक
मुझको बदला लेने को प्रेरित करता था
लेकिन मेरा मान गुमान अभी कुठिन है
औ तब तक वह शान्त नही होने का जब तक
जान मान्य वयोवृद्धगण इस प्रकार की
सुलह के लिए अपनी राय मिसाल न देने
जिसस मेरे नाम लगा धब्बा मिट जाए।
पर तब तक मैं प्रेम तुम्हारा प्रेम भेंट सा
अपनाता हूँ और न उसका अवमानूगा।

हैमलेट मुक्त हृदय स मैं विश्वास तुम्हारा करता।
औ जो बाजी लगी हुई उसम भाई का
तरह खुले दिल स लडूगा—तलवारें दो
हम को हाँ।

सायरटीज चलो एक मुझको भी दो।

हैमलेट लायरटीज अनाड़ी मैं तुम तुलना म।

मेरे कचपन के आगे चातुर्य तुम्हारा
अमा-निशा मे, निश्चय, तारे-सा चमकेगा।

लायरटीज़ : मुझे वनाते क्यो है, श्रीमन् ?

हैमलेट . सच कहता हूँ।

राजा : तलवारे दो मुझे, ओसरिक—प्यारे हैमलेट,
शर्तों का तो तुम्हे पता है ?

हैमलेट . विल्कुल, श्रीमन् !
जिसका निर्वल पक्ष उसे कुछ रियायते भी
महामहिम ने दिलवा दी है, धन्यवाद है।

राजा : मुझे नही डर, मैं दोनो को देख चुका हूँ।
क्योकि फ्रास मे उसने अधिक प्रशिक्षण पाया,
तुम्हे रियायत मैने थोडी-सी दिलवा दी।

लायरटीज़ यह ज्यादा भारी, मुझको दूसरी दिखाओ।

हैमलेट मुझको यह अच्छी लगती है—सभी एक-सी।
(वे खेलने के लिए तैयार होते है।)

ओसरिक : मालिक, आप ठीक कहते है।

राजा : मदिरा के प्यालो को मेरे लिए मेज़ के
ऊपर रख दो—यदि हैमलेट ने सबसे पहली,
या कि दूसरी चोट लगाई प्रतिद्वद्वी पर,
या कि तीसरे मुकाबले मे पहले की सब
चोटे काटी, तो फसील की तोपे सारी
दागी जाएँ; अब हैमलेट का सधा रहे दम,
इस कारण मैं उसका जामे-सेहत पीऊँगा,
औ' प्याले मे एक बडा मोती डालूँगा,
डेनमार्क के पिछले चार महाराजाओ
के मुकुटो मे इसमे ज्यादा कीमतवाला
मोती शोभित नही हुआ है।—प्याले लाओ।
ढोल ठनक दे तो उसपर नरसिंघे बोले,
नरसिंघे बोलें तो उनपर तोपें छूटे,

लायरटीज वह मौजूद यहीं है, हैमलेट। तू अपने को
मरा समझ ले दुनिया की कोई भी औषध
तुझे नहीं अच्छा कर सकती आधे घंटे
से ज्यादा तू नहीं चलेगा छलकारी है
जो तलवार हाथ में तेरे—कुंद नहीं है
और जहर में बुझी हुई है, मेरा छोड़ा
तीर उलटकर मुझे लगा है देख यहीं मैं
पड़ा हुआ हूँ और कभी अब नहीं उठूँगा
तेरी माँ सो गई जहर पी—मैं न कभी अब
उठ पाऊँगा।—अपराधी है यह यह राजा।

हैमलेट और नोक भी जहर बुझी थी!—
तो फिर काम जहर, कर अपना।
(राजा को तलवार मारता है।)

सब गद्दारी है! गद्दारी है!!

हैमलेट ले ओ हत्यारे ओ लम्पट, शापित पापी
जहर मिली इस मदिरा को पी संग निभा तू
जहाँ गई माँ, तू भी जा तू। (राजा मर जाता है।)

लायरटीज दंड ठीक ही
इसे मिला है। उन प्यालों में जहर इसी ने
मिलवाया था।—हैमलेट, आओ, एक दूसरे
को हम दोनों क्षमादान दें। मेरी, मेरे
पूज्य पिता की मृत्यु के लिए तुम अपराधी
नहीं तुम्हारी मृत्यु के लिए और, नहीं मैं। (मर जाता है।)

हैमलेट ईश्वर तुमको क्षमा करे! मैं पीछे आता।—
होरेशियो मैं मरा!—विदा कम्पित रानी!—
ओ जो पीले पड़े हुए तुम काँप रहे हो—
गूँगे दर्शक रामप्रहर्षक इस घटना के—
अगर समय होता—(लेकिन यह काल देवता
है कठोर वह पकड़ किसी को नहीं छोड़ता)—

तो, हा, मै तुमको बतलाता,—पर जाने दो,—
होरेशियो, मै मरा, मगर तू जिन्दा रहता;
जिन लोगो को पूरी बाते ज्ञात नही है,
उन्हे बताना ठीक-ठीक मेरे बारे मे,
और न्याय के बारे मे भी, जो मै जग से
माँग रहा था।

होरेशियो : समझ न पीछे रह जाऊँगा।
मै भी तेरे साथ जहाँ तू जाता, आता।
थोडी मदिरा अभी बची है।

हैमलेट : यह मर्दो की
बात नही है। इस प्याले को मुझको दे दे।
छोड हाथ से, कसम, इसे मै खुद पीऊँगा।
ओ होरेशियो, घायल मेरा नाम पडा है।
मेरे पीछे कितनी बाते अनजानी ही
रह जाएँगी। तूने मुझको प्यार किया है
अगर कभी तो, स्वर्ग-मोह को त्याग अभी तो,
और दर्द की साँसे ले तू इस दुनिया में
जो निर्मम है, और कहानी कह तू मेरी।—
(दूर पर सिपाहियों के मार्च करने की आवाजें और भीतर तोपों का छूटना)
ये कैसी आवाजे जैसे युद्ध हो रहा?

ओसरिक : फोर्टिनब्रास, अभी जो लौटा पोल देश से
विजय प्राप्त कर, आंग्लदेश के राजदूत को
तोप-सलामी दिला रहा है।

हैमलेट : ओ, होरेशियो,
मै मरता हूँ, जोर जहर का मुझपर हावी
होता जाता। आंग्लदेश से आई खबरे
सुनने को मै नही रहूँगा। पर मैं घोषित
किए जा रहा, फोर्टिनब्रास राज पाएगा,

मेरे अंतिम शब्द पक्ष में हैं उसके हो
डेनमार्क के सिंहासन पर उस निर्वाचन
करानेवाली घटनाओं से उसे यथोचित
अवगत करना—शेष मौन के गुप्त गर्भ में ! (मर जाता है।)

होरेशियो — एक महान पुरुष इस दुनिया से जाता है।—
प्यारे राजकुमार, उदार विदा देता हूँ।
स्वर्गदूत लोरी गाएँ तू सुख से सोए !—
रणभेरी के शब्द पास क्यों आते जाते ?—
(भीतर सिपाहियों के मार्च करने की आवाज—ढोल, झंडों परिचारकों के साथ फोर्टिनब्रास और अंग्रेज राजदूतों का प्रवेश)

फोर्टिनब्रास — आगे मैं क्या देख रहा हूँ ?

होरेशियो — आप देखना
क्या चाहेंगे ? हृदय विदारक विस्मयकारक ?
इससे अधिक नहीं पाएँगे, कहीं न खोजें।

फोर्टिनब्रास — त्राहि त्राहि लाशों पर लोथ पुकार रही है।—
मृत्यु दंभिनी, तेरी अंध अनंत गुहा में
आज भोज कैसा था, तूने एक बाण से
इतने राजकुमारों का वध कर डाला है ?

पहला राजदूत — दृश्य भयंकर ! और हमारे आंग्लदेश से
समाचार आने में अधिक विलंब हुआ है।
कान सुनें जो बात हमारी, बंद पड़े हैं।
हमको इनसे कहना था आज्ञा का पालन
किया गया है। रोज़ेन गिल्डन कत्ल हो चुके।
धन्यवाद अब कौन हमें दे !

होरेशियो — उसके मुख से
आप न सुनते, यदि वह जीवित होता भी तो
मृत्युदंड उनको देने की उसने आज्ञा
कभी न दी थी। चूँकि आप इस खून-खराबे

के मौके पर आ पहुँचे है—पोल देश से
विजयी होकर आप, आप भी आग्लदेश से,
आज्ञा दे ये सारी लाशे उच्च मच पर
रख दी जाएँ, जिसमे उनको देख सके सब,
औ' अनजानी दुनिया मे मुझको कहने दे
कैसे यह सब काड हुआ है, तभी सुनेगे
आप वासनाओ मे डूबी, रक्त मे सनी
अस्वाभाविक करतूतो की, गलत निर्णयो,
और अकारण हत्याओ की, छलछद्मो से
रचे मृत्यु के षड्यत्रो की, हठधर्मी की,
और अत मे भूले मे छूटे तीरो की,
जो कि छोडनेवाले के ही सिर पर टूटे ।—
ये सब बाते मैं सच-सच बतला सकता हूँ ।

फोर्टिनब्रास हम सब सुनने को आतुर है,
जल्द निमत्रित करो सभी सभ्रात जनो को;
अपना भाग्य दुखी मन से स्वीकार करूँगा,
मेरा कुछ अधिकार देश पर, लोग न जिसको
भूले होगे; वही मुझे आमत्रित करता
राजमुकुट-सिहासन का दावा करने को ।

होरेशियो : इसके बारे में भी मुझको कहना होगा,
और उसी के शब्दो मे, जिसको मानेगी
जनता सारी ।
लेकिन सबसे पहले हमको वह करना है
जिससे घबराए लोगो के हृदय शात हो,
नही, और भी दुर्घटनाएँ गलतफहमियो,
षड्यत्रो से हो सकती है ।

फोर्टिनब्रास चले चार कप्तान उठाएँ हैमलेट का शव,
सेनानी-सा ले जा रक्खे उसे मच पर,
क्योकि अगर अवसर मिलता तो वह अपने को

एक वीर सेनानी निश्चय साबित करता।
सो उसके देहावसान पर सैनिक बाजे
बजें युद्ध की सब रस्म हों, पूर्ण रीति से।
बाकी लाशें भी हटवा दी जाएँ — ऐसा
दृश्य रणस्थल में ही फबता यहाँ बेमौका
सा लगता है।
कहो सैनिकों से अपनी बंदूक दागें!

(मातमी धुन बज उठती है। शवों को उठाकर
लोग ले जाते हैं। इसके बाद तोपें छूटती हैं।)

मुद्रक ... प्रतिष्ठान द्वारा युकरना प्रेस दिल्ली ३२ 1159

बच्चन की अन्य रचनाए

१. उभरते प्रतिमानो के रूप, १९६९
२ कटती प्रतिमाओ की आवाज, १९६८
३. बहुत दिन बीते, १९६७
४. नागर गीता (अनुवाद), १९६६
५. मरकत द्वीप का स्वर (ईट्स की कविताओ का अनुवाद), १९६५
६. दो चट्टाने, १९६५
७. चौसठ रूसी कविताएँ (अनुवाद), १९६४
८. चार खेमे चौसठ खूंटे, १९६२
९ नए-पुराने झरोखे (निवध-सग्रह), १९६२
१० त्रिभगिमा, १९६१
११. कवियो मे सौम्य सत (पत काव्य-समीक्षा), १९६०
१२ ओथेलो (अनुवाद), १९५९
१३ बुद्ध और नाचघर, १९५८
१४. जन गीता (अनुवाद), १९५८
१५. आरती और अगारे, १९५८
१६. मैकबेथ (अनुवाद), १९५७
१७ धार के इधर-उधर, १९५७
१८. प्रणय पत्रिका, १९५५
१९. मिलन यामिनी, १९५०
२०. खादी के फूल, १९४८
२१ सूत की माला, १९४८
२२ वगाल का काल, १९४६
२३. हलाहल, १९४६
२४. सतरगिनी, १९४५
२५. आकुल अतर, १९४३

२६ एकांत संगीत, १९३९

* २७ निशा निमंत्रण १९३८

* २८ मधुकलश, १९३७

* २९ मधुबाला १९३६

* ३० मधुशाला १९३५

३१ खयाम की मधुशाला (अनुवाद) १९०५

** ३२ उमर खयाम की रुबाइयाँ (अनुवाद) १९५९

३३ तेरा हार (प्रारम्भिक रचनाएं' मे सम्मिलित), १९३२

३४ प्रारम्भिक रचनाए पहला भाग (कविताए) १९४३

३५ प्रारम्भिक रचनाएँ दूसरा भाग (कविताए) १९४३

३६ प्रारम्भिक रचनाए तीसरा भाग (कहानियाँ), १९४६

३७ बच्चन के साथ क्षणभर (सचयन), १९३४

३८ सोपान (सकलन) १९५३

३९ अभिनव सोपान (सकलन) १९६४

४० आज के लोकप्रिय हिंदी कवि बच्चन (सकलन—
चंद्रगुप्त विद्यालकार द्वारा सपादित) १९६०

४१ आधुनिक कवि (७) बच्चन (सकलन) १९६१

** ४२ बच्चन के लोकप्रिय गीत (सकलन) १९६७

४३ आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि सुमित्रानंदन पत (सकलन—
बच्चन द्वारा सपादित), १९६०

४४ नेहरू राजनीतिक जीवन चरित (अनुवाद), १९६१

४५ डब्ल्यू० बी० ईटस ऐण्ड ओकल्टिज्म (अंग्रेजी शोध प्रबन्ध) १९६५

४६ लिरिका (सकलित कविताओं का रूसी अनुवाद—आर०
बर्रानिकोवा द्वारा सपादित) १९६५ मास्को।

४७ 'दहाउस आफ वाइन (मधुशाला का अंग्रेजी अनुवाद), १९५०, लदन।

४८ कालर ब्वल बागला (बगाल का काल का बगला अनुवाद), १९४८
कलकत्ता।

रचनाओं के साथ प्रथम प्रकाशन-वर्ष का सकेत है।

---

* हिंद पाकेट बुक्स में भी प्राप्य।

** हिंद पाकेट बुक्स में ही प्राप्य।